रंगभाषा रूपान्तरा

संगीत नाटक अकादेमी की छमाही गृह पत्रिका

अंक 2 अक्तूबर 2012–मार्च 2013

प्रकाशक
हैलेन आचार्य

संपादक
सुशील जैन

सह-संपादक
तेजस्वरूप त्रिवेदी

संगीत नाटक अकादेमी

संगीत नाटक अकादेमी की छमाही गृह पत्रिका— रंगभाषा रूपांतरा
अंक 2, अक्तूबर 2012–मार्च 2013

प्रकाशक
हैलेन आचार्य
कार्यकारी सचिव, संगीत नाटक अकादेमी
नई दिल्ली–110001

संपादकीय कार्यालय
संगीत नाटक अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35 फिरोजशाह रोड,
नई दिल्ली–110001

टेलीफ़ोन : 23387246, 23387247, 23382495
एक्सटेंशन : 146,122
फ़ैक्स : 23382659
ई–मेल : mail@sangeetnatak.gov.in
rajbhasha@sangeetnatak.gov.in
वेबसाइट : http://www.sangeetnatak.gov.in

आवरण का मुख पृष्ठ : अरुणोदय काल का दृश्य

आवरण का अंतिम पृष्ठ : भारत की लोक एवं जनजातीय कलाओं के उत्सव *देशज* की झलकियाँ

पत्रिका में प्रस्तुत सभी लेखों, छायांकनों, और रेखाचित्रों का अन्यत्र उपयोग अकादेमी की अनुमति से ही किया जा सकेगा। रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं और अकादेमी का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली–110032

अनुक्रम

संपादकीय / 5

आलेख

संगीत नाटक अकादेमी रत्न सदस्यता एवं
अकादेमी पुरस्कार 2011 / 7 : हैलेन आचार्य

भारत की लोक एवं जनजातीय प्रदर्शनकलाओं का
उत्सव : *देशज* / 10 : सुशील जैन

प्रेमचंद का गोदान / 13 : तेजस्वरूप त्रिवेदी

अकादेमी, मैं और हमारा स्टेज / 16 : मोहन सिंह रावत

कहानी

हरदीन / 18 : शुभा सक्सेना

बेटियाँ / 23 : प्रकाश टाटा आनंद

रवीन्द्र नाथ ठाकुर के गीत

आज कैसी अशांति की ज्वाला, गान बिछा बैठा हूँ राह के किनारे / 30–31 :
मूल बांग्ला से अनुवाद : प्रयाग शुक्ल

कविताएँ

चौधरी जी कहते थे / 32 : सुमन कुमार

तुम! चिंता मत करो / 33 : पवन झा 'काश्यप कमल'

बुलबुला / 34 : शैलेन्द्र वदन

बेटी पैदा हुई / 35 : रानी केन

नीति के दोहे / 36 संजय प्रकाश भारद्वाज

बीइंग ह्यूमन / 37 : संजय कुमार बलौनी

माता-पिता को प्रणाम / 38 : सुमित कुमार

क्योंकि मैं धनवान नहीं हूँ / 39 : मुस्तफा हुसैन

अनाथ / 41 : रामविनोद मिश्र

बाल-एकांकी

शिष्टाचार अपनाओ, बिगड़े काम बनाओ / 42 : विजय सिंह

संस्मरण

अंकुर के इज्यानंद / 48 : अंकुर आचार्य

हिंदी टंकण की मेरी यात्रा / 52 : कृपाल सिंह

लघुकथा

जिम्मेदारी / 54 : शशी बुद्धिराजा

आत्मकथ्य

अभागे का भाग / 55 : हरसिंह मनराल

विविध

जैसी करनी वैसी भरनी / 59 : विनोद बाला अरोड़ा

राजभाषा स्तम्भ

अकादेमी में विकास के पथ पर राजभाषा / 61 : तेजस्वरूप त्रिवेदी

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हिन्दी कार्यशालाओं का योगदान / 63 : सुशील जैन

राजनीति और भ्रष्टाचार / 66 : रागेश कुमार पाण्डेय

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश / 68 : राजभाषा विभाग

प्रतिक्रियाएं / 71

संगीत नाटक अकादेमी के प्रकाशन / 72

अकादेमी द्वारा निर्मित फिल्म / वीडियो कार्यक्रम और ऑडियो सीडी / 74

संपादकीय

साहित्य का उद्देश्य है—सृजन और यही सृजन जब मनुष्य में उतरता है तो मनुष्य साहित्यिक हो जाता है। अपने परिवेश में घट रहे सुख-दुख से साहित्यिक मनोवृत्ति भी असम्पृक्त नहीं रह सकती परिणामत: भाव शब्दों का आश्रय ग्रहण कर रचना का सृजन करते हैं। यह साहित्यिक अभिव्यक्ति निबंध, कहानी, कविता, गीत, संस्मरण आदि के द्वारा साहित्य के इतिहास का हिस्सा बनती जाती है। *राजभाषा रूपाम्बरा* के इस अंक में ऐसी ही अभिव्यक्तियाँ हैं जो आलेख, कहानी, गीत, कविता, एकांकी, संस्मरण आत्मकथ्य आदि के रूप में शामिल हैं।

संगीत, नृत्य एवं नाटक की शीर्षस्थ राष्ट्रीय संस्था-संगीत नाटक अकादेमी, भारत की बहुरंगी संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध है। अकादेमी प्रतिवर्ष, प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में प्रतिष्ठित कलाकारों को अकादेमी रत्न सदस्यता एवं अकादेमी पुरस्कार से अलंकृत करती है। वर्ष 2012 के अक्तूबर माह में सम्पन्न अकादेमी अलंकरण समारोह का विस्तृत वर्णन हमें सचिव श्रीमती हैलेन आचार्य के आलेख *संगीत नाटक अकादेमी रत्न सदस्यता एवं अकादेमी पुरस्कार* में देखने को मिलता है। भारतीय संस्कृति में लोक कलाओं का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है, लोक कलाएँ सदैव सौन्दर्यपरक, गुणवत्तापरक, विविधतापरक होने के साथ-साथ प्रगतिपरक भी रही हैं और इसी कारण उनकी दिव्यता, अलौकिकता आज भी बरकरार है, इन्हीं लोक कलाओं के उत्सव का आयोजन अकादेमी ने नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के सहयोग से 4 मार्च 2013 से 10 मार्च 2013 तक प्रगति मैदान में किया जिसमें देश के लगभग सभी हिस्सों से आये लोक कलाकारों ने विश्व पुस्तक मेले में शिरकत कर लोक रंजन किया, इसका विस्तृत विवरण *भारत की लोक एवं जनजातीय प्रदर्शन कलाओं का उत्सव : देशज* में देखने को मिलता है।

समूचे विश्व में हमारा देश ही केवल एक ऐसा देश है, जहाँ विभिन्न संस्कृतियों, विभिन्न धर्म, विभिन्न भाषा, कला तथा और भी अन्य विविधताओं के बावजूद एक अनोखी एकता पाई जाती है। इस मिली-जुली संस्कृति, भाषा, धर्म, कलाओं में समन्वय स्थापित करने का श्रेय हिन्दी भाषा को जाता है, हिन्दी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा होने के कारण देश की एकता की प्रतीक भी है। अपनी इसी भाषा- राजभाषा में हमारे सृजनशील कार्मिकों के प्रयास का संकलन है—*राजभाषा रूपाम्बरा*

राजभाषा रूपाम्बरा के माध्यम से हम सुधी पाठक वर्ग से जुड़ रहे हैं और हमें उनकी बहुमूल्य प्रतिक्रियाएं भी प्राप्त हुईं। हमारा यह द्वितीय अंक आपको कैसा लगा, जानने की उत्सुकता रहेगी।

—सुशील जैन
संपादक एवं
सहायक निदेशक (रा.भा.)

आलेख

संगीत नाटक अकादेमी रत्न सदस्यता एवं अकादेमी पुरस्कार 2011

हैलेन आचार्य

संगीत नाटक अकादेमी, प्रदर्शन कलाओं की शीर्षस्थ राष्ट्रीय संस्था है, इसकी स्थापना भारत सरकार ने 1952 में देश में पारम्परिक प्रदर्शन कलाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सर्वोच्च संस्था के तौर पर की थी। प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में कलाकारों को कला के नए प्रतिमान स्थापित करने एवं उन्हें राष्ट्रीय मान्यता प्रदान करने के साथ-साथ स्वतन्त्र भारत में कला एवं कलाकारों को उनका यथोचित स्थान दिलाना अकादेमी के उद्देश्यों में से एक है। अकादेमी अपने स्थापना काल (1953) से ही संगीत, नृत्य, नाटक और लोक/पारम्परिक/जनजातीय प्रदर्शन कलाओं के कलाकारों को प्रत्येक वर्ष अकादेमी रत्न सदस्यता और अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित करती है। अकादेमी रत्न सदस्यता और अकादेमी पुरस्कार, प्रदर्शन कला के क्षेत्र में कलाकारों, गुरुओं और विद्वानों को दिए जाने वाले ऐसे राष्ट्रीय सम्मान हैं, जिनकी कामना कलाकारों को सदैव रही है। ये सम्मान संगीत नाटक अकादेमी की महापरिषद द्वारा तय किए जाते हैं जिसमें सुप्रसिद्ध कलाकार, विद्वान एवं भारत सरकार तथा विभिन्न राज्यों एवं संघ शासित प्रदेशों के प्रतिनिधि भी इसके सदस्य होते हैं।

संगीत, नृत्य एवं नाटक के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए कलाकारों को पुरस्कार तथा सम्मान प्रदान कर उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए मंच व अवसर उपलब्ध कराना संगीत नाटक अकादेमी के उद्देश्यों में एक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए अकादेमी ने वर्ष 1954 से वार्षिक पुरस्कार एवं रत्न सदस्यता की शुरुआत की। ये सम्मान प्रदर्शनकारी कलाओं के क्षेत्र में दीर्घ समय तक उल्लेखनीय योगदान देने वाले कलाकारों को प्रदान किये जाते हैं। पचास वर्ष से कम उम्र के कलाकारों के नाम सामान्यत: रत्न सदस्यता के लिए विचारणीय नहीं होते हैं, जबकि अकादेमी पुरस्कार के लिए पैंतीस वर्ष की आयु होना जरूरी है। अगर किसी कलाकार ने एक बार पुरस्कार प्राप्त किया है तो दूसरी बार पुरस्कार के लिए उसके नाम पर विचार नहीं किया जायेगा, दस वर्षों की समयावधि के पश्चात ऐसे कलाकार का नाम रत्नसदस्यता के लिए विचारणीय हो सकता है।

समय बीतने के साथ-साथ अकादेमी द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कारों की श्रेणियों में वृद्धि हुई है। वर्तमान में संगीत की विविध शैलियों में हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक, गायन एवं वादन दोनों, 'सृजनात्मक संगीत', लोक तथा संगीत की अन्य शैलियां; नृत्य के अन्तर्गत कथक, भरतनाट्यम, ओडिसी, कूचिपूडि, मणिपुरी, कथकलि, मोहिनीआट्टम, छऊ, सत्रिय, सृजनात्मक नृत्य, लोक एवं जनजातीय नृत्य एवं नाटक के अन्तर्गत अभिनय, निर्देशन, नाट्यलेखन, पुतुलकला, प्रकाश व्यवस्था एवं रूप सज्जा के लिए पुरस्कार दिये जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष अकादेमी अपने रत्न सदस्यों, महापरिषद् के सदस्यों, राज्य अकादेमियों के अध्यक्षों से, विश्वविद्यालयों में प्रदर्शनकारी कला संकाय के विभाग के अध्यक्षों तथा संकायाध्यक्षों, राज्य तथा संघ शासित प्रदेशों में संस्कृति विभाग के प्रमुखों तथा सम्बन्धित कला क्षेत्रों के प्रतिष्ठित विद्वानों तथा विशेषज्ञों से नामांकन आमंत्रित करती है। अकादेमी के कार्यकारी बोर्ड द्वारा प्राप्त नामांकनों की संवीक्षा की जाती है, जिसकी संस्तुतियों पर महापरिषद् विचार कर सकती है तथा दूसरे अन्य नामों पर भी विचार कर सकती है। उपस्थित सदस्यों में 3/4 सदस्यों के बहुमत तथा मत से ही महापरिषद् कोई निर्णय लेती है। कार्यकारी बोर्ड द्वारा संस्तुत वे सदस्य जिनके नामों को महापरिषद् पुरस्कार हेतु चयन नहीं करती

है, पुन: आगामी वर्ष में उनके नामों पर विचार किया जा सकता है।

रत्न सदस्यों के चुनाव में अकादेमी की अपनी प्रक्रिया है जिसके तहत एक समय में 40 से ज्यादा रत्नसदस्य नहीं हो सकते हैं। इस प्रकार 75% ऐसे व्यक्तियों को रत्न सदस्यता से सम्मानित किया जाता है जिन्होंने संगीत, नृत्य एवं नाट्य के क्षेत्र में प्रदर्शन कलाकार, विद्वान प्राध्यापक, कम्पोजर एवं नाट्य लेखक के रूप में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

अकादेमी की रत्न सदस्यता एक दुर्लभ सम्मान है, जो एक अवधि में गिनी-चुनी कला विभूतियों तक ही सीमित होती है। इस वर्ष प्रदर्शन कलाओं में प्रख्यात 11 विद्वानों, कलाकारों, कला विभूतियों को अकादेमी रत्न सदस्यता से विभूषित किया गया, उनके नाम हैं : मुकुन्द लाठ, हरिप्रसाद चौरासिया, शिवकुमार शर्मा, अमजद अली खान, उमयालपुरम काशिविश्वनाथ शिवरामन, मोहन चन्द्रशेखरन्, राजकुमार सिंहजीत सिंह, कलामण्डलम गोपि, पद्मा सुब्रह्मण्यम, चंद्रशेखर बसवण्णेप्पा कंबार, हैस्नाम कानहाईलाल। रत्न सदस्यता के तहत तीन लाख रूपए, अंगवस्त्रम और एक ताम्रपत्र भेंट किया गया। इस समय अकादेमी में 40 रत्न सदस्य हैं।

भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने अपने करकमलों से 9 अक्तूबर 2012 को राष्ट्रपति भवन के दरबार हाल में एक विशेष समारोह में अकादेमी रत्न सदस्यों और अकादेमी सम्मान प्राप्त कला विभूतियों को अकादेमी रत्न सदस्यता और वर्ष 2011 के अकादेमी पुरस्कार से नवाज़ा। इस वर्ष 11 मूर्धन्य विभूतियों को अकादेमी रत्न सदस्यता से अलंकृत किया गया और दो विद्वान कलाकारों सहित 36 कलाकारों को अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस विशिष्ट समारोह में तत्कालीन माननीया संस्कृति मंत्री कुमारी सैलजा भी उपस्थित थीं।

अकादेमी की महापरिषद ने संगीत के क्षेत्र में 9 प्रख्यात कलाकारों को अकादेमी पुरस्कार के लिए चुना था, इनके नाम इस प्रकार हैं—श्रुति सुडोलीकर काटकर, मराटे वेन्कटेशकुमार, तोता राम शर्मा, पुष्पराज रामलाल कोष्टी, जे. वेङ्कटरामन्, एलपुल्ली महादेवअय्यर सुब्रमणियम, अय्यगारि श्यामसुन्दरम्, शेषमपटी टी. सिवलिंगम, गोपाल चन्द्र पन्ढा।

नृत्य के क्षेत्र में नर्तकी नटराज, मंजुश्री चटर्जी, थोनाक्कल पीताम्बरन, प्रीति पटेल, अलेख्या पुंजाला, रामली इब्राहिम, वी.के. हैमावति, तनूश्री शंकर, करइकुडी आर. कृष्णमूर्ति सहित नृत्य के नौ प्रख्यात कलाकारों को पुरस्कृत किया गया।

अलखनन्दन, कीर्ति जैन, अमिताभ श्रीवास्तव, विक्रम चन्द्रकांत गोखले, नीना टिवाणा, ए.आर. श्रीनिवासन्, आर. नागेस्वर राव, कमल जैन सहित आठ विख्यात कलाकारों को नाटक के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा के लिए पुरस्कृत किया गया।

पारम्परिक/लोक/जनजातीय नृत्य/संगीत/नाटक एवं पुतुलकला के जिन आठ कलाकारों को अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया, उनके नाम इस प्रकार हैं : तृप्पेकुलम अच्युत मारार, हेमंत राजाभाई चौहाण, गुरमीत बावा, काशी राम साहू, मिफम ओतसल, बेलगल्लु वीरण्णा, गोपाल चन्द्र दास, कासिम खान नियाज़ी।

प्रदर्शन कलाओं में समग्र योगदान/विद्वत्ता के लिए इन दो प्रतिभाओं का चुना गया—सुन्दरी कृष्णलाल श्रीधरानी और श्रीवत्स गोस्वामी।

भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने इस अवसर पर अकादेमी कलाकारों को अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया। अकादेमी पुरस्कार में एक अंगवस्त्रम, एक ताम्रपत्र के अतिरिक्त एक लाख रूपए की राशि भेंट की जाती है। केरल के पारम्परिक संगीत कलाकार जिनकी आयु 91 वर्ष है, राष्ट्रपति जी से सम्मान प्राप्त करने राष्ट्रपति भवन आए थे, राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने मंच से नीचे उतर कर जब उन्हें सम्मानित किया तो पूरा दरबार हॉल तालियों से गूंज उठा क्योंकि 9 अक्तूबर को वह केवल राष्ट्रपति के करकमलों से सम्मानित नहीं हुए थे अपितु गौरवान्वित भी हुए थे। श्री अलखनन्दन और श्रीमती सुन्दरी कृष्णलाल श्रीधरानी के असामयिक निधन के कारण उन्हें मरणोपरान्त पुरस्कार प्रदान किए गए। रंगमंच की जानी-मानी शख्सियत सुंदरी कृष्ण लाल श्रीधरानी और रंगमंच के प्रख्यात रंगकर्मी अलखनंदन के परिजनों ने उनकी ओर से पुरस्कार प्राप्त किया।

राष्ट्रपति भवन के दरबार हाल में यह गरिमामय आयोजन धूमधाम से सम्पन्न हुआ। अकादेमी द्वारा आयोजित प्रस्तुतियाँ अन्य संस्थानों द्वारा बंधे-बंधाए ढर्रे पर चलने वाली प्रस्तुतियों

से हटकर हैं। यह अपनी प्रस्तुतियों को विशेष अवसरों यथा अकादेमी सम्मान समारोह में प्रदर्शित करती है। अकादेमी के निर्देशन मूल्यपरक एवं सुरूचिपूर्ण होते हैं

अकादेमी समापन समारोह के बाद अकादेमी सम्मान प्राप्त कलाकारों द्वारा संगीत, नृत्य और नाटकों के मंचन की परिपाटी का निर्वहन करते हुए इस वर्ष भी एक सप्ताह तक चलने वाले इस संगीत, नृत्य, नाट्योत्सव का आयोजन 9 अक्तूबर से 16 अक्तूबर तक किया गया। गत वर्ष की तरह इस बार भी यह प्रस्तुतियाँ फिक्की, कमानी, श्रीराम सैंटर और अकादेमी के मेघदूत थिएटर में आयोजित की गईं।

कार्यक्रम की शुरुआत फिक्की सभागार में अकादेमी रत्न सदस्यता से अलंकृत उस्ताद अमजद अली खाँ के सरोद वादन, पंडित शिवकुमार शर्मा के संतूर वादन और कला विद्वान उमयालपुरम के. शिवरामन के मृदंग वादन से हुई। इस संगीत संध्या में संस्कृति मंत्री कुमारी सैलजा ने भी कार्यक्रम का आनन्द प्राप्त किया।

इस उत्सव के अगले दिन अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित मोहन चंद्रशेखरन ने कर्नाटक वायलिन, श्रुति सुडोलिकर काटकर ने हिन्दुस्तानी गायन प्रस्तुत किया, रमली इब्राहिम ने ओडिसी नृत्य पेश किया और गोपाल चंद्र पंढा ने ओडिसी संगीत की प्रस्तुति दी। इधर अकादेमी के मेघदूत थिएटर में शेषमपट्टी ने नागास्वरम पर अपनी प्रस्तुति दी और कलामंडलम गोपि ने कथकलि नृत्य प्रस्तुत किया। अकादेमी के प्रमुख अंग, संगीत, नृत्य, नाट्योत्सव के तीसरे दिन प्रात:काल मेघदूत थिएटर में रंगमंच की जानी-मानी शख्सियत हैस्नाम कान्हाई लाल के मणिपुरी नाटक मेम्वार्ज ऑफ अफ्रीका का मंचन किया गया। फिक्की सभागार में तोताराम शर्मा ने पखावज़, मराठे वेंकटेश कुमार ने गायन और पुष्पराज कोष्टी ने सुरबहार की प्रस्तुति देकर कार्यक्रम को सार्थक बनाया।

12 अक्तूबर 2012 की शाम अय्यगारि श्याम सुंदरम ने वीणा, वी.के. हैमावति ने मोहिनीआट्टम, मंजुश्री चटर्जी ने कथक नृत्य और थोनाक्कल पीताम्बरन ने कथकलि नृत्य प्रस्तुत किया।

13 अक्तूबर प्रात: 11.30 बजे मेघदूत थिएटर में गोपाल चंद्र दास ने त्रिपुरा का पुतुल नाच प्रस्तुत किया और शाम को फिक्की सभागार में जे वेंकटरामन ने कर्नाटक गायन और ई एम सुब्रह्मण्यम ने घटम प्रस्तुत किया। नर्तकी नटराज ने भरतनाट्यम की प्रस्तुति दी। सायंकाल मेघदूत थिएटर में 'मुक्ति' पंजाबी नाटक का मंचन किया गया, जिसकी अभिनेत्री नीता टिवाणा थी।

कार्यक्रम के छठे दिन अपराह्न तीन बजे मेघदूत थिएटर में बेलगल्लु वीरण्णा ने कर्नाटक के पारम्परिक छाया पुतुल तोगालू गोम्बेयाट्टा का मंचन किया गया और हेमंत राजा भाई चौहाण ने गुजरात का लोक संगीत प्रस्तुत किया। सांयकाल जाने-माने निर्देशक अलखनंदन के हिन्दी नाटक चंदा बेडनी का मंचन भोपाल की संस्था नटबुंदेले ने किया।

15 अक्तूबर सायं 5.00 बजे मिफम ओतसल के लद्दाखी नाटक का मंचन मेघदूत थिएटर में हुआ। श्रीराम सेन्टर में कीर्ति जैन के निर्देशन में हिन्दी नाटक सुवर्णलता का प्रदर्शन हुआ। इसके साथ श्रीराम सेन्टर में आर नागेस्वर राव (बाबजी) के तेलगु नाटक माया बाजार की प्रस्तुति भी की गई। 15 अक्तूबर को फिक्की सभागार में प्रीति पटेल ने मणिपुर नृत्य, अलेख्या पुंजाला ने कूचिपूडि नृत्य और पद्मा सुब्रह्मण्यम ने भरतनाट्यम की प्रस्तुति दी, जिसमें करइकुडी कृष्णमूर्ति ने मृदंगम पर संगत दी।

कार्यक्रम के अन्तिम दिन फिक्की सभागार में आर के सिंहजीत सिंह की नृत्य संरचना 'नायिका माला' और तनूश्री शंकर की नृत्य संरचना 'द चाइल्ड' की प्रस्तुति के साथ-साथ मेघदूत थिएटर में अमिताभ श्रीवास्तव द्वारा अभिनीत हिन्दी नाटक 'वापसी के बाद अयोध्या बाबू' भी प्रदर्शित किए गए। इसके साथ ही 16 अक्तूबर को चंद्रशेखर कंबार के कन्नड़ नाटक 'करिमाई' का मंचन भी किया गया।

लगभग आठ दिवसीय इस समारोह में राजधानी के विभिन्न सभागारों में प्रदर्शित अकादेमी कार्यक्रम बहुचर्चित रहे एवं कला प्रेमियों ने इन कार्यक्रमों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

भारत की लोक एवं जनजातीय प्रदर्शन कलाओं का उत्सव : *देशज*

सुशील जैन

सम्पूर्ण विश्व में भारत सदैव अपनी सरल, सजीव, समृद्ध और बहुरंगी लोक एवं जनजातीय कलाओं में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। ग्रामीण, अर्धविकसित और देहाती क्षेत्रों में फैला भारत अपनी लोकप्रिय कलाओं की सोंधी खुशबू विश्व भर में बिखेर रहा है। यह अपनी समृद्ध विरासत के कारण देश-विदेश में बहुचर्चित है।

भारत की सीधी सादी ग्रामीण एवं देहाती जनता अपने विशिष्ट आंचल में आई छोटी बड़ी खुशियों का स्वागत अपनी भाषा शैली और कलाओं के माध्यम से करने में सक्षम रही है। कालान्तर में इन्हीं प्रान्तीय जनजातीय पारम्परिक लोक कलाओं ने भारतीय संस्कृति में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया। गाँव के भोले-भाले लोग, लोक जीवन के परम्परागत अवसरों यथा पुत्र जन्म हो या शादी, फसल बोनी हो या काटनी हो, ऋतुओं का आना हो या जाना हो, त्यौहार, मेला, अनुष्ठान, मिलन-विरह जैसी घटनाएँ हो या पौराणिक कथा-गायन, प्रत्येक अवसर पर एकजुट हो कर सामूहिक रूप से नाच-गा कर अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते थे, इन सामूहिक नृत्य-गान-नाटक में भारत की लोक कलाओं में अनेकता में एकता और बहुरंगी विविधता स्पष्ट रूप से झलकती है। यही कारण है कि भारत की लोक एवं जनजातीय कला, रंगों से परिपूर्ण सौन्दर्यपरक, गुणवत्तापरक, विविधतापरक होने के कारण अति विशिष्ट है।

आजादी के बाद भारतीय साहित्य में व्याप्त ये लोककलाएँ शनै: शनै: विकसित हुई। शहरी भारत की प्रदर्शन कलाएँ भी इसी तरह विशेष कर बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में राष्ट्रीय फलक पर उजागर होती गई। राजनीतिक स्वाधीनता एवं प्रजातांत्रिक शासन की स्थापना ने नि:संदेह हमारा ध्यान इन लोक कलाओं की तरफ आकर्षित कराया, जिससे भारत की सामासिक संस्कृति में लोक कलाओं को भी उपयुक्त स्थान प्राप्त हुआ।

भारत के शहरों में इन कलाओं के प्रति भिन्न दृष्टिकोण होने के कारण इन्हें मान्यता देने की आवश्यकता है। जैसा कि स्पष्ट है हम लोक साहित्य को साहित्यिक मंच व प्रदर्शन कलाओं में देखना चाहते हैं। मंच कलाओं एवं परिचर्चाओं के माध्यम से भारत के लोक संगीत, नृत्य एवं नाटक *देशज* के माध्यम में और अच्छे ढंग से स्थापित हुए। सप्ताह भर चले इन कार्यक्रमों ने जनसाधारण में कला की समझ विकसित की। यह कार्यक्रम कष्टकर जीवन जी रहे विभिन्न समुदाय के लोगों के जीवन अनुभवों के विषय में बताते हैं जिन्हें आज के दौर में हमारी तरह ही परिवर्तित करने की आवश्यकता है।

वैश्वीकरण के इस दौर में भारत की लोक कलाओं में आज भी एक सन्तोष की भावना है जो उनकी उत्साहपूर्वक अभिव्यक्ति की ताकत है और नकारात्मक उर्जा को अपने में समाहित कर लेती है। बहुत से तूफानों को झेलने की क्षमता वाले ओर आने वाली विषमताओं से जूझने को तैयार सुदृढ़ व्यक्तित्व के लोगों की रचना है—ये लोक कलाएं। संस्कृतियों और सरहद के परे भी परस्पर बाँटने के लिए इनके पास बहुत सी खुशियाँ हैं। भारत की लोक कलाएं लोक रंजक होने के साथ-साथ विविध एवं व्यापक हैं। लोक कलाओं में एक अलौकिक आकर्षण होता है, एक विशेष प्रकार का सम्मोहन होता है, सौन्दर्य, रोचकता, विविधता, व्यापकता होने के कारण ही लोक कलाएँ अत्यधिक लोकप्रिय हैं। अपनी क्षेत्रीय, आंचलिक सरल, सहज, मधुर, आकर्षक शैली एवं विशेषताओं को अपने में समेटे यह लोक कलाएँ सदैव से मनोरंजन करती रही हैं। संगीत नाटक अकादेमी लोक कलाओं के संवर्द्धन और संरक्षण के लिए सदैव से प्रयासरत रही है और इसी

परिप्रेक्ष्य में अकादेमी ने भारत की लोक एवं जनजातीय कलाओं के संगीत, नृत्य नाटक के लोक उत्सव *देशज* का आयोजन नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के सहयोग से प्रगति मैदान के लाल चौक थिएटर में 4 फरवरी 2013 से 10 फरवरी 2013 तक किया। 4 फरवरी 2013 को सायं 4.30 बजे संगीत नाटक अकादेमी की अध्यक्ष श्रीमती लीला सैमसन, नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन और पद्मभूषण एवं अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित लोक कलाकार श्रीमती तीजन बाई ने दीप प्रज्वलित कर भारत की लोक एवं जनजातीय प्रदर्शन कलाओं के उत्सव *देशज* का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में देश के कोने-कोने से आए कलाकारों ने प्रगति मैदान के लाल चौक थिएटर को अपनी कलाओं की गंध से सुरभित किया। देशज में प्रस्तुत कार्यक्रम इस प्रकार थे—

4 फरवरी 2013 को सबसे पहले छत्तीसगढ़ के *पंडवानी* से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ, तत्पश्चात मणिपुर की सामरिक कला, थांग-टा के कुशल प्रदर्शन ने रसिक जनों को मंत्रमुग्ध कर दिया, गुजरात के पारम्परिक भजनों ने मीरा, कबीर और नरसिंह मेहता जैसे संतों की याद दिला कर श्रोताओं को आह्लादित किया तो पुन: छत्तीसगढ़ के बस्तर बैण्ड ने अपने आंचलिक सांगीतिक वाद्यों का परिचय दिया।

5 फरवरी 2013 को केरल के लोक कलाकारों ने वाद्य वृन्द नादसमन्वयन की सफल प्रस्तुति से दर्शकों का मनोरंजन किया। तत्पश्चात मणिपुर के लोकप्रिय अनुष्ठानिक नृत्य *लाई-हराओबा* का सफल मंचन हुआ। तदनन्तर झारखण्ड में फसल काटने के पश्चात वहाँ की जनजाति के पुरुष और महिलाओं द्वारा किए जाने वाले *झूमर* का प्रदर्शन हुआ और वहाँ पर प्रत्येक त्यौहार पर गाए जाने वाले गीतों ने भी समां बांध दिया। इस कार्यक्रम के बाद उत्तराखण्ड की सामरिक परम्परा के साथ जुड़े *चोलिया* नृत्य और लोक-गीतों ने वातावरण को जीवन्त बना दिया। इस कार्यक्रम के अन्तिम चरण में मणिपुर के कबुई जनजाति के कलाकारों ने *ड्रम वादन* के साथ लयबद्धता से *कबुई नागा* नृत्य की पेशकश की। भक्ति भाव से प्रस्तुत इस नृत्य से प्रेक्षकगण आनन्द विभोर हो उठे।

6 फरवरी 2013 को राजस्थान की सुप्रसिद्ध गायन शैली *मांड* द्वारा इस कार्यक्रम की शुरुआत हुई। 'केसरिया बालम आवो पधारों म्हारे देश मां' जैसे लोकप्रिय लोकगीतों से वातावरण गूंज उठा। लोकगीतों की गूंज अभी समाप्त नहीं हुई कि असम में वसन्त ऋतु के स्वागत में किये जाने वाले बिहू नृत्य के लोक कलाकारों ने कार्यक्रम को और मनमोहक बना दिया। अगली प्रस्तुति में हरियाणा के लोक कलाकारों ने ऐतिहासिक और महापुरुषों की जीवनी पर गाए जाने वाले लोकप्रिय *रागिनी* गीतों को प्रस्तुत कर विश्व पुस्तक मेले में आए अतिथियों को आकृष्ट किया।

कार्यक्रम की अन्तिम प्रस्तुति जम्मू व कश्मीर की लोक कथाओं पर आधारित लोक नाट्य *भांड पाथेर* से हुई। हिन्दी, संस्कृत, उर्दू शब्दों के समावेश से यह लोकप्रिय प्रस्तुति अत्यन्त सराहनीय थी।

7 फरवरी 2013 को कार्यक्रम की शुरुआत में केरल के देशज वाद्यों, बम्बू से बने वाद्य वृन्द की रचना कर बम्बू सिम्फनी ने वाद्य-वृन्द के ज़रिए पर्यावरण को सुरक्षित करने का महत्वपूर्ण संदेश सहज रुप से जन-जन तक पहुँचाया। तदनन्तर नागालैण्ड की एओ नागा जनजाति के लोक कलाकारों ने रंगीन पोशाकों से सुसज्जित होकर *नागालैण्ड के नृत्य उत्सव* का कुशल प्रदर्शन किया। इसके पश्चात पश्चिम बंगाल के पुरुलिया छऊ नृत्य की प्रस्तुति की गई जिसमें रंगीन मुखौटे और मुकुट आदि पहन कर ड्रम की द्रुतगति पर नृत्य प्रस्तुत कर मनोरम दृश्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अन्तिम चरण में पंजाब के लोक नाट्य *नक्काल* की प्रस्तुति हुई इसमें प्रेम कथाओं के अंश और समाज पर तीखे व्यंग्य का समावेश कर प्रेक्षकों का मनोरंजन किया गया।

8 फरवरी 2013 को ओणम के अवसर पर प्रस्तुत केरल की रंग बिरंगी मनोरंजन-परक लोक कला *पुलिकालि* में लोक कलाकार चीते एवं शिकारी की तरह चमकीले पीले, लाल एवं काले रंग से स्वयं को रंग कर नाटक की प्रस्तुति मंच पर करते हैं जिसकी मुख्य विषय-वस्तु चीते के शिकार से सम्बन्धित होती है। ओणम उत्सव के दौरान अपनी शक्ति व वीरता जैसे गुणों का नृत्य द्वारा प्रदर्शन करना इस कला का प्रमुख उद्देश्य होता है। केरल के *पुलिकालि* ने जनसामान्य को अत्यन्त आकृष्ट किया। इसके बाद लक्षद्वीप के लोक कलाकारों ने वहाँ के प्रमुख एवं लोकप्रिय नृत्य *परिचक्कालि*

एवं अट्टम का सफल मंचन किया, मद्धिम गति से तीव्र नृत्य में परिणत इस नृत्य ने प्रेक्षकों को आनन्द विभोर कर दिया। तदनन्तर उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध *रास एवं मयूर नृत्य* की प्रस्तुति में कृष्ण और गोपियों की रास लीला ने रसिकजनों को सम्मोहित सा कर दिया। कार्यक्रम का समापन असम के लोकप्रिय बोडो नृत्य, नृत्य-*बगरम-बा* से हुआ। इस नृत्य में बोडो समुदाय के जीवन का अद्वितीय चित्रण देखने को मिलता है गोल-गोल घूमकर किया जाने वाला यह नृत्य अत्यन्त मनोहारी था।

9 फरवरी 2013 को कार्यक्रम का शुभारम्भ लक्षद्वीप के *कोलकाली नृत्य* से हुआ, लोक गीतों की संगत पर मद्धिम ताल से आरम्भ यह नृत्य धीरे-धीरे चरमोत्कर्ष पर पहुँचता जाता है जिसमें प्रेक्षकगण अत्यन्त आह्लादित हो उठते हैं। तदनन्तर बिहार के प्रसिद्ध लोक नाट्य *बोहुरा गोधनी* का मंचन हुआ, अपने प्राकृतिक संसाधनों के प्रति जनसाधारण के संघर्ष और महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रस्तुति इस लोक नाट्य में की गई और इसी कारण यह लोक नाट्य अत्यन्त लोकप्रिय रहा है। इसके पश्चात ओडिशा के कलाहांडी के पारम्परिक नृत्य *घुमरा* का प्रदर्शन हुआ। इसकी विशेषता इसका नृत्य एवं संगीत है जो श्रोताओं और प्रेक्षकों को भाव विह्वल कर देता है। कार्यक्रम का समापन त्रिपुरा के आकर्षक *होजगिरी* नृत्य से हुआ। त्रिपुरा के रियांग समुदाय की महिलाओं के लयात्मक नृत्य से दर्शकगण झूम उठे।

आयोजन के अंतिम दिन कार्यक्रम की शुरुआत महाराष्ट्र के *बोहदा नृत्य* से हुई, इसे *मुखौटा नृत्य* के रूप में भी जाना जाता है। कृषि उत्सव में स्थानीय कलाकार देवताओं के चरित्र को मुखौटों से प्रस्तुत कर नृत्य करते हैं, इनका प्रयास अत्यन्त सराहनीय था। मणिपुर के वसन्तोत्सव में घन वाद्यों के साथ किया जाने वाला नृत्य *ढोल-चोलम* मणिपुर का लोकप्रिय नृत्य है। मंद ध्वनि से आरम्भ होते-होते तीव्र ध्वनि के साथ बजाए जाने वाले वाद्यों के साथ कलाकार नृत्य कर जन साधारण को आह्लादित करते हैं। इस नृत्य के पश्चात उड़ीसा के जनजातीय लोगों के अनुष्ठान परक नृत्य *बजसल* की प्रस्तुति की गई, इस नृत्य में स्त्री पुरुष उल्लास और आनन्द का अनुभव करते हुए नृत्य करते हैं और रसिक जन आत्मविभोर हो उठते हैं। देशज कार्यक्रम का समापन गुजरात के सुप्रसिद्ध लोकप्रिय *सिद्धि धमाल* जनजातीय नृत्य से हुआ। धमाल, गुजरात की एक ऐसी नृत्य शैली है जो सिद्धि समुदाय के शिकार के आनन्द को प्रतिबिम्बित करती है। इस नृत्य ने रसिक जनों को भी झूमने पर मजबूर कर दिया। देशज में प्रस्तुत सामाजिक, धार्मिक अनुष्ठानों, पर्वों, उत्सवों पर संगीत और नृत्य, नौटंकी, नाट्यों की लोक कला परम्परा को देश-विदेश से आए अतिथियों, प्रेक्षकों, रसिकजनों ने अत्यन्त सराहा और यह मनोहारी पर्व *देशज 2013* सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस प्रकार संगीत, नृत्य एवं नाटक का लोकोत्सव *देशज* विश्व पुस्तक मेला 2013 का पूरक रहा।

प्रेमचंद का गोदान

तेजस्वरूप त्रिवेदी

गोदान भारतीय किसान जीवन का महाकाव्य है। प्रेमचन्द ने इसमें किसानों की उस मूलभूत समस्या का चित्रण किया है जिसने सम्पूर्ण भारत के किसानों के जीवन को भार बना रखा था और वह समस्या है—ऋण की समस्या। गोदान में प्रेमचंद अपने संम्पूर्ण पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर समस्याओं के किसी भी प्रकार के काल्पनिक समाधानों को प्रस्तुत करने के मोह से स्वयं को पूर्णरूपेण बचा ले गये हैं।

शोषण की गर्द में भटकता गोदान का नायक होरी एक निर्धन ऋणग्रस्त, रूग्ण, रूढिवादी भोला किसान है। वह बेगारी करता है, खेतों से पैदा अन्न कर्ज अदायगी में खत्म हो जाता है, गृहस्थी के खर्च के लिए तीन-तीन महाजन सहुआइन, मंगरू और पण्डित दातादीन से कर्ज लेता है। आपादमस्तक यह भारतीय किसान मृतकवत जीवन व्यतीत करता है। विल्सफ़ोर्ड ने भारतीय सर्वेक्षण रिपोर्ट में सत्य ही कहा है कि भारत वाले इतने कष्ट सहकर भी विद्रोह क्यों नहीं करते हैं? ''मेरा उत्तर है कि भूखे पेट से विद्रोह नहीं होता है विद्रोह बढ़ी तिल्ली वाले लोग ही करते है। समाज बिरादरी अन्धविश्वासों एवं परम्पराओं के नीचे दबा हिन्दुस्तानी किसी क्रान्ति की बात सोच ही नहीं सकता। ऐसी रूढ़िग्रस्त सभ्यता में व्यक्तित्व का लोप हो जाता है।''

प्रेमचंद ने निम्न मध्यमवर्गीय परिवार में जन्म लिया था और ऐसे परिवार के सभी सुख-दुख उन्होंने झेले थे। गोदान लिखने बैठे तो अपनी निजी पीड़ा से भी बढ़कर अपने वर्ग की पीड़ा उनके सामने साकार हो गयी। होरी की पत्नी धनिया के हृदय का कितना मर्मस्पर्शी चित्र प्रेमचन्द ने उकेरा है? तीन लड़के बचपन में ही मर गये। उसका मन आज भी कहता था अगर उनकी दवादारू होती तो वे बच जाते पर वह एक धेले की दवा भी न मँगवा सकी थी। ऋण के बोझ से दबे और मरजादा के मोह में अटके होरी के जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा गऊ की थी और जब भोला किसान ने भूसा के एवज में गाय होरी को दी तो होरी के सगे भाई हीरा ने उस गाय को ज़हर देकर मार ड़ाला। दरोगा हीरा के घर तलाशी लेने के लिए चलता है तब भी होरी महाजनों से ऋण लेता है दरोगा को घूस देने के लिए कि वह उसके भाई हीरा के घर की तलाशी न ले। मरजादा का कितना मोह है जो अपने भी उसके न हुए उन्हीं का वह अब भी अपना बनकर बचा रहा है।

गोदान की रचना के बीस वर्ष पूर्व 'जमाना' अखबार में छपे अपने निबन्ध में प्रेमचंद ने कहा था कि आने वाला जमाना किसानों और मजदूरों का है। दुनिया इसका साफ़ सबूत दे रही है किन्तु महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलनों की हवा में प्रेमचन्द भी बह गये और लगभग पन्द्रह वर्षों तक अपने लिखे को भूले रहे। 'गोदान' में आकर उनकी चेतना ने उन्हें झकझोरा, शायद तभी 1935 में लखनऊ में आयोजित प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम भारतीय अधिवेशन की सदारत उन्होंने की। अधिवेशन के संयोजक सज्जाद ज़हीर और उनके साथियों से उन्होंने कहा ''भाई हम बुढ्ढे हो गये हैं, लेकिन दिल उन सब बातों को करना चाहता है जो तुम लोग कहते हो इसीलिए हम अपनी नाव तुम्हारे समन्दर में डालते हैं अब वह जिधर भी जाए, फ़िक्र नहीं।'' तभी तो धनिया के मुख से वह कहते हैं—ये हत्यारे गाँव के मुखिया हैं, गरीबों का खून चूसने वाले। सूद ब्याज डेढ़ सवाई, नज़र-नजराना, घूस-घास जैसे भी हो गरीबों को लूटो। उस पर भी सुराज चाहिए। जेल जाने से सुराज नहीं मिलेगा। सुराज मिलेगा, धरम से न्याय से। चिलम पी रहे होरी को थोड़ा सुस्ताने का समय मिला तो ऋण की चिन्ता काली दीवार की भाँति उसे

घेर लेती है। सोचता है अभी उस पर कोई तीन सौ रूपये का कर्ज़ था, जिस पर कोई सौ रुपये ब्याज के बढते जाते थे। मगरूशाह से आज पाँच बरस हुए बैल के लिए साठ रुपये लिए थे उसमें साठ दे चुका है पर मूल साठ ज्यों के त्यों बने हैं। दातादीन पण्डित से तीस रुपये लेकर आलू बोये थे आलू तो चोर खोद ले गये पर उस तीस के तीन बरसों में सौ हो गये थे, दुलारी सहुआइन से चालीस रुपया उधार लेकर अपने भाइयों को दिया था बटवारे के समय, उसके भी लगभग सौ रुपये हो गये। लगान के भी अभी पचास रुपये बाकी थे। उन सबके बावजूद संन्तोष था तो यही कि यह विपत्ति अकेले उसी के सिर न थी। प्राय: सभी किसानों का यही हाल था। अधिकांश की दशा तो इससे भी बदतर थी लेकिन गोदान का होरी इसी महाजनी सभ्यता और ऋण के बोझ से दबे भारतीय किसान की करुणाभरी कहानी का प्रतिनिधि है। होरी का बेटा गोबर इस महाजनी धन्धे को समझ गया था तभी तो वह पण्डित दातादीन से कहता है ''तुम लोग किसी को सौ रुपया उधार देते हो और उससे सूद में जिन्दगी भर काम लेते रहे, मूलधन ज्यों का त्यों यह महाजनी नहीं खून चूसना है'', मगर धर्म और मरजाद के मोह में फंसा होरी गोबर से कहता है—''नीति हाथ से न छोड़नी चाहिए बेटा, अपनी अपनी करनी अपने साथ है। हमने जिस ब्याज पर रुपये लिए थे वह तो देने ही पड़ेंगे। फ़िर ये ब्राह्मण ठहरे इनका पैसा हमें पचेगा क्या, ऐसा माल तो इन्हीं लोगों को पचता है।''

गाय गयी, खलिहान ऋण की भेंट चढ़ा, गोबर भी झुनिया के साथ कमाने शहर चला गया अन्तत: किसान होरी, ठेकेदार की मजदूरी करता है। क्षीणकाय भूखे पेट की ज्वाला तो शांत नहीं हुई अपितु जेठ की दुपहरी की लू की ज्वाला से होरी गश खाकर गिर पड़ा, थोड़ी देर में चेतना लौटी तो देखा धनिया सामने खड़ी है। मृत्यु उसे समीप जान पड़ी, दोनों आँखों से आँसू बह रहे थे, यह आँसू निज की पीड़ा के नहीं थे बल्कि उन अनाथों को छोड़ जाने को जिनके साथ हम अपना कर्तव्य न निभा सके, उन अधूरे मंसूबों के जिन्हें हम न पूरा कर सके। होरी धनिया से कहता है—मेरा कहा सुना माफ करना धनिया। अब जाता हूँ। गाय की लालसा मन में ही रह गयी। अब तो यहाँ के रुपये क्रिया करम में जाएँगे। रो मत धनिया, अब कब तक जिलायेगी ? सब दुर्दशा तो हो गयी, अब मरने दे। मगर सब कुछ समझकर भी धनिया आशा की मिटती हुई छाया को पकड़े हुए थी। आँखों से आँसू गिर रहे थे। मगर यन्त्र की भाँति दौड़-दौड़कर कभी आम भूनकर पना बनाती, कभी होरी की देह में गेहूँ की भूसी की मालिस करती। क्या करें, पैसे नहीं हैं, नहीं तो किसी को भेजकर डाक्टर बुलाती। धर्म और पूजापाठ की चरम परिणित होरी के देहावसान के समय त्रासदी बन जाती है, होरी का छोटा भाई हीरा रोते हुए कहता है ? भाभी दिल कड़ा करो, गोदान करा दो, दादा चले। धनिया यन्त्र की भाँति उठी, आज जो सुतली बेची थी उसके बीस पैसे लायी और पति के ठण्डे हाथ में रखकर सामने खड़े पण्डित दातादीन से बोली—महाराज घर में गाय है, न बछिया, न पैसा, यही पैसे हैं यही इनका गोदान है। धर्म के ठेकेदारों का मन इस दुखद स्थिति से भी नहीं पसीजता वे कर्ज़ लेकर क्रिया-करम करने की प्रेरणा देते है। व्यंग्य और तीखा होता है त्रासदी करुण होकर कराह उठती है। धर्म का ढोंग उधड़ जाता है फ़िर भी धर्मान्ध समाज की आँखें नहीं खुली। गोदान करते हुए प्रेमचन्द का होरी इस व्यवस्था का बोझ लिए ही इस संसार से विदा हो गया। यह अन्त दिखाकर प्रेमचंद हमसे मूक स्वर में पूछते से प्रतीत होते हैं कि समाज की यह दशा अब और कितने दिनों तक चलती रहेगी, कितने होरी और धनिया कराह-कराहकर दम तोड़ते रहेंगे अब तो कोई भी सुधारवादी प्रयत्न या फ़िलॉसफी आर्थिक विषमता से उत्पन्न जीवन की कटुता को दूर नहीं कर सकती। यह समाज गया, कोई सुधार या उपचार इस व्यवस्था को टूटने से नहीं बचा सकता। अब तो जीवन के नये सिरे से नवनिर्माण की सोचनी पड़ेगी। तभी तो 1936 के आसपास वे गाँधीजी से स्पष्ट रूप से यह कहने की मन: स्थिति में आ गये थे—''बापू सत्याग्रह में अन्याय को दमन करने की शक्ति है, यह सिद्धान्त भ्राँतिपूर्ण हो चुका है। 'प्रेमाश्रम' का मनोहर मर चुका है, कादिर भी मर चुका है और उसकी कब्र पर 'गोदान' का होरी अपनी सूखी हड्डियाँ चचोर रहा है। बापू इस दम तोड़ते होरी का क्या होगा ? और लो होरी ने दम तोड़ ही दिया। बापू इन्सान इतना भला नहीं जितना तुम समझते हो, समाज ने उसकी कोमल वृत्तियाँ सुखा दी है। शोषक भेड़ियों की जिह्वा लोलुपता

छोड़ो वह देखो माधव और घीसू भी अपने घर में गंध भरी लाश छोड़कर शराब और पुलाव उड़ा रहे हैं। अब हालत ऐसी ही चलती रही तो सारी इन्सानियत पशुता में बदल जायेगी। नहीं बापू नहीं हमारा तुम्हारा रास्ता एक नहीं, तुम देवता हो लेकिन मैं तो इन्सान हूँ। वाकई प्रेमचन्द को अपनी इन्सानियत पर इतना अधिक विश्वास और ईश्वर पर इतना अधिक अविश्वास था कि वह जीवन में कभी आस्तिक नहीं हो पाये।

अन्त में गोदान में प्रेमचन्द सिर्फ़ यही कह सके कि तुम्हारी हालत यह है। इसे बदलो और यह तुम्हारा काम है कैसे बदलो। यहीं आकर प्रेमचन्द का कर्तव्य समाप्त हो जाता है और उनकी जीवन लीला भी। संभव है यदि उनका अन्तिम अधूरा उपन्यास 'मंगलसूत्र' पूरा हो जाता तो वे इस वर्तमान व्यवस्था को बदलने का उपाय भी बता देते। वास्तव में स्वतंत्रता के कई दशक पूर्व ही प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों विशेषकर 1936 में गोदान में जमींदार एवं जमींदारी व्यवस्था द्वारा किसानों के शोषण की कहानी कही थी। सन् 1947 में देश आजाद होने के बाद सरकार ने किसानों की दुश्मन बनी जमींदारी प्रथा को समाप्त करने के लिए 1950 में जमींदारी उन्मूलन अधिनियम बनाया, इस अधिनियम के पीछे शायद प्रेमचंद के उपन्यासों की ही प्रेरणा थी।

संदर्भ ग्रंथ

1. गोदान—डॉ. राजेश्वर गुरु
2. प्रेमचंद—सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
3. प्रेमचंद—इन्द्रनाथ मदान
4. गोदान : करुण कथा—डॉ. विजयेन्द्र स्नातक

अकादेमी, मैं और हमारा स्टेज

मोहन सिंह रावत

संगीत नाटक अकादेमी, सरकारी कागजों में यह एक सरकारी कार्यालय होगा। शायद सभी लोग इसे सरकारी भवन ही कहते होगें। लेकिन मेरे लिए यह एक विद्यालय है जहाँ पी-एच.डी. की उपाधि लेने वाले व्यक्ति को भी क ख ग से शुरुआत करनी पड़ती है। जो व्यक्ति इसे विद्यालय के समान समझते हैं, वे लोग यही करते हैं। यहाँ कर्मचारी हो या अधिकारी शुरुआत क ख से ही करता है। यह एक ऐसा विद्यालय है, जो भारत में अनोखा है। मेरा अनुभव यहाँ पिछले 22 साल का रहा है। यहाँ एक कार्यक्रम के दौरान मैंने अपनी नौकरी की शुरुआत की जब अकादेमी में भारत विश्व पुतल समारोह की एक प्रर्दशनी क्राफ़्ट म्यूजियम प्रगति मैदान में लगी थी।

यह प्रर्दशनी श्री. सुरेश दत्ता जी, जो अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित और देश के जाने माने पुतल कलाकार की देख-रेख में लगायी गयी थी। जब मैं वहाँ पहुँचा तो पहले किसी भी कार्य को समझना मुश्किल था। यह सभी कार्य मेरे जीवन मे पहली बार हो रहा था मैं बस देखता और चुप कर काम करता रहता। उस समय एक व्यक्ति कारपेंटर का काम कर रहे थे। जो उम्र में बहुत बड़े थे। वह अकादेमी में बहुत अरसे से कारपेंटर का काम कर रहे थे। उनका नाम श्री लक्ष्मण दास था और उनके दो बेटे भी काम करते थे वह लोग लकड़ी का फ्रेम बनाकर उसमें कपड़ा लगाते और दीवार पर उसे लगा देते और मिट्टी से बनी दीवार ऐसी लगी जैसे एक नया महल तैयार किया गया हो ऐसा करते-करते हमने पूरे क्राफ़्ट म्यूजियम को एक नये शहर की तरह बना दिया और फिर हर एक कमरे में हर प्रकार के कठपुतली लगा दी और विभिन्न देशों के अलग-अलग कमरों में कठपुतलियाँ प्रर्दशनी के लिए लगाकर, समाँ बाँध दिया।

जिस दिन उसका उदघाटन हुआ उस दिन श्री. सुरेश दत्ता जी ने थरमाकोल की कठपुतली बना कर गैस वाले गुब्बारों के साथ उड़ाया। वह दृश्य एक ऐसा था मानों एक बच्चा गुब्बारों के साथ हवा में उड़ रहो हो। तब यह दृश्य देख कर अहसास हुआ कि ऐसा भी हो सकता है। इतना समय बीतने के बाद अब कार्य समाप्त हो चुका था। अब समय जाने का था। उसी दौरान भारत विश्व नृत्य महोत्सव का कार्यक्रम शुरू हुआ जिसमें और विचित्र बात यह थी कि इसमें कई जगह कार्यक्रम थे। जिसमें विभिन्न प्रकार के स्टेजों की सजावट देखने को मिली, यह एक अलग प्रकार का अनुभव था। जिन्दगी में कितने रंग होते हैं और उसके क्या मायने होते हैं, यह हर चीज को बदल कर ही रख देती है। उसमें अनोखी बाद यह थी कि जो चटाई हम लोग घरों में इस्तेमाल करते है, उसी चटाई को वह स्टेज पर एक लकड़ी के फ्रेम के साथ लगा कर खड़ा कर देते वह और भी खुबसूरत दिखने लगता। इसी तरह से टाट का इस्तेमाल होते हुए देखा। अब यह कार्य करते करते मुझे 22 साल बीत गये, पहले मैंने अपने बड़ों से सीखा आज मैं खुद करने की कोशिश करता हूँ।

लेकिन मैं आज भी स्वयं को विद्यार्थी मानता हूँ । ऐसा इसलिए क्योंकि आज भी एक नई चीज सीखने को मिलती है। कुछ बीती बातें याद आती है। एक बार की बात है, अकादेमी और भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् दोनों नें मिलकर सिरिफोर्ट सभागार में कार्यक्रम करना था। जिसका स्टेज अकादेमी के सहायक सचिव (नृत्य) द्वारा लगाया जा रहा था। हमें स्टेज बनाते दो दिन हो गये थे और स्टेज भी बहुत अच्छा बना था लेकिंन आखिरी वक्त पर भारतीय सांस्कृतिक सम्बध परिषद् वालों ने आपना एक होर्डिंग बीच

में लाकर खड़ा कर दिया और हम लोग बेबस होकर तमाशा देखते रहे।

कहने का अभिप्राय यह है कि किसी भी कार्य के पीछे बहुत ज्यादा मेहनत और लगन होती है। यह बात केवल काम करने वाला व्यक्ति जानता है दूसरा कोई नही जानता, इसलिए दूसरे व्यक्ति के अच्छा या बुरा कहने से बात खत्म नही होती खैर, आज में इतना परिपक्व हो चुका हूँ कि यदि कोई मेरी बुराई कर रहा हो तो मुझे लगता है कि वह मेरे भले के लिए सोच रहा है उसकी उस बुराई से ही मुझे कुछ नया करने को ही मिलता है। मेरे कहने का मतलब साफ है कि मुझे यदि दस लोग चाहने वाले हैं तो दो लोग न चाहने वाले होने ही चाहिए जिससे कि उन दो को खुश करने की कोशिश में आपने काम को सही दिशा दे सकूँ। हाँ एक बात जरूर आप लोगों को बताना चाहूँगा कि सफलता पूर्वक काम पूरा करने, पर जो सन्तुष्टि स्वयं को मिलती है, उसका कोई मूल्य नहीं, वह अनमोल ही है। काम करने की सन्तुष्टि को कोई कर्मठ व्यक्ति ही बेहतर समझ सकता है।

काम यहीं समाप्त नही होता स्टेज जैसे कार्य के लिए सामान्य सामान से लेकर मंहगी वस्तुओं का भी इस्तेमाल करना पड़ता है। जिसके लिए बाजार में जाकर चीजों को परखना, फिर भाव करना और उसे खरीद कर लाना उसके बाद आलोचना भी इसी का एक पहलू है मुझे अनुपम खेर, शेखर शेन, नसिरूद्दीन शाह, उत्पल दत्त, सितारा देवी, भीम सेन जोशी, उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ, सोनल मानसिह, पंडित रविशंकर जैसे अन्य देश तथा विदेशी कलाकरों के साथ काम करने का अनुभव प्राप्त हुआ। स्टेज के कार्य में सभी इच्छओं को मार कर केवल आपने काम की ओर ध्यान देना पड़ता है काम के वक्त न तो समय देखा जा सकता है न ही खाने का समय मिलता है ये कोई चीजें मायने नहीं रखती क्योंकि उस वक्त हमें काम केवल स्टेज का काम करना है बस यही ध्यान में रखना होता है। बहुत सारे महोत्सव हुए जैसे अकादेमी पुरस्कार तथा बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार, लोक उत्सव 1991,1992, अकादेमी पुरस्कार समारोह, पारम्परिक नाट्योत्सव 1994-95, वाद्य दर्शन प्रर्दशनी दिल्ली, कथकलि महोत्सव, कूटियाट्टम महोत्सव, जर्मन महोत्सव (दिल्ली, कलकत्ता, बैंगलोर, पुणे, मुम्बई) स्वर्ण समारोह (दिल्ली, अहमदाबाद) संगीत समारोह (औरंगाबाद), नाट्य समारोह (मुम्बई), नाट्य समारोह (दिल्ली), सृजन संगीत, गणतंत्र महोत्सव (गुवाहाटी) एवं शिलांग, बृहदेशी महोत्सव, कोरियोग्राफी महोत्सव (गुवाहाटी, हैदराबाद) उदय शंकर महोत्सव कलकत्ता, दिल्ली, स्वर्ण समारोह, छऊ के फिल्म बनाने में स्टेज कार्य हेतु जो यूनेस्को प्रोजेक्ट का था। रवीन्द्र नाथ टैगोर पुरस्कार कलकत्ता, चैन्नेई, रवीन्द्र महोत्सव समापन समारोह दिल्ली, अकादेमी समारोह 2011 (कमानी सभागार, मेघदूत, फिक्की सभागार, श्रीराम सेन्टर में सभी सभागारों में स्टेज डिजाईन केसाथ कार्य किया) देशज 2013 प्रगति मैदान, दिल्ली, ऐसे ही न जाने कितने कार्यक्रम हुऐ उन सबका विवरण देना बहुत मुश्किल है। लेकिन काम सभी चुनौती पूर्ण परिस्तिथियों में किया है। यह एक ऐसा नशा है जिस के लिए हमेशा अपने परिवार से ज्यादा महत्त्व दिया। काम-काम होता है। छोटा या बड़ा नही होता यह तो उन लोग कि सोच है जो यही सोचते काम के महत्व को समझते ही नही है।

सोचते-सोचते श्रीमद्भगवदगीता का श्लोक खुद ब खुद याद आ गया—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

कहानी

हरदीन

शुभा सक्सेना

जेठ का महीना था, सूरज देवता अग्नि-वर्षा कर रहे थे। गर्मी ने लाल पगड़ी पहनी हुई थी, गुलमोहर, पलाश, सभी पेड़ों पर सुर्ख़, चटक लाल फूल दहक रहे थे, हवा भी कुछ गुस्से से बौराई इधर-उधर दौड़ती फिर रही थी, मानो उसने भी कसम खा रखी हो कि उसके संपर्क में आने वाली हर चीज़ को वो झुलसा कर ही रख देगी। उस झुलसा देने वाली धूप में भी हरदीन गुड़ाई कर रहा था। सिर के बाल गरम लोहे की तरह तप रहे थे। पसीने की बूंदे उसके बालों से रेंगती हुई पीठ पर फैलती जा रही थीं। उसकी चिथड़ा-हाल बनियान पसीने से पूरी तरह भीग कर उसकी पीठ से चिपक गयी थी। खुरपी चलाते-चलाते कभी-कभी सूरज की किरणों की चमक से उसकी आँखें चुंधिया जाती थीं। दो क्यारियाँ और बची थी गुड़ाई के लिए, हरदीन के हाथ और तेज़ी से चलने लगे, वो जल्द से जल्द गुड़ाई खत्म कर लेना चाहता था। आखिरी क्यारी की गुड़ाई खत्म होते ही वो धीरे से खड़ा हो गया, सिर पर बंधे झाड़न से उसने अपने चेहरे का पसीना पोंछा और आसमान की ओर मुंह करके एक लंबी सांस छोड़ी। क्षण भर को उसकी नज़रें सूरज से जा टकराईं और उसकी पलकें मुंद गईं। सब कुछ नारंगी सा लगने लगा फिर एक काला सूरज बड़ी तेज़ी से उसकी मुँदी पलकों पर घूमने लगा। अपनी आँखें मलता हुआ वो बाड़ पास वाले एक घने आम के पेड़ के नीचे बैठ गया। यह आम का पेड़ उसके सुस्ताने की सबसे प्रिय जगह थी। इसलिए नहीं कि उस पर आम लटके हुए थे, बल्कि इसलिए क्योंकि उसे आम के पेड़ों से एक खास लगाव था। उसकी छाल का स्पर्श उसके लिए कितना जाना पहचाना था। वो अक्सर अपनी उँगलियों से उसकी छाल को सहलाता रहता। पेड़ के तने से वो अपनी पीठ टिका कर बैठ गया, फिर धीरे से अपनी गर्दन घुमाकर उसने खुरपी से छाल को ज़रा सा खरोंचा, एक जानी पहचानी सी गंध उसके नथुनों से होती हुई फेफड़ों में भर गई, फिर धीरे-धीरे उसकी रगों में फैल गयी, यह गंध उसके तन मन में इस कदर बसी थी कि तुरंत आत्मसात हो गयी।

वो करीब चार या पाँच बरस का रहा होगा एक दिन उसके दादा मालूराम ठेला भर लकड़ी के एक-एक फुट लंबे गोल-गोल टुकड़े लाये थे। उसके पिताजी और चाचा जी उन्हें उठा कर खप्पर के नीचे रखने लगे। वो भी भागकर उनकी मदद करने पहुँच गया। उसने एक गोल टुकड़ा अपने दोनों हाथों से उठाया और डगमगाता हुआ खप्पर तक ले गया। वह भागकर फिर ठेले तक जा पहुंचा पर तब तक सभी टुकड़े खप्पर तक पहुँच चुके थे। बस दो बहुत बड़े से, पेड़ के तने के टुकड़े रखे हुए थे उसने उनमें से एक टुकड़े को हिलाने की कोशिश की, उसे अपनी तरफ़ खींचना चाहा पर वो टस से मस न हुआ। उसने एक बार फिर उसे हिलाने की नाकाम कोशिश की। वो रुआँसा हो गया। दादा जी ने उसे गोद में उठा लिया और हवा में उछाल दिया। वो खुशी से चीख उठा।

अगले दिन सुबह ठक-ठक की आवाज़ से उसकी नींद खुल गयी। वो भाग कर झोंपड़ी से बाहर निकाल आया। उसके दादाजी कुछ बना रहे थे जिससे ठक-ठक की आवाज़ आ रही थी। वो चुपचाप उनके पास जा कर बैठ गया और उन्हें गौर से देखने लगा। दादाजी ने अपने दोनों पैरों से लकड़ी का एक टुकड़ा पकड़ा हुआ था, जिस पर वे लोहे के एक पतले से औज़ार को लकड़ी के एक कुंदे से ठोंक रहे थे। दादाजी आप क्या बना रहे हैं ? उसने उत्सुकता से पूछा। बेटा मैं कठपुतली बना रहा हूँ, दादाजी ने जवाब दिया। वह फिर कुछ देर उन्हें देखता रहा फिर लोहे के औज़ार की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा यह क्या है दादाजी ? ये ! यह चौरसी है

और इस लकड़ी के कुंदे को हत्था कहते हैं। कुछ देर वह वहीं बैठा दादाजी को काम करता हुआ देखता रहा फिर भागकर पिताजी के पास चला गया, पिताजी एक बहुत बड़े से पेड़ के तने के टुकड़े पर लकड़ी के गोल-गोल टुकड़ों को दो हिस्सों में काट रहे थे। आप यह क्या कर रहे हैं? उसने पूछा। पिताजी ने बताया कि वे कठपुतलियाँ बनाने के लिए लकड़ी काट रहे हैं। मैं भी लकड़ी काटूँगा, उसने उनके हाथ से बसौली लेते हुए कहा। ना बेटा चोट लग जाएगी, पिताजी ने समझाया। वह रोने लगा। उसे रोते देख पिताजी ने उसे लकड़ी के टुकड़े उठा-उठा कर अड्डे पर रखने को कहा। वह लकड़ी के टुकड़े उठा-उठा कर अड्डे पर रखता पिताजी बसौली से उसे खट से एक ही झटके में काट देते। वह कुछ देर तक लकड़ी उठा-उठा कर पिताजी को देता रहा, फिर थक गया, और भाग कर दादाजी की बगल में बैठ गया और उन्हें कठपुतली बनाते हुए देखने लगा, उसके नथुनों में लकड़ी छीलने की गंध समाती चली गयी। दादाजी, यह कौन सी लकड़ी है? उसने पूछा। यह आम की लकड़ी है, दादाजी ने बताया। दादाजी आम की लकड़ी से ही कठपुतली क्यों बनाते हैं उसने पूछा। "आम की लकड़ी नरम होती है उससे कठपुतली का चेहरा बनाने में आसानी होती है" दादाजी ने बताया। कुछ देर वह चुपचाप बैठा रहा फिर पूछ बैठा, इन्हें कठपुतली क्यों कहते हैं? क्योंकि बेटा ये काठ यानी लकड़ी से बनती हैं इसलिए। काफ़ी देर वो चुपचाप उनके हाथों को चलते हुए देखता रहा एक बेहद खूबसूरत चेहरा उस लकड़ी के टुकड़े पर उभरने लगा था। उसे लगा दादाजी एक जादूगर हैं और एक लकड़ी को चेहरा बना सकते हैं। ये किसका चेहरा है? उसने पूछा। ये अनारकली है बेटा, दादाजी ने जवाब दिया। वे फिर अनारकली के चेहरे को घिसने लगे। अनारकली का खुरदुरा चेहरा चिकना होता चला गया। नन्हा हरदीन आश्चर्यचकित रह गया। दादाजी, दादा जी आप अनारकली के चेहरे को चिकना कैसे कर रहे हैं? उसने फिर एक सवाल दागा। सारे सवाल आज ही पूछेगा, दादाजी ने हँसते हुए कहा। इसे रेती कहते हैं, ला तेरी नाक भी घिस दूँ दादाजी ने रेती उसकी नाक की तरफ बढ़ाते हुए कहा। वह अपनी नाक पकड़ खिलखिलाता हुआ झोंपड़ी के अंदर भाग गया।

उस दिन जो आम की लकड़ी की गंध हरदीन के नथुनों में समाई थी वह आज तक उसकी आत्मा में बसी हुई थी। हरदीन आम के पेड़ के नीचे से उठकर अपनी झोंपड़ी की तरफ चल दिया। उसे बहुत तेज़ भूख और प्यास लग रही थी। झोंपड़ी में पहुँच कर उसने घड़े से दो गिलास ठंडा पानी निकाल कर पिया और फिर पीठ सीधी करने के लिए दो घड़ी लेट गया और अपनी आँखें मूँद लीं।

नन्हें हरदीन को भूख लग रही थी वह भागता हुआ झोंपड़ी से बाहर निकला। उसकी माँ एक लंबा सा घूँघट काढ़े हुए सिल पर लाल मिर्चें, लहसुन पीस रही थी, पास ही में चूल्हा जल रहा था जिस पर कढ़ाई चढ़ी हुई थी, उसकी बड़ी बहन रेश्मा आटा गूँध रही थी। माँ ने कढ़ाई में देशी घी डाला फिर पिसे मसाले को उसमें डाल दिया और उसे भूनने लगी। चटनी की गंध नाक से होती हुई सीधा उसके पेट तक जा पहुंची। माँ, खाने को दे जल्दी से, उसने कहा। माँ ने कढ़ाई उतारते हुए कहा, जा, हाथ धो कर आ जल्दी से। वह भागता हुआ गया और हैंडपम्प से हाथ धो आया। माँ ने तवे से मोटी सी रोटी उतार कर चूल्हे में जल रही लकड़ियों पर रख दी और चिमटे से घुमा-घुमा कर रोटी सेंकने लगी। रोटी सिकने की सोंधी-सोंधी खुशबू उसकी नाक में घुसने लगी। उसे चटनी और रोटी की खुशबू बहुत अच्छी लगती थी। उनके घर अक्सर चटनी और रोटी बनती थी। हफ़्ते में एक बार काली दाल बनती थी जिसे माँ पतीली में पकाया करती थी। जिस दिन दादाजी और पिताजी कठपुतली का कोई कार्यक्रम कर के आते थे उस दिन उनके घर गोश्त बनता था माँ घंटों उसे हांडी में पकाती थी। गोश्त की खुशबू से पूरी झोंपड़ी महकने लगती थी। दादाजी और पिताजी एक बोतल से बदबू वाला शरबत पीते थे। उसे नहीं मिलता था वो शरबत। नुक्कड़ की दुकान से उसके और उसके सभी भाई-बहनों के लिए फ़ैन्टा आ जाती थी। उसे फ़ैन्टा बहुत पसंद थी इसीलिए घर और आस पड़ोस के सभी लोग उसे फ़ैन्टा भाट कहते थे, उसके छोटे भाई को लड्डू बहुत पसंद था इसलिए उसे लड्डू भाट पुकारते थे सभी।

हरदीन के पेट से गुड़गुड़ की आवाज़ आने लगी। उसने धीरे से अपनी आँखें खोलीं और उठ कर कटोरदान से रोटी निकाली और चटनी के साथ खाने लगा। वह तड़के ही खाना पका लेता था, इतना थकने के बाद उससे खाना नहीं पकाया जाता था। उसकी पत्नी का कुछ बरस हुए देहांत हो गया था। उसके तीन लड़के और तीन लड़कियाँ थीं। लड़कियों की शादी तो उसने उनके बचपन में ही कर दी थी। उनके यहाँ बचपन में ही शादी कर दी जाती है। उसकी शादी भी जब वह आठ बरस का था और उसकी पत्नी सात बरस की थी तब ही हो गई थी। जब वह चौदह बरस का हुआ तो अपनी पत्नी का गौना करा लाया। तीनों लड़के शहर में काम करते थे बड़ा बेटा शादियों में ढोल बजाता था और पार्टियों में जादू दिखाता था। मंझला बेटा गुरुद्वारे के सामने फूल बेचता था और शादियों में ढोल भी बजाता था। छोटा बेटा नट के करतब दिखाता था। तीनों अपनी कठपुतली का तमाशा दिखाने की परंपरा छोड़, शहर जाकर रोज़ी-रोटी कमाने में लग गए थे। तीनों के परिवार चालू कठपुतलियाँ बनाने का धंधा भी करते थे छोटी-छोटी, कठपुतलियाँ बना कर होटलों और इंपोरियम में बेचते थे। उसे कभी भी उनका यह वाला धंधा पसंद नहीं आया। उसे लगता था कि यह उनकी परंपरा के साथ नाइंसाफ़ी है। उसके लाख समझाने पर भी वो नहीं माने और पैसा कमाने शहर चले गए। वह भी उनसे इस बात पर इस कदर नाराज़ हुआ कि आज तक साथ रहने शहर नहीं गया। गांव आ कर खेती-बाड़ी करने लगा।

खेती-बाड़ी उनका पुश्तैनी काम था उसके बाप-दादा खेती बाड़ी करते थे और बरसात के मौसम में जगह-जगह घूम कर कठपुतली का तमाशा दिखाते थे। गधों पर सामान लादकर किसी गाँव, किसी नगर के किनारे डेरा डाल देते थे, फिर एक कठपुतली हाथ में लेकर घर-घर जाते थे कार्यक्रम की तलाश में। कार्यक्रम मिलने पर थोड़े पैसे पेशगी लेकर आ जाते थे। शाम को फिर कार्यक्रम दिखाने जाते थे। तंबूड़ी, झालर, ड्योढ़ी, तिबारा, और कठपुतलियों का बक्सा लेकर (तंबूड़ी-टेंट जिसे सात बाँसों पर खड़ा किया जाता था स्टेज बनाने के लिए। तंबूड़ी के ऊपर वाले हिस्से में झालर लगी होती थी जिससे कठपुतली चलाने वाले का ऊपरी धड़ नज़र नहीं आता था। ड्योढ़ी—पीछे का कपड़ा जिसके सामने कठपुतलियाँ नाचती थीं और कठपुतली चलाने वाले का कमर से नीचे का हिस्सा नज़र नहीं आता था। कठपुतलियाँ उसके सामने ही चलाई जाती थीं। कठपुतली चलानेवाला उसके पीछे खड़ा होता था। तिबारा या ताजमहल सामने का वह पर्दा जहां से असल में कठपुतलियाँ नाचती हुई दीखती हैं।) बरसात खत्म होते ही वे वापस गाँव आ जाते थे खेती बाड़ी करने। जब तक दादाजी रहे सब कुछ वैसे ही चलता रहा। उसके पिताजी को यह सब ताम-झाम लगता था वे दो चारपाई खड़ी करके सेट बना लेते थे और उसी से झालर, ड्योढ़ी और तिबारा बांध देते थे। पिताजी जी के समय में ही गाँव-गाँव, नगर-नगर घूम कर ऐसे कार्यक्रमों का मिलना कम हो गया था। वे स्कूल, सामाजिक संस्थाओं के पास जाते थे कार्यक्रम लेने के लिए।

हरदीन खाना खा कर फिर चारपाई पर लेट गया। ''केसरिया बालम आओ नि पधारो म्हारे देस, नि केसरिया बालम आओ सा पधारो म्हारे देस.... गुनगुनाने लगा। उसे मांड गाना अच्छा लगता था। उसने अपनी आँखें मूँद लीं। थका होने की वजह से उसे जल्द ही नींद आ गई। जब आँख खुली तो शाम हो चली थी। कितने चुपचाप शाम उतर आई थी। बेहद उदास और अकेली उसकी तरह ही।

वह चुपचाप उठा और खेत में पानी डाल आया। वापस झोंपड़ी में आकर वह चारपाई पर लेट गया। पिछले कुछ दिनों से उसकी तबीयत ठीक नहीं चल रही थी। पेट में हल्का सा दर्द रहता था। वह थककर लेट गया और अपनी आँखें मूँद लीं। उसके कानों में ढोलक, खड़ताल, हारमोनियम की आवाज़ें गूंजने लगीं। उसकी दादी बहुत अच्छा गातीं थी दादाजी उन्हें अपने साथ कार्यक्रम में ले जाते थे। उसके कानों में दादी का गीत गूंजने लगा जिसे वे अकसर गाया- गुनगुनाया करती थीं-

''भर जोबन में नाव डूबेगी,
भर जोबन में नाव डूबेगी तैरा दे मनिहारा।
तेरे नाम की दो चूड़ी,
तेरे नाम की दो चूड़ी मने पेरा दे मनिहारा,
पेरा दे मनिहारा।''

उसकी आँखें भर आईं। वह धीरे से उठा और अपनी चारपाई के नीचे से काले रंग एक बहुत पुराना लोहे का बक्सा निकाला। उसपर उसके दादाजी का नाम मालूराम लिखा हुआ था—सफ़ेद रंग से। उसने उसे खोल अंदर से अनारकली निकाली, जिसे उसके दादाजी ने बनाया था। चेहरे का रंग जगह जगह से उतर गया था, घाघरा-कुर्ती पुरानी और मैली हो गई थीं, जगह-जगह से घिस कर फट भी गई थी। उसे याद था दादाजी ने कठपुतली को रंगने के लिए उसे और उसके दोनों भाइयों को पीले फूल तोड़ लाने को कहा था। पीले फूल एक कंटीले पौधे पर लगते थे। फूल चुनते समय उसकी नन्ही-नन्ही उँगलियों में कांटे चुभ गए थे, खून छलछला आया था।

पुतलियाँ रंगने के बाद दादाजी ने उनका धड़ बनाया, फिर हाथ बना कर धड़ के साथ जोड़ दिये। दादी और माँ पुतलियों के लिए झग्गा और घाघरा- कुर्ती सिल कर ले आयीं। दादाजी ने एक झग्गा अनारकली के धड़ के साथ जोड़ दिया। फिर उसे घाघरा- कुर्ती पहना दी। अनारकली बहुत सुंदर और एकदम असली लगने लगी। नन्हा हरदीन मंत्रमुग्ध रह गया था। फिर दादाजी ने अमरसिंह की पुतली को भी झग्गा, घाघरा-कुर्ती पहनाई तो वह पूछ ही बैठा दादाजी आदमी-औरत दोनों घाघरा-कुर्ती पहनते है? दादाजी ने समझाया, बेटा, इन कठपुतलियों के पैर नहीं होते हैं इसलिए आदमी-औरत दोनों को घाघरा-कुर्ती पहनाई जाती है। सिर्फ खड़बड़ खान के ही पैर होते है इसलिए उसे घाघरा-कुर्ती नहीं पहनाई जाती है। दादाजी ने उसे एक कील और हथौड़ी देने को कहा, उसने खुशी से दादाजी को कील और हथौड़ी दे दी। दादाजी ने अनारकली के सिर के ठीक बीचों-बीच एक कील ठोंक दी और उससे एक काला धागा बांध दिया और उसे उसकी कमर से जोड़ दिया। बेटा, यह कील ठीक सिर के बीचों बीच होनी चाहिए नहीं तो पुतली या तो दायें झुकी रहेगी या फिर बाएँ। समझो कि यह कील पुतली की आत्मा है।

अनारकली उसकी पहली कठपुतली थी जिसे उसने अपने दादाजी से नचाना सीखा था। शुरू-शुरू में धागों से उसकी उँगलियाँ कट जातीं थीं, पर धीरे-धीरे उसकी उँगलियाँ सख्त हो गईं, उसका भार उठाने में सक्षम हो गयीं। अमरसिंह राठौर की जब सभी कठपुतलियाँ बन गईं तो वे उन्हें पड़ोस के भवानी माँ के मंदिर ले गए। बकरे की बलि दी थी उस दिन दादाजी ने। बाद में सबको चावल, रोटी और गोश्त खाने को मिला था। अगले दिन पिताजी ने उसे पगड़ी पहनाई और कार्यक्रम में ले गए। उसने दादाजी और चाचाजी को कठपुतलियाँ पकड़ाने में मदद की।

धीरे-धीरे वह दादाजी से कठपुतली बनाना और चलाना सीखता चला गया। दादी उसे मारवाड़ी लोक गीत सिखातीं। पिताजी उसे ढोलक बजाना सिखाते। जब वह कुछ बड़ा हुआ तो एक दिन उसने दादाजी से पूछा कि दादाजी जब कठपुतली पुरानी हो जाती है तो उसका क्या करते है? दादाजी ने धीरे से कहा कि बेटा उन्हें ऐसे ही नहीं फेंक देते हैं। उन्हें जंगल में किसी पीपल के पेड़ के नीचे छोड़ आते हैं।

उसने जैसे ही अनारकली के धागों को अपनी उँगलियों पर लपेटा उसके कमज़ोर और बीमार बदन में एक बिजली सी दौड़ गई। कुछ देर वह सब कुछ भूल कर उसे नचाता रहा। दुनिया में सिर्फ़ राजस्थानी कठपुतलियाँ ही ऐसी पुतलियाँ हैं जिनके धागों को उँगलियों पर लपेट कर चलाया जाता है। उसका सीना यह सोचते ही गर्व से फूल गया। अपनी बेहद पुरानी कठपुतली अनारकली की हालत देख कर उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसका मन बेचैन हो उठा।

वह धीरे-धीरे अपनी इस पारंपरिक कला को लुप्त होते हुए देख रहा था। अपने आप को बहुत असहाय महसूस करता था। कभी-कभी वह सोचता था कि अगर वह अपनी कला से सिर्फ इतना भर कमा पाता कि उसकी बुनियादी ज़रूरतें पूरी होती रहतीं, फिर वह अपनी इस पारंपरिक कठपुतली कला को कभी नहीं छोड़ता। उसे इस बात का बहुत पछतावा और दुख था कि उसे यह कला छोड़नी पड़ी। लेकिन उसे इस बात का गर्व भी था कि उसने अपनी कला के साथ किसी भी तरह का कोई भी समझौता नहीं किया। उसका बस चलता तो वह युवा पीढ़ी को चालू कठपुतलियों से दूर ले जाता, उन्हें एकबार फिर परंपरा से जोड़ता। पारंपरिक तरीके से कठपुतलियाँ बनाना सिखाता, प्रकृतिक रंगों से उन्हें रंगना और कपड़े पहनाना सिखाता। इस राह भटकी हुई युवा

पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने की कोशिश करता। उनमें अपनी इस कला के प्रति एक बार फिर सम्मान की भावना उत्पन्न करने की कोशिश करता। राजस्थानी कठपुतली को भारतीय संस्कृति का एक अटूट अंग बना रहने देता। पर वह मजबूर था।

उसने अनारकली को लपेट कर बक्से में रख दिया। बक्से के कोने में उसे 'बोली' नज़र आई, 'बोली' बांस के दो पतले टुकड़ों के बीच, पहले, सरकंडे की पत्ती या अब, ट्यूब का रबड़ को फंसा कर बनाई जाती है, इसका इस्तेमाल कठपुतली चलाते समय किया जाता है, पुतलियाँ संवाद ना बोल कर 'बोली' की आवाज़ पर चलाई जाती हैं। उसे बक्से से निकाल कर उसने अपने होंठों में फंसा लिया और 'बोली' बजाने लगा। 'बोली' से एक तीखी और कांपती हुई आवाज़ निकली। जो उसके कानों से होती हुई उसके सिर में गूंजने लगी। अचानक उसके पेट में बहुत तेज़ दर्द उठा। उसने 'बोली' बक्से में रख दी और चारपाई पर लेट गया और धीरे से अपनी आँखें बंद कर लीं। दर्द असहनीय था। उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। उसे लगा वह वापस अपने बचपन के गाँव पहुँच गया है। उसकी नाक में आम की लकड़ी की गंध घुसने लगी... चटनी और चूल्हे की रोटी की खुशबू उसकी नाक में घुसने लगी...दादी का गीत उसके कानों में गूंजने लगा...उसे लगा वह केसरिया बालम पधारो म्हारे देस गा रहा है और पिताजी ढोलक बजा रहे हैं...वह अपने दादाजी और पिताजी के साथ डेरे से निकल कर गाँव में कार्यक्रम लेने जा रहा है... पिता जी उसे पगड़ी पहना रहे हैं कार्यक्रम से पहले...वह अपनी तेरह वर्षीय पत्नी का गौना करा के ला रहा है... उसे अपने बड़े बेटे की आवाज़ सुनाई दी, ''नहीं पिताजी अब कुछ नहीं रखा है इस कठपुतली कला में इससे हम दो वक़्त की रोटी नहीं खा सकते हैं। मुझे अपना और अपने परिवार का पेट भरना है मैं शहर जाकर कोई और काम धंधा करूंगा। ढोल बजाऊँगा, जादू दिखाऊँगा, कुछ भी करूंगा पर... बेटा यह कील समझो इस कठपुतली की आत्मा है, इसे सिर के ठीक बीचों बीच ठोंकते है... अचानक उसके सिर में भयंकर दर्द होने लगा, लगा मानो किसी ने उसके सिर में कील ठोंक दी हो... उसे एक काली परछाईं नज़र आई उस परछाईं ने उस कील से एक काला धागा बांध दिया और उसे धागे से उठाकर ले जाने लगी.. उसे लगा कि वह उड़ता चला जा रहा है..उसका शरीर एकदम हल्का हो गया.. उस काली परछाईं ने उसे ले जाकर पीपल के पेड़ के नीचे रख दिया जहां पर पहले से ही सैकड़ों पुरानी कठपुतलियाँ मौजूद थी। वह भी एक कठपुतली बन गया था।

बेटियाँ

प्रकाश टाटा आनन्द

''लाला जी आधा किलो चने की और आधा किलो उड़द की दाल दे देना, मेरी उषा को बहुत पसंद है और हाँ एक पैकट काफी का भी डाल देना... छोटे वाला...'' मौसी लाला को सौदा लिखा रही थी उसे समझ नही आ रहा था क्या ले और क्या न ले।

आज पूरे चार महीने बाद उसके हाथ में बारह सौ रुपये लगे थे। छोटी बेटी उषा की किसी प्रेस में नौकरी लगी थी और वो पंद्रह सौ रुपये ले के आई थी। आज सुबह सुबह ही उसने काम पर जाते-जाते पकड़ाए थे। बहुत खुश थी।

''मम्मी तनखाह तो पंद्रह सौ है पर मैंने दो हजार रुपये ले लिये हैं । बाकी के पाँच सौ कपूर साहब किश्तों में काट लेंगे। तुम चिंता मत करना अब दिन अच्छे आ गए हैं। और हाँ पाँच सौ आंटी को किराए के दे देना, धीरे धीरे सारा कर्जा चुक जाएगा, अच्छा मैं चलती हूँ मुझे देर हो रही है...'' कहते हुए उषा जल्दी से पर्स उठा कर सीढियाँ उतर गई थी।

मौसी की आँखों में आँसू भर आए थे और उसने उषा की पीठ पर बस हाथ फेर दिया था । गला भर्रा गया था सो कुछ बोल नही पाई और रसोई में चली गई । किरन तो आज सुबह-सुबह ही निकल गई थी शायद एक एक्सपोर्ट हाउस में कुछ काम मिल जाए । नौ बजे बुलाया था ।

बस यही सब सोचते सोचते मौसी ने आठ सौ पचहत्तर रुपये का सौदा लिया ।''ओ भइया रिक्शे वाले ! अरे रुक रुक तो जरा... बी ब्लाक के कितने पैसे लेगा...'' अचानक मौसी ने साइकिल रिक्शा को आवाज लगाई। ''आँटी दो रुपये एक सवारी है और समान के साथ तीन रुपये होंगे'' रिक्शे वाले ने चलते हुए ही जवाब दिया।''क्या भाई समान कित्ता सा है मेरे पास जरा सा समान है। दो रुपया ले ले'' कहते कहते मौसी ने रेंगते रिक्शे को हाथ से पकड़ा और सामान रखने लगी। ''अरे भइया आंटी की असीस ही लगेगी।... ला जरा हाथ तो लगा'' कह कर मौसी ने अपना पूरा भार रिक्शे वाले पर डाल दिया । रिक्शे वाले ने भी सोचा चलो दो रुपये में ही छोड़ देता हूँ और वो मौसी और सामान को लेकर धीरे-धीरे चल पड़ा ।

घर के आगे आने पर मौसी चिल्लाई ''अरे रोक रोक बस यहीं रोक दे'' रिक्शे वाले को दो रुपये दिये उसने भी सामान उतारने में मदद करदी । अभी वह रिक्शा वापसी के लिए मोड़ ही रहा था कि अचानक सामने से मैले कुचेले से कपड़े पहने हाथ में डण्डा लिए एक सरदार भागा चला आ रहा था। उसने रेत से भरे बालों का जूडा बना रखा था और ज़ोर ज़ोर से चिल्ला रहा था ।

''बोले सो निहाल... मारो-मारो सालों को... कोई बच के न जाने पाए....'' रिक्शे वाला तो तेजी से पेडल मारता हुआ भाग खड़ा हुआ। मौसी अभी कुछ समझ पाती इससे पहले ही उस पागल ने मौसी का सड़क पर रखा सारा सामान बिखेरना शुरू कर दिया। दालें, आटा, चावल, चीनी सब कुछ सड़क पर चारों ओर फैला दिया और डण्डा घुमाता पागलों की तरह चिल्लाता हुआ चला गया।

मौसी धम्म् से सड़क पर बैठ गई। अवाक् सी बस सामान को देख रही थी उसे तो पता भी नहीं लगा कि ये सब कब कैसे हो गया ? पल में ही सब कुछ मिट्टी में मिल गया। कुछ देर तो वो देखती रही फिर धीरे से उठी और सामान में से कुछ मसालों के पैकेट उठाने लगी बंद डिब्बे होने के कारण वो बच गए थे। कुछ देर बाद फिर दरवाजे की सीढी पर बैठ गई। इतने में खिड़की से मकान मालकिन मिसेज वर्मा ने देखा वो दौड़ती हुई आई।''अरे बहन जी यह क्या हो गया... किसने किया यह सब...!!!'' हैरानी से वह कभी बिखरे हुए सामान को देखती और कभी मौसी के कन्धे को सहलाती। अब मौसी को होश आया और वो मिसेज वर्मा के

कन्धे पर सर रख कर फफक पड़ी । जब खूब रो ली और जी हल्का हुआ तो बोली ''क्या बताऊँ एक पागल सा सरदार आया और सब कुछ बिखेर गया । सुबह ही तो उषा मुझे पैसे दे कर गई थी राशन के, अब क्या बनाऊँगी और क्या खिलाऊँगी... हे राम ये क्या कर दिया । अब और क्या क्या दिन दिखाओगे ?'' मौसी रोये जा रही थी ।

''हाय राम ये मरदुआ यहाँ भी पहुँच गया, पर बहन जी क्या बताऊँ उसने भी बहुत बुरे दिन देखे हैं 84 के दंगो में सारा परिवार खत्म हो गया, जवान बेटा था उस पर जलता टायर डाल दिया, सड़क पर इसकी आँख के सामने दम तोड़ गया, तब भी यह रो धो कर रह गया। पर जब आतताइयों ने घरवाली को खराब किया और उसने आत्महत्या कर ली। तब से इसका दिमाग चल गया। अब बस गुम सुम सा रहता है । पर जब कुछ शरारती लड़के इसे छेड़ देते हैं तो ये जानवर हो जाता है...'' मिसेज वर्मा कहती जा रही थी और बचा खुचा सामान समेटते हुए मौसी को चुप कराने का प्रयत्न कर रही थी। मिसेज वर्मा मौसी को अन्दर ले गई। पानी का गिलास हाथ में देकर बोली ''फिकर मत करो बहन ऊपर वाला जब देगा तो तुम्हें पता भी नहीं चलेगा कि कब दिन फिर गए। जब अच्छे दिन नहीं रहे तो बुरे भी जल्दी कट जाएंगे और फिर दोनो बच्चियाँ लगी तो हुई है। आज उषा बता रही थी कि उसकी नौकरी लगी है अखबार के दफ्तर में बस अब किरन की भी लग जाएगी। फिर देखना राज करोगी।''

मौसी ने रोते रोते एक घूँट पानी बड़ी मुश्किल से गटका और धोती के पल्लू से आँसू पोछ्ते हुए बोली ''बहन जी तुमसे तो कुछ छिपा नहीं है। हम यहीं तो रहते थे सी ब्लाक में।'' ''हाँ हाँ मैंने तुम्हारे वो दिन भी देखे हैं जब चौहान साहब थे। क्या ठाठ थे तुम्हारे, दोनों बेटे जब बाप के साथ गली में निकलते तो सब देखते रह जाते थे । कैसे राजकुमारों की तरह सजा के ले जाते थे चौहान साहब'' मिसेज वर्मा पुराने दिन याद करने लगी। ''अरे बहन तुम्हारे उन्हीं दिनों को याद कर और चौहान साहब के उपकार, जो उन्होंने हमारे आड़े वक्त में किये थे, के कारण ही तो वर्मा जी ने उषा से कहा था कि बेटा जब तक चाहो हमारे घर रहो यह तुम्हारा अपना ही है और हम समझेंगे कि हमारे तीन बेटी हैं ।''

मौसी की आँखों से अश्रुधारा बह चली उन दिनों की याद ताजा हो आई । मौसी को उदास देख मिसेज वर्मा ने भी उन्हे ज्यादा छेड़ना ठीक नही समझा और खाना बनाने चली गई। दोपहर भी तो हो गई थी और उनकी लडकी प्रिया भी तो कालिज से आने वाली थी।

इधर मौसी को वो दिन याद आ रहे थे जब रमेश (बड़े बेटे) की शादी थी । क्या धूमधाम से बारात सजी थी। 'राम चन्द्र कृष्ण चन्द्र' के यहाँ से बनारसी साड़ी खास मौसी के लिये लाए थे चौहान साहब और मौसी उसे पहन कर इतराती घूम रही थी। मजाल है कोई उनकी साड़ी को हाथ भी लगा जाए ।''अरी दूर रहो गन्दी हो जाएगी और रोज रोज थोड़े ही पहनूँगी इसे बस बहू के आते ही उतार के रख दूँगी संदूक में...एक हजार की है पूरे एक हजार की'' और मौसी की बात सुन कर बुआ और ताई, मुँह में पल्लू दबाए खिलखिला कर हँस पड़ी ''हाँ भई हमने तो ऐसी बनारसी साड़ी कभी देखी ही नहीं।''

अगले दिन बड़े चाव से मौसी रमेश के लिए बहू लाई । सबने कहा कि ''हमारे यहाँ औरतें कोई बारात में जावें? अरी हम तो रात भर रतजगा करेंगी। गीत गावेंगी...'' पर मौसी कहाँ रुकने वाली थी आखिर पहली शादी थी घर में। बारात में गई और बहू की डोली ले कर आई थी।

दो बरस बीत गए पर मौसी ने बहू को ऐसे रखा जैसे कोई हीरे जवाहरात छुपा के रखता है। बेटियों को डाँट देती पर बहू को कुछ न कहने देती। और जब बहू के सोनू होने वाली थी तब तो मजाल है कि बहू एक गिलास भी उठा जाए। सब काम भाग-भाग कर खुद ही करती। लड़कियों से भी कुछ न कराती, कहती ''अभी तुम्हारे पढ़ाई के दिन है, पढ़ो और बस पढ़ो।''

सोनू के आने से तो घर में खूब चहल पहल हो गई थी। अब तो चौहान साहब भी थोड़े ढीले पड़ गए थे अब वो ज्यादा गुस्सा नही करते थे। सोनू के साथ खूब हँसते कभी घोडा बनते, कभी उसे कन्धे पर घुमाते। रिटायर्मेंट के बाद अच्छा समय कट रहा था।

एक दिन विजय (मौसी का दूसरा बेटा) ने कहा ''माँ मुझे तुम्हें किसी से मिलाना है ।''

विजय सरकारी दफ्तर में काम करता था। अच्छी तन्ख्वाह थी। गीता भी वही काम करती थी बस दोस्ती हो गई और दोस्ती प्यार में बदल गई।

मौसी याद कर रही थी कि किस तरह विजय ने गीता के बारे में बताया तो पहले तो मौसी ने बहुत मना किया उसे पता था कि चौहान साहब नहीं मानेंगे उन्हें अपनी आन-बान का बहुत ख्याल रहता है और फिर लडकी गुप्ता थी। कहाँ राजपूत और कहाँ बनिये । बहुत समझाया ''जी अब जमाना बदल गयो है, क्या बुराई है गुप्तों में... हैं तो अपने राजस्थान के ही... और फिर जब विजय को पसन्द है तो आपको क्या... निभानी तो उसे ही है हम और कितने बरस जियेंगे। मेरी मानो तो हाँ कर दो। जवान बच्चे हैं कुछ ऊँच-नीच हो गई तो खाम खाँ बदनामी होगी हमारी भी और लड़की की भी। मैंने देखी है लड़की लाखों में एक है।''

बहुत ना नुकर करके आखिर मान गए ''मैंने सुना है बनियों में खूब लेन-देन होता है, कह देना हम कुछ नहीं लेंगे। दहेज-वहेज के चक्कर में न पड़े'' अच्छा बाऊजी कह दूँगी। उस दिन मौसी कितनी खुश थी चलो अब दो-दो बहुएं आ जाएगी। घर में रौनक रहेगी।

फिर वो दिन भी आ गया जब विजय की शादी हो गई और गीता घर में आ गई। दहेज तो नही लिया था चौहान साहब की जिद थी, पर वो हमेशा अपने मायके के ठाठ-बाठ सुनाती रहती थी।

सब कुछ ठीक चल रहा था कि एक दिन विजय ने कहा ''बाऊजी आफिस की तरफ से फ्लैट मिल रहा है दो कमरों का है मैंने हाँ कर दी है। आप कहें तो...'' कुछ झिझकते हुए ''और फिर गीता भी कुछ बिजनेस करना चाहती है जो यहाँ हो नही सकता । नीचे का फ्लैट है न'' चौहान साहब खूब गुस्सा हुए ''बोले बेटा मैंने बाल धूप में सफेद नहीं किए तूने अप्लाई किया होगा तभी तो फ्लैट निकला है... कोई जबरदस्ती तो फ्लैट नही दे देता और यहाँ क्या कमी है।''

''चलो छोड़ो भी अब विजू से गल्ती हो गई वापिस कर देगा'' कह कर मौसी ने बात को आई गई कर दी। पर उस दिन से चौहान साहब के दिल में न जाने क्या बैठ गया वो उदास रहने लगे । शायद भविष्य की भनक लग गई थी उन्हें। छोटी बहू अक्सर किसी न किसी बात पर तुनक जाती और अब तो विजय और बहू की आवाजे कमरे से बाहर भी आने लगी थी। एक दिन चौहान साहब ने कहा ''बहू थोडा सा हलवा बना दो आज मीठा खाने का मन है, बस छोटी बहू तो तुनक गई ''क्या बाऊजी आप कभी दीदी को तो नही कहते मुझे ही काम पर लगाए रखते हो'' और बात बात में सरकारी फ्लैट का ताना भी दे दिया ।''अच्छे भले फ्लैट में जा रहे थे यहाँ की रसोई इतनी छोटी है कि मेरा तो घुसने का मन नहीं करता।'' उस दिन चौहान साहब ने कुछ नहीं खाया । रात के ग्यारह बजे तक नुक्कड़ पर बैठे रहे और फिर आ कर सो गये। सुबह जब किरन चाय लेकर गई तो बदन तप रहा था। बस उस दिन से बुखार उतरा ही नहीं, हर तरह का इलाज करा लिया।

कभी-कभी जब मौसी उनके पास बैठ कर बच्चों की बाते करती तो वो कहते ''मैं हमेशा लड़कों के लिये ही सोचता रहा। कभी उषा किरन के बारे में नहीं सोचा । सोचता था कि दो बेटे हैं मुझे क्या चिंता, बहनों पर जान देते हैं शादी-ब्याह भी वही करेंगे। पर अब नही लगता। दोनों बहुओं के मन-मुटाव से अब डर लगता है। अब जब समझ आई तो मैं खाट पर आ गया।''

''ऐसे क्यों चिंता करते हो बहुएं लड़ती है तो क्या हुआ वो तो पराई हैं, पर बेटे तो अपने हैं। सब ठीक हो जाएगा आप ज्यादा दिल पर मत लिया करो।''

और उस दिन को कैसे भूल सकती थी जब सुबह-सुबह चौहान साहब को खांसी का दौरा पडा था और सोनू पास ही खेल रही थी। रमेश सुन कर अन्दर आया। ''अरे बाऊजी क्या हुआ दवाई नहीं पी क्या? पर सोनू को देख कर ऊँची आवाज में चिल्लाया ''सुनीता कहा हो अरे माँ बाऊजी को समझ नही है पर तुम तो ख्याल रखो, सोनू यहीं खेल रही है उसे ले जाओ'' और फिर बाऊजी को डाँटते हुए ''क्या बाऊजी आप टेस्ट तो कराते नही है कितने दिन से खाँसी है पता नही टी. बी. है या क्या है और सोनू अभी छोटी है....'' कहते हुए सोनू को लेकर कमरे से बाहर निकल गया ।

उस दिन दोनों में खूब तू तू मैं मैं हुई, मौसी चौहान साहब के पास ही बैठी रही। कुछ देर बाद रमेश आया और

बोला, ''बाऊजी हम कुछ दिनों के लिये सोनू की नानी के घर जा रहे हैं आप टाईम से दवाई लेते रहना हफ्ते भर में आ जाएंगे'', ''अरे बेटा यूँ अचानक ही प्रोग्राम बना लिया सुबह चले जाना'' पर वो कहाँ रुकने वाला था सोनू और बहू को लेकर रात ही चला गया।

अगले दिन रात को जब उषा बाऊजी के कमरे में गई तो देखती है कि बाऊजी कुर्सी पर बैठे हैं चश्मा आँखो पर है पर अजीब तरह से एक ही तरफ देख रहे हैं। उषा ने उन्हें आवाज लगाई। थोड़ा आगे बढ़ कर छुआ तो उनका हाथ एक ओर लुढ़क गया। उषा जोर से चिल्लाई। मौसी भी दौड़ती हुई आई। आनन-फानन में डाक्टर को बुलाया, पर चौहान साहब नहीं रहे। सारे घर में कुहराम मच गया। सुबह तक सारे रिश्तेदार, पड़ौसी इकट्ठा हो गये। रमेश के ससुराल भी फोन किया गया पर उनका कहना था कि रमेश सुनीता और सोनू तो माउण्ट आबू गये है। अब कैसे सन्देशा भेजे। इधर विजय तो तीन दिनों से आफिस के काम से केरल गया था। बहू मायके से आ गई थी। सुबह के नौ बज गये सभी बड़े-बूढ़े कहने लगे अब ज्यादा देर ठीक नही है सो मिट्टी तो उठानी पढ़ेगी। रोआ राट मच गया जल्दी जल्दी चौहान साहब की मैय्यत को तैयार किया और श्मशान घाट की ओर ले चले। उषा और किरन भी जिद कर के साथ ही चली गईं।

''दाग कौन देगा और बहुत सारी रस्म करनी है कौन है परिवार में बड़ा बेटा या कोई और'' पण्डित जी ने पुकारा।

श्मशान घाट में खूब भीड़ थी। दूर-दूर से लोग आए थे। चौहान साहब थे ही इतने मशहूर। मोहल्ले में तो सभी उनकी इज्जत करते थे पर कैसी विडम्बना थी कि दो दो बेटों के पिता को अग्नि देने वाला कोई नही था। सब में खुसर-पुसर शुरू हो गई। फिर यह तय हुआ कि ताऊ जी के बेटे को बुलाया जाए। ताऊजी तो नहीं रहे थे पर उनका बेटा बिल्लू भईया था। उसे ही बुलाया गया ।

''बिल्लू भइया माफ करना आप हमारे बड़े भाई है और हम आपकी बहुत इज्जत करते हैं। हमारे दोनो भाईयों ने तो धोखा दे दिया पर किस शास्त्र में लिखा है कि बेटी दाग नही दे सकती, हम देंगे'' और किरन बिल्लू भैया से लिपट कर रो पड़ी। उषा भी पास आकर बिल्लू भैया से लिपट गई और फफक फफक कर रो पड़ी। ''मत रोओ मेरी बच्चियों, मत रोओ, मैं तुम्हारी भावनाओं को अच्छे से समझता हूँ। मुझे सब पता है कि क्या हो रहा है तुम्हारे घर में, पर तुम जैसा चाहोगी वैसा ही होगा। मैं किसी परम्परा को नही मानता। परम्पराएं हमसे हैं न कि हम परम्पराओं से। मैं तुम्हारे साथ हूँ।'' और फिर बिल्लू भैया घर के बुजुर्गों के पास जाकर कुछ सलाह मशविरा करने लगे। पहले तो खुसर पुसर कुछ तेज थी फिर धीरे-धीरे शांत हो गई और बुआ के ससुर जी ने पण्डित जी के पास जाकर अपनी बात रखी । पण्डित जी भी अपने ही थे और चौहान साहब से भी उनका बहुत लगाव था। पर रमेश और विजय ऐसा करेंगे इसका उन्हें रत्ती भर भी भान नही था पर क्या कर सकते हैं तकदीर के आगे किसी की नहीं चलती। यूँ तो संस्कार अच्छे ही दिये थे चौहान जी ने।

अब किरन ने पानी का घड़ा अपने कन्धे पर लिया और मंत्रोच्चार के साथ चल पड़ी पण्डित जी के कहे अनुसार। फिर उसने जलती लकड़ी से अग्नि दी, अभी तक तो किरन ने अपने आपको मजबूत कर रखा था और फिर उषा भी उसके साथ ही थी पर जब कपाल क्रिया के लिये पण्डित जी ने कहा तो उसके हाथ काँप गये और वो जोर जोर से रोने लगी। कितना मुश्किल होता है जिसकी बाहों में झूली जिसकी गोद में सर छुपा के सोई, आज उसी के सर पर प्रहार करना होगा। यूँ तो किरन अभी सत्रह की थी। पर जिस मजबूती के साथ उसने आँसू पोंछे और इस अंतिम संस्कार को पूर्ण किया लगता था कि वो सत्तर की हो गई है।

मौसी को तो ये सब बहुत बाद में पता लगा। जब चौहान साहब की तेरहवीं पर दोनों बेटे आए सर झुका कर माँ के पास बैठ गए। ग्यारह पण्डित बुलाए थे। हवन की तैयारी चल रही थी। रमेश ने कहा 'पण्डित जी कितना खर्चा हुआ है हवन में मैं और विजय मिल कर दे देंगे' पास ही उषा बैठी थी वो तो बिफर गई 'नहीं रमेश भैया आप यहाँ आए ठीक है, भाभी भी आई हैं, पर खर्च की बात ना ही करें तो अच्छा होगा। अब हम इतना तो कर ही सकते हैं 'पर छोटी तू कहाँ से लायेगी इतने पैसे अभी तो तू पढ़ रही है और बाऊजी हमारे भी तो बाऊजी थे।' फिर कुछ कहने ही वाले थे कि सुनीता

बीच में ही बोल उठी 'एक तो बाऊजी की खबर तक हमें नहीं और अब बिरादरी में हमारी रही सही नाक भी कटाना चाहती है। सब हम पर थू-थू कर रहे कि लड़कियों ने दाग दिया अभी सबर नहीं हुआ और किरन तू तो मेरे साथ बहुत खेली है तुझे भी भाई भाभी का ख्याल नही आया।' अभी किरन कुछ कहती इससे पहले ही मौसी जो चौहान साहब के जाने के बाद से ही मौन धारन किये थी, ने किरन के गाल पर एक चपत लगा दी—'हे भगवान ये क्या गजब ढा दिया तुम लड़कियों ने अरे उनको पाप का भागी बना दिया मर कर भी वो कितना तड़पे होंगे तुम छोरियों के कर्मों पर। हे राम मैं कहाँ जाऊँ, क्या करूँ।' और मौसी जोर जोर से रोने लगी।

तभी बिल्लू भैया जो हलवाई को जरूरी हिदायत देकर आ रहे थे बडे शांत पर गम्भीर स्वर में बोले 'चाची जी ये क्या कह रही हैं। आपको पता है जिसे ये बदनामी कह रहे हैं वहाँ तो आपकी दोनों बच्चियों की खूब तारीफ हुई है इन्होंने तो हिन्दू समाज का और हमारे खानदान का नाम रौशन कर दिया और समाज के सामने एक नई मिसाल रख दी। जब बेटे साथ न दे तो बेटियाँ क्यों नही कर सकती संस्कार, आखिर बेटे बेटी में क्या अंतर है। अब साउथ में तो बेटियाँ अपने माँ बाप के पाँव भी छूती हैं तो वहाँ क्या ये कन्या नही होती। चाची सब हमारे बनाए नियम हैं वक्त पढ़ने पर जो अच्छा हो और जिससे किसी का नुकसान न हो वही अच्छा है' 'पर बेटा...' मौसी ने कुछ बोलना चाहा 'न चाची जी अब कुछ न कहना इस बात में तो पण्डित जी भी हमारे साथ हैं यकीन न हो तो पूछ लो 'हाँ भई हम तो दंग रह गए आपकी बेटियों की हिम्मत पर वाह खूब नाम रौशन किया है और अब तो समाज में एक मिसाल कायम कर दी इन बच्चियों ने...'

दोनों भाई और भाभियाँ चुप्पी साध गए। कुछ देर तक तो हवन में बैठे रहे फिर गीता उठ कर अपने कमरे में चली गई और सामान पैक करने लगी। पीछे पीछे विजय भी आ गया और सामान बंधवाने में गीता की मदद करने लगा।

पूजा हवन का काम चार घण्टे तक चला फिर सब लोग खाना खा कर अपने अपने घर चल दिये। शाम तक सारा घर खाली हो गया। ताई जी मौसी के पास ही सोई और बिल्लू भैया सुबह आने की कह कर चले गए।

सुबह सुनीता ने सब के लिये चाय बनाई। सभी बैठक में बैठे थे। तभी गीता तीन अटैचियाँ आँगन में रख कर बोली 'विजय चलिये अब हम यहाँ नही रहेंगे' मौसी सकपका गई अरे बेटा कहाँ जा रहे हो अरे विजू तू देख तो बहू क्या कह रही है—'विजय थोडा झिझकते हुए बोला हाँ माँ वो जो हमारा सरकारी फ्लैट निकला था न हम वहीं शिफ्ट हो रहे हैं' 'पर वो तो तुमने वापस कर दिया था।' मौसी ने धीमी आवाज में कहा। नहीं माँ बाऊजी के कहने पर हम रुक गये थे पर वो अभी भी हमारे पास ही है गीता का भाई उसमे पढ़ाई के लिये रह रहा था अब हमने खाली करा लिया है सो अब हम वहाँ रहेंगे। और गीता भी कुछ बिजनेस करना चाहती और यहाँ रह कर मुश्किल है माँ... अब तुम नाराज मत होना हम आते रहेंगे। इतना कह कर विजय चुप हो गया शायद माँ का जवाब सुनना चाहता था पर माँ नहीं बोली और आँसू पोछते हुए अन्दर चली गई।

बहुत देर हो गई कोई भी माँ के पास नही आया सो खुद ही बाहर आई तो देखा विजय जा चुका था और किरन बर्तन माँज रही थी । उषा रोटी सेक रही थी। ताई जी भी खाट पर बैठे बैठे मटर छील रही थी । अभी विजय के सदमे से मौसी बाहर नहीं निकली थी कि सोनू रोती हुई आई 'दादी मैं कही नहीं जाऊँगी मुझे बस तुम्हारे पास ही रहना है उषा बुआ के साथ ही सोऊँगी । देखो न माँ मुझे ले जा रही है।' 'अरे रमेश क्यों रुला रहा है सोनू को, सोने दे उसे उषा बुआ के पास' मौसी ने चिरौरी भरे स्वर में कहा ।

सुनीता ने धम धम करके बैठक में प्रवेश किया और तमक कर बोली 'चल सोनू अपना बस्ता और किताबें समेट हमें आज ही जाना है।'

'अरे बड़ी बहू कहाँ जा रही है।' मौसी कुछ आशंकित स्वर में बोली। पर सुनीता पर कुछ फर्क नहीं पडा वो सोनू को खींचती हुई ले गई। मौसी की हिम्मत नहीं हुई कि पीछे जा कर देखे वो सिर हिलाती हुई दुबारा कमरे में चली गई।

शाम को रमेश आया ताई को प्रणाम किया, माँ को प्रणाम किया फिर कुछ देर वहीं बैठ गया और बाऊजी के बारे

में बातें करता रहा। बीच बीच में माँ को कन्धे से सहलाता फिर पैर दबाने लगता, तभी सुनीता की आवाज आई और वो माँ - ताई को छोड़ अपने कमरे में चला गया।

पहले धीमे स्वर में और फिर तेज तेज लड़ने की आवाजें आती रही, समझ नही आ रहा था कि अभी बाऊजी को गये तेरह दिन ही हुए हैं और इस हँसते खेलते घर में ये किस की नज़र लग गई।

किरन और उषा ने मिल कर खाना बना लिया था सो भाई भाभी को भी बुलाया गया। सुनीता बिना कुछ बोले खाना खाने चली आई आँखे सूजी हुईं थी पर किसी के भी पूछने की हिम्मत नहीं हुई। बिल्लू भैया भी अपनी पत्नी और बेटे को लेकर आ गए थे सो वो भी खाना खाने बैठ गए। बहुत देर तक धीरे धीरे बातें होती रही। बहुत अजीब सा सन्नाटा था उस दिन। सब मौन थे थके-थके से बुझे-बुझे से। मौसी को लग रहा था कि अभी तूफान थमा नही है कुछ तो है जो इस दबे हुए माहौल को बोझिल कर रहा है।

बिल्लू भैया ताई जी को भी लिवा ले गए। उनके होने से मौसी को थोड़ी राहत थी कि चौहान साहब के बाद कोई तो है जिसके पास बैठ कर मन हल्का किया जा सकता है। हालांकि ताई जी भी ताऊ जी के जाने के बाद चुप सी हो गई थी। पर बिल्लू भैया के होते हुए इतनी तसल्ली थी कि वो कभी अकेली नहीं रही। और फिर बहू भी शाम को दफ्तर से आ कर ताई जी को दिन भर के किस्से सुनाती सो उनका मन लगा रहता। कितना अच्छा परिवार है मौसी को आज सब याद आ रहा था।

और एक उसका परिवार है जब तक चौहान साहब थे किसी तरह सिमटा था पर हर दिन एक न एक ऐसी बात हो रही कि सब कुछ ढहता जा रहा है। मौसी के आँसू अब सूख चुके थे। और वो बस यही सब सोचते सोचते सो गई। उषा कमरे में आई और मौसी के बगल में ही चादर ओढ़ कर सो गई।

सुबह मौसी की देर से आँख खुली। रोज की तरह आवाज लगाई ''अरे सुनीता सोनू को तैयार कर दिया क्या? ला उसके बाल मैं बना देती हूँ'' काफी देर हो गई कोई आवाज नही आई सो मौसी खुद ही उठके बाहर आई । किरन कालेज जा चुकी थी और उषा तैयारी कर रही थी ''माँ आप क्यों उठ कर आ गईं, मुझे बुला लेती अभी मैं चाय लाती हूँ'' अरे बेटा मैं तो सोनू को बुला रही थी क्या स्कूल चली गई? कोई आवाज नहीं आ रही सुनीता के कमरे से!!!!''

''माँ कोई होगा तो आवाज आएगी वो लोग तो सुबह ही चले गए'' उषा ने कहा। ''चले गए ! कहाँ चले गए?'' मौसी की आवाज में भय था। ''माँ भैया कह रह थे यहाँ से आफिस दूर पड़ता है सो आफिस के पास ही किराये का मकान ले लिया हैं सो अब वहीं रहेंगे । कुछ सामान छोड़ गए है आते जाते ले जाएंगे'' उषा ने बडी सादगी से बात कह तो दी पर मौसी को लगा जैसे पैरों के नीचे से जमीन निकल गई हो। लड़खड़ा के गिर ही जाती कि उषा ने पकड़ लिया। मौसी की जबान पलट गई। आँखें पथरा गई। उषा ने जमीन पर ही बैठा दिया। और जोर जोर से चिल्लाने लगी पड़ोस वाली आंटी आ गई। आनन फानन में डाक्टर को बुलाया। आधे घण्टे में मौसी को होश आया। उस दिन उषा कहीं नहीं गई। बस मौसी के पास ही बैठी रही।

इस बात को छः महीने हो गए। धीरे-धीरे मौसी भी अभ्यस्त हो गई थी। अब मौसी का बस एक ही काम था घर का काम देखना और मन्दिर जाना। अभी भी विधाता को ये शांति बर्दाश्त नही हुई कि एक और कहर टूट गया। मौसी को पता ही नहीं था मकान रमेश और विजय की पढ़ाई और फिर शादी जो इतने शान शौकत से हुई थी वो कैसे हुई थी? मकान गिरवी रख दिया था पर मौसी से एक गहना नही लिया था। यही तो आन थी चौहान साहब की। अब उनके जाने के बाद जब नोटिस आया तो मौसी को पता चला कि पाँच लाख का कर्ज हो गया था। मौसी के कंगन बेच कर तो सारे संस्कार किये थे लड़कियों ने। बाकी जेवरों की कीमत जोड़ने पर एक लाख ही बनता था। कहाँ से लाए बाकी के चार लाख। दोनों बेटियों की नौकरी तो थी नहीं, अभी पढ़ रही थीं। भगवान भी जिसे दुःख देने होते हैं बस देता ही जाता है मौसी सोचे जा रही थी आज जब दोनों कालेज से आएंगी तो क्या जवाब देगी। कैसे करेंगी मेरी बच्चियाँ दोनो भाई तो छोड़ कर चले गए अब किसके आगे हाथ फैलाऊँ सोचते-

सोचते जब मौसी थक गई तो उठ कर मन्दिर चली गई जब कुछ न सूझे तो भगवान ही सहारा होता है।

मन्दिर के अन्दर जाने का मन नही हुआ सो मौसी सीढ़ियों पर ही बैठ गई वही उन्हें मिसेज वर्मा मिल गई इस तरह उदास देख कर बोली ''अरे बहनजी क्या हुआ ? ऐसे क्यों बैठी हो'' पहले तो मौसी कुछ देर मौन रही, सोचती रही कि बताऊँ या न बताऊँ फिर मन ने कहा पुरानी सहेली है सो कह देना ठीक है। मन का गुबार भी निकल जाएगा। बस इसी उधेड़ बुन बैठी रही फिर आँख मे आँसू भरकर सारी बात मिसेज वर्मा को आखिरकार बता ही दी। मिसेज वर्मा ने पहले तो ढाँढस बँधाया थोडा कमर को सहलाते हुए कहा ''वैसे हमारा घर तुम्हारे घर जितना तो बड़ा नहीं है। एक कमरा है और साथ में रसोई और बाथरूम भी है पर ऊपर है और चढ़ने के लिए लकडी की सीढ़ियाँ है। मजबूत हैं। अच्छी हैं कोई परेशानी नही होगी। आप चाहो तो जब तक चाहो रहो'' फिर कुछ देर रुक कर बोली ''सोचा था बेटा बहू रहेंगे तो पक्की सीढ़ियाँ बनवा देंगे पर वो तो बम्बई जा कर बस गए अब हम तीन जन है सो नीचे ही रह लेते है। ऊपर जाना ही नही होता अब आप अपनी किरन और उषा को लेकर मेरे यहाँ ही आ जाओ'' मौसी को समझ नही आ रहा था कि रोए या खुश हो भगवान भी अजीब है कभी तो मृत्यु के समान कष्ट दे देता है और कभी लगता है कि मन चाहा मोती मिल गया। कुछ हिचकिचाते हुए बोली ''आ तो जाऊँगी पर पहले किरन से पूछना होगा क्योंकि अभी तो दोनो ही नही कमाती दर दर भटक रहीं है नौकरी के लिए, शायद कहीं मिल जाए। और फिर आपका किराया ...''

''अरे बहन किराया कैसा जब बच्चियाँ कमा कर लाएगी जब की तब देखी जाएगी'' बहुत मनुहार के बाद पाँच सौ पर मिसेज वर्मा तैयार हो गई। मौसी की जान में जान आई। तीन कमरे बडा सा दालान दो रसोई और दो बाथरूम वाला घर था खूब शान से रहते थे। और अब एक कमरे में अपनी बच्चियों को ले जाऊँगी। इन्होंने भी क्या सुख देखा। दो दो भाइयों के होते नौकरी को भटक रही हैं। सोचते सोचते मौसी और मिसेज वर्मा मन्दिर में चले गईं और पूजा से फारिग होकर अपने अपने घर चली गईं।

एक महीने बाद् मौसी दोनो बेटियों को लेकर मिसेज वर्मा के घर चली आई थी। चार महीनों से रहना खाना सब मिसेज वर्मा के घर था। और आज जब उषा ने चार रुपये हाथ पर रखे तो सब मिट्टी में मिल गया।

''लो बहन खाना खा लो, चलो मुँह धो लो चिंता छोडो सब ठीक हो जाएगा'' मिसेज वर्मा ने काम से फारिग हो कर मौसी की तन्द्रा तोड़ी। बड़ी मुश्किल से मौसी के गले में आधी रोटी गई थी और फिर मौसी बिना कुछ कहे धीरे धीरे सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। तभी किरन ने चहकते हुए आवाज लगाई ''माँ माँ रूको'' आवाज सुन कर मिसेज वर्मा भी बाहर आ गई। किरन सारी घटना से अनभिज्ञ चहकते हुए बोली ''माँ जिस एक्सपोर्ट हाउस की बात कर रही थी वहाँ मुझे काम मिल गया और और बताऊँ मुझे सुपरवाईजर रखा है शुरू में दो हजार मिलेंगे फिर काम देख कर शायद तीन हजार कर दें और हाँ दो हजार एडवांस भी मिल गए है'' फटाक से पर्स में से लिफाफा निकाल कर लहराते हुए कहा। इतने में उषा भी आ गई और दोनो ने माँ को गले लगा लिया उषा माँ के गले लगे लगे ही कहाकि ''माँ अब हमारे दिन फिर से बदल गए हैं अब हम दोनों बहनें आपको दुनिया का सारा सुख देंगी। हमारे सारे कर्ज भी उतर जाएँगे'' और न जाने क्या बोलती जा रही थी। मौसी के आँखो की अश्रुधारा रुकने का नाम ही नही ले रही थी वो निरंतर बहती ही जा रही थी।

आज कैसी अशांति की ज्वाला

मूल बांग्ला से अनुवाद : प्रयाग शुक्ल

अशांति आज हानल ए की दहन ज्वाला।

आज कैसी अशांति की ज्वाला
हृदय में चुभी तीर की भाँति,
गई है निठुर वेदना ढाल॥
वक्ष में जलती अग्निशिखा,
कँपाती हुई दृष्टि के द्वार,
मृत्यु के धागों से है गुँथी
झूलती मेरी यह वर-माल॥
भुवन जो चीन्हा था मेरा,
खो गया किसी स्वन के जाल॥
पलाशी फागुन माया में
किया किसने मेरा यह हाल॥
झूलने, खो जाने का अरे,
नशा यह बढ़ता ही जा रहा
अचीन्हे किसी देश की ओर,
बढ़ी जाती है मेरी चाल॥

('गीत पंचशती' में 'प्रेम' के अंतर्गत 111वीं गीत संख्या के रूप में संकलित)

गान बिछा बैठा हूँ राह के किनारे

मूल बांग्ला से अनुवाद : प्रयाग शुक्ल

गानेन सुंदर आसनरवानि पाति पथेर धारे।

गान बिछा बैठा हूँ राह के किनारे।
आना ओ पथिक राह तुमको निहारे॥
आना तुम बार-बार आना,
लौट-लौट आना॥
पाखी जो भोर के वे भी बुलाते
सूरज की नाव पर जब सवार आते
द्वारा मेरे आते।
गान वे प्रभाती जो सुर नए मिलाते॥
इस सकाल मेघों की छाया है वन में,
जल उमड़ा नयनों में आज है गगन के॥
आए हो तुम नवीन ताड़ जहाँ छाये,
आये हो मोहन तुम आये हो आये॥
जाना तुम चले नहीं छलकर मत जाना,
गान सघन बादल छवि इनमें दिखलाना॥
आना तुम आना॥

('गीत पंचशती' में 'पूजा' के अंतर्गत 110वीं गीत संख्या के रूप में संकलित)

कविता

चौधरी जी कहते थे

सुमन कुमार

सब लोग जिस तरह मरे हुए अजगर के किस्से गढ़ते रहते हैं
तुम नहीं कहो
.....
अजगर अभी मरा कहाँ है
उसने तो अभी-अभी लीला है
अभी वह तरुण ही है
रक्त पोषित
महत्वाकांक्षी मैकबेथ
अभी मैंने देखा
हमारी घोषित परिधि के अंदर ही
मानव रक्त के स्नान से आह्लादित
राग रंग से अभिभूषित
दुहस्वप्न में डूबा
अमरता का मारा नृशंस काट लेता है
घरवाले का सर
मेहमान के सरपरस्तों के नफरत की भेंट चढ़ जाता हैं
.....
कोखजना, कोख पर ही टूट पड़ता है
.....
उपरवाले का कौल देकर
नफरत के समंदर में धकेल दिए जाने के बाद
लाँघना अब नियति
धरती अनजान है
कानों में बजता है न
मारो या मरो
जीना हैं तो मारना ही सबाब है
मारो
जन्नत पक्का
नफरत लेती है खौफ़नाक शक्ल
जन्नत
जहालत
जान
के आगे फांसी डोलती है
.....
मैं टोकन बन जाता हूँ न्याय का
टंगते ही
लोग जश्न मनाते हैं
.....
पर अजगर मरा नहीं हैं
.....
अजदाहा अभी भी है सवाल की तरह
हल ना तो हलाल में है ना हराम में
न तो झटके न कोहराम में है
ना गीता ना कुरान में है
ना भगवान तो कब के मंदिर से जा चुके हैं
रह गयी हैं
परंपरा, आस्था और अकीदत की बिना पर
.....
सवालों और जवाबों का दौर अंतहीन है
बेहतर है अजदहे की पीठ पर
आब और खवाब जोड़कर
ज़िन्दगी की मस्त फ़सल उगायें
.....
कविता कभी ख़तम नहीं होती
सरस्वती की तरह विलोप हो जाती है
.....
.....
.....

कविता

तुम! चिंता मत करो

पवन झा 'काश्यप कमल'

तुम! चिंता मत करो
आग लगे या वज्र गिरे
घन फटे या बरसा झरे
कर्म पथ पर अडिग रहो
तुम! चिंता मत करो

विरासतों की चाहे नींव खिसके
थाली की रोटी चाहे कुत्ते खींचे
नमक-तेल में भी पासंग ही मिले
दाल के पानी से ही काम चलाते रहो
तुम! चिंता मत करो

हरदम नया-नया अन्वेषन हो
तुम्हारे कर्मों का चाहे जितना भी छिद्रान्वेषन हो
सफलता-असफलता की आंखमिचौली हो
अपने कर्म की लाठी कस के थामे रहो
तुम! चिंता मत करो

फटी कमीज़ हो या फिर कटी जेब हो
पैरों मे टूटी चप्पल हो या घर में रुठी देवी हो
रसोई मे चल रहे चूहों का अनशन हो
या आधे महीने में ही खत्म हो रहा वेतन हो
पपड़ाए हुए होठों को अपनी जीभ से पनियाते रहो
तुम! चिंता मत करो

ईष्ट-मित्र चाहे बाजारू हो जाएं
लोक-वेद तुम्हें बेकार ही समझें
निन्दा के अग्निवाण चलाएं
अपनी पीठ को आगे करते रहो
तुम! चिंता मत करो

बतूता का जूता हो या गाँधी की लाठी
जयप्रकाश का झोला हो या टैगोर की दाढ़ी
बोस का चश्मा हो या नेहरु का गुलाब
विवेकानंद की पगड़ी या हो आज़ाद का रोआब
अम्बेडकर की टाई हो या झांसी की बाई
कलाम के बाल हो या या अन्ना की टोपी
वे, इनके भी बाज़ार में भाव करेंगे
प्रगतिवाद का सब्जबाग तुम्हें दिखाएंगे
निरंतर, बैल बना हल में जोतेंगे
हर पांच वर्ष पर, तुम्हें ही दण्डवत करेंगे
तुम्हारे 'स्व' और 'अभिमान' के द्वन्द छेड़ देंगे
तुमको ही तुमसे चाहे अलग कर देंगे
ऐसे 'जन' को भी, 'हरि' मानकर
खुद को, शालीनता के पथ पर अग्रसर करो
तुम! चिंता मत करो

चौराहे पर द्रौपदी का चीर खिंचे
चक्रव्यूह मे फंसकर अर्जुन पिटे
वातावरण में व्यभिचार का प्रदूषण हो
असत्य, हिंसा, कुटिलता, भ्रष्टाचार का ही बोलबाला हो
सत्ता जब मदान्ध हो जन से दूर हो चले
लक्ष्मी जब, दरिद्रता का कारण बनने लगे
घावों के पीप भी, जब सुगन्धित लगने लगे
नरमुंडों की भीड़ में खुद का स्व भी बिखरने लगे
दिलवालों की दिल्ली से जब दिल ही गायब होने लगे
सावधान!
संभलो, खुद को इन अनैतिक भंवर के पार धकेलते रहो
तुम! चिंता मत करो

बुलबुला

शैलेन्द्र वदन

आदमी क्या है पानी का बुलबुला है
कब बने कब फूट जाए, कोई नहीं जानता
जिंदगी मजबूरी है, पर जीना भी जरूरी है
मौत जब सामने आए, उसे कोई नहीं स्वीकारता
आदमी क्या है...
कहने को तो कह दूँ दुनिया बड़ी हसीन है
दिखाएँ रूप जब अपना, उसे कोई नहीं स्वीकारता
आदमी क्या है...
मिलने को तो मिल जाएँगे, बहुत से दोस्त
दुख आए, साथ जब, उसे कोई नहीं बाँटता
आदमी क्या है...
पाप पुण्य की बात तो हम करते हैं सभी
ख़ुद का पाप जब समाने आए, उसे कोई नहीं स्वीकारता
आदमी क्या है...
दूसरों की गलती पर तो उंगलियाँ उठाते हैं सभी
मगर अपनी गलती को कोई, गलती नहीं मानता
आदमी क्या है...
प्यार मोहब्बत की बातें तो करते हैं सभी
बाँटने की जब बारी आए, उसे कोई नहीं बाँटता
आदमी क्या है...
अच्छाई और बुराई तो हर शख्स में होती है मौजूद
परन्तु ज़िन्दगी की इस सच्चाई को, कोई नहीं स्वीकारता
आदमी क्या है...
खुशी और ग़म गाड़ी के दो पहियों के समान है
एक को तो हाँकते है सभी,
मगर दूसरे को कोई नहीं हाँकता
आदमी क्या है...

बेटी पैदा हुई

रानी केन

बेटी पैदा हुई, घर में लक्ष्मी है आई
पिताजी को पड़ोसियों ने दी बधाई।
पिताजी की आँखों से निकला पानी
आवाज थी भर्राई, हाँ बेटी है आई
माँ ने फिर भी चूमा और गले लगी।
मैने बचपन से सुना था
बेटियां तो होती है पराई,
मन में उत्सुकता लिए जाने कब बढ़ गई लम्बाई
खुद की जन्माई कैसे हो गई पराई
यह बात मेरी समझ में न आई।
जब मैं, माँ बनी लोगों ने फिर वही बात दोहराई,
बचपन की टीस पानी बन कर आँखों में उतर आई,
अपने दिल के टुकड़े को क्यों कहते हो पराई
जब बेटियाँ हैं पराई, तो क्यों जन्माई
मैं पूछती हूँ उस समाज से
क्या बिना बेटी के सृजन कर पायेंगे भाई ?

नीति के दोहे

संजय प्रकाश भारद्वाज

सबकी उन्नति में भाई, अपनी उन्नति जान
आस-पास के सब सुखी, स्वयं सुखी तू जान।

सोच समझ कर काम कर, जल्दी करे ना कोय
जल्दी में जो भी करे, सफल कभी ना होए।

कोई मुझे ना दुख दे, नहीं ये बस की बात
मैं ना किसी को दुख दूँ, है ये बस की बात।

बिना मित्र के जो रहे, उसको निर्धन जान
जिसके साथी साथ दें, वह निश्चित धनवान।

घर में दीपक है नहीं, बाहर जगमग होई
घर रोशन कुल दीप से, बिजली से ना होई।

उचित अनुचित विचार कर, करिएगा सब काम
उचित लाभप्रद है सदा, अनुचित दुख का धाम।

दाने दाने पर लिखा, बिना भाग्य न पाए
अधिक भाग्य से ना मिले, यत्न करो अधिकाए।

बीइंग ह्यूमन

संजय कुमार बलौनी

लगे हैं आज सब के मुँह पर ताले
हर कोई लगता है डरा-सहमा सा
जिन्दगी को जीते क्यों नहीं हँस कर
जीते हैं सब क्यों अपनी आँखे बंदकर
रहते हैं क्यो 99 के फेर में हर पल
इक छोटे से स्वार्थ की खातिर
क्यों अपनाया है सब ने आज यह नारा
अपना बनाओ भाड़ में जाए सारा।
इंसान ने इंसान को ही रुलाया
बिना लक्ष्य के जीवन बिताया
इक छोटे से स्वार्थ की खातिर
कलयुग में अवगुणों को हमने अपनाया
सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग को भुलाया।
ऐ भारत के नौजवानों
बस एक बार अपने स्वार्थ से उपर उठकर
ज़िन्दगी को जी कर देखो,
मानवता की खातिर, मानवता की खातिर
मुँह के ताले खोलो, सच्चाई बोलो
डर से ऊपर उठकर, डर से ऊपर उठकर
पहले की गोरों से लड़ाई, अब करनी है चोरों से लड़ाई
अपनी आँखें खोलो, स्वार्थ से ऊपर उठकर
हर गरीब पर हो परोपकार, हर मरीज का हो इलाज
हर नौजवान को मिले काम, शहर हो या फिर गाँव
कैन्डिल मार्च निकालने,
बीइंग ह्यूमन की टी शर्ट पहनने से नही चलेगा काम
पहले अपने छोटे-छोटे स्वार्थ को दो अल्प विराम
कलयुग को रहने दो कल्पनाओं की किताबों में
होने ना दो इस धरती पर कन्या की भ्रूण हत्या, अन्याय, बलात्कार, जुर्म और भ्रष्टाचार
अपने स्वार्थ से उपर उठकर, मानवता की खातिर

माता-पिता को प्रणाम

सुमित कुमार

घनी छाँव माँ
मेरा आसमाँ
पिता का प्यार अनोखा
शीतल हवा का झोंका

माँ पृथ्वी, जगत है, धुरी है
माँ बिना इस सृष्टि की कल्पना अधूरी है,

हाथ आगे कर नाम बोला मेरा
बेटा जल्दी आ कह रहा प्यार तेरा

पिता बिन दुनिया सूनी है
तपती आग की धूनी है,

छोटे-से परिंदे का बड़ा आसमान है
पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है

ज़िन्दगी की कड़वाहट में है माँ अमृत का प्याला
चूल्हा है, धुँआ है, रोटी है और हाथों का छाला

हाथ पकड़ चलना सिखलाया
पिता ने जीवन का पाठ पढ़ाया,

चोट जब भी हमें सताती
माँ मलहम बन लग जाती

अपनी खुशियाँ मारकर ख़ुशियाँ दी मुझे
कितने कष्ट झेलकर पाल-पोस दिया तुझे

मात-पिता सुरक्षा, सिर पर हाथ है
माँ-बाप नहीं तो बचपन अनाथ है

विश्व में किसी भी देवता का स्थान दूजा
माता-पिता की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा

कमी इनकी नहीं कोई पाट सकता
ईश्वर भी मात-पिता की आशीषें काट नहीं सकता

माँ-बाप की असीसों के हज़ारों हाथ होते हैं
हैं खुशनसीब वो जिनके माता-पिता साथ होते हैं।

क्योंकि मैं धनवान नहीं हूँ

मुस्तफा हुसैन

सरकार मैं इंसान नहीं हूँ
क्योंकि मैं धनवान नहीं हूँ,
न मैं नेता
न कोई अफसर
न बिल्डर
न माफिया
न डॉन
न कोई तस्कर
हुजूर मैं किसी पार्टी का कार्यकर्ता भी नही
क्योंकि में कोई बाहुबली पहलवान नही
सरकार मैं इंसान नहीं हूँ
क्योकि में धनवान नहीं हूँ।

मेरी न नौकरी,
न रोज़गार
न कोई धंधा
न व्यापार
न दुकान
न कारखाना
न कोई होटल
न दवाखाना
सर मेरा कोई आश्रय भी नही है
क्योंकि मैं कोई मुनि,
बापू, शंकराचार्य या भगवान नही हूँ
सरकार में इंसान नहीं हूँ
क्योंकि मैं धनवान नही हूँ।

न मैं कोई जज
न वकील
न हवलदार
न थानेदार
न सरपंच
न बी डी ओ
न जिला प्रमुख
न तहसीलदार
अन्नदाता! मेरे पास गाय भैंस खेत खलिहान भी नहीं,
क्योंकि मैं कोई मालदार किसान नहीं हूँ
सरकार मैं इंसान नहीं हूँ
क्योंकि मैं धनवान नहीं हूँ।

न मैं एन आर आई,
न एन जी ओ
न कॉरपोरेट
न सी ई ओ
न मैं खिलाड़ी
न कोई ऐक्टर
न इंजीनियर न डॉक्टर
मैं वही गोदान का होरी हूँ माई बाप
कोई महंत, श्रीमंत या कोई सर्वपूजित श्रीमान नही हूँ
हुकुम! मैं इंसान नही हूँ
क्योंकि मैं धनवान नहीं हूँ।

अनाथ

रामविनोद मिश्र

व्यस्त चौराहे, खतरों के बीच,
एक बालक खड़ा वस्त्र विहीन।
हाथ कटोरा, पुकार रहा था,
भूख-प्यास से तड़प रहा था
दब जाती थी उसकी करूण पुकार
गाड़ी कार के शोर में।
संस्कार और स्वास्थ्य दयनीय,
बना मूर्ख, समाज में निंदनीय।
फटे ओंठ रुधिरयुक्त
उभरी अस्थियाँ छाती की,
पेट पकड़, माँ बाबू कहता
प्राण रक्षक अन्न माँगता।
आते-जाते निष्ठुर लोग,
देख हेय दृष्टि उसे दुत्कारते।
उस अभागे नन्हें के
माता-पिता न थे।
हार थक कर नि:सहाय होकर
सो जाता होगा भूखे प्यासे,
निद्रादेवी आगोश में लेकर
सुला देती होगी किसी शिला पे,
सुन्दर से स्वप्न दिखाती होंगी
पुचकारती होगी, सहलाती होगी
कोसती होगी उस समाज को,
जहाँ झूठी महानता का स्वाँग रचते लोग।
निज स्वार्थवश छीनते दूसरों के सुख चैन,
अभिमान वश बेचैन करते परसुख शांति को।
बढ़ने से पहले देते कुचल,
गरीबों के स्वाभिमान को
जीने को तरसा देते
बिन रोटी-कपड़ा-मकान के।
है निर्दोष वह अनाथ बालक,
किसी छल-षडयंत्र का ज्ञान नहीं
है अधिकारी वह स्नेह शिक्षा का,
समता-ममता और प्रेम करूणा का।

बाल-एकांकी

शिष्टाचार अपनाओ, बिगड़े काम बनाओ

विजय सिंह

पात्र

शिष्ट / लकड़हारा-1
अशिष्ट / लकड़हारा-2
टीचर / सूत्रधार
बच्चा-1
बच्चा-2
बच्चा-3
बच्चा-4
बच्चा-5
बच्चा-6
बच्चा-7
पत्नी-1
पत्नी-2
जलपरी
बाक़ी बच्चे / पेड़

क्लासरूम का दृश्य। टीचर के आने में अभी देर है शायद। बच्चे आपस में लड़ रहे हैं, खेल रहे हैं। एक बालक खेल में हार कर भी हार नहीं मान रहा। यहाँ उसे हम अशिष्ट कहेंगे। एक दूसरा बालक उसे समझाने की कोशिश कर रहा है। इस नाटक में उसे शिष्ट कहा गया है। शोर में कुछ भी स्पष्ट सुनाई नहीं पड़ रहा। तभी पीरियड की घंटी बजती है और बच्चे टीचर के आने की प्रतीक्षा में क्लास में चुपचाप बैठने लगते है और मिली-जुली आवाज़ें सुनाई पड़ती हैं, हम लोग घूमने नैनीताल गए थे, मैंने तो खूब फिल्में देखीं, मैं तो अपनी नानी के घर जामुन खाने गया था, छुट्टियों का होमवर्क पूरा कर लिया है या नहीं, मेरी मम्मी ने तो एल. टी. सी. ले ली थी और हम हवाई जहाज़ में कश्मीर गए थे, पापा तो ऑफिस के टूर पर जाते ही रहते हैं हमें भी ले गए बड़ा मज़ा आया वगैरह...

शिष्ट और अशिष्ट एक बेंच पर बैठे हैं

शिष्ट : *(अपने साथ बैठे क्लासमेट अशिष्ट से)* क्या आपने अपना होमवर्क पूरा कर लिया है?

अशिष्ट : तू अपने होमवर्क की फिकर कर। बड़ा आया मुझसे पूछने वाला और यह क्या तू आप आप करके बोल रहा है यार? हो क्या गया है तुझे?

शिष्ट : मैंने इन छुट्टियों में कुछ कहानियाँ पढ़ीं जैसे हितोपदेश की कहानियाँ, ईसप की कहानियाँ, जातक कहानियाँ, और पंचतंत्र। जिनसे मैंने कई बातें सीखीं जिनमें से एक थी कि हमें एक-दूसरे से शिष्ट ढंग से बात करनी चाहिए।

अशिष्ट : ओह! अब समझ में आया कि तू-तड़ाक की उड़ान से तू आप-आपकी ढलान पर क्यूँ फिसलने लगा। देख बे! तुझे इससे मतलब? जैसे मेरे पापा कहते हैं मैं टैक्स भरूँ-न-भरूँ वैसे ही मैं कहता हूँ मैं होमवर्क करूँ-न-करूँ तुझे इससे क्या?

शिष्ट : मैं सोच रहा था कि अगर आपका होमवर्क हो चुका है तो मैं आपको वो कहानियाँ पढ़ने के लिए दूँगा।

अशिष्ट : *(नकल उतारते हुए)* मैं आपको वो कहानियाँ पढ़ने के लिए दूँगा।

शिष्ट : देखो अपने साथी की नक़ल उतारना अशिष्टता है। मेरा तो बस इतना सा मतलब था कि...

अशिष्ट : मतलब अपना रख अपने पास. मतलब तेरे से कोई मुझे मतलब नहीं. समझा मेरी बात का मतलब ?

बच्चा 1 : अब मत लब हिलाओ. चुपचाप बैठ जाओ. *(तभी टीचर क्लास में आ जाते हैं, बच्चे अभिवादन में खड़े होकर टीचर को नमस्ते कहते हैं, टीचर के बैठते ही सारे बच्चे भी बैठ जाते हैं)*

टीचर : क्या सबने अपना होम वर्क कर लिया है ?

शिष्ट : होमवर्क जी

बच्चा 1 : मैंने अपना

बच्चा 2 : कर लिया है पूरा

बच्चा 3 : पर टीचर जी

बच्चा 4 : मेरा काफी काम

अशिष्ट : अभी भी पड़ा है अधूरा

टीचर : एक छोटा-सा नाटक कहा था लिखकर क्यों नही लाए ?

अशिष्ट : मम्मी - पापा हरदम बिज़ी

बच्चा 5 : नाटक कौन लिखवाए ?

टीचर : ओ.के. शायद बच्चों को नाटक लिखकर लाने को कहना वाकई एक भारी होमवर्क था। *(कुछ सोचकर)* चलो ऐसा करते हैं हम खुद ही एक नाटक बनाते हैं *(बच्चे इस बात पर खुश होते हैं। उन्हें शांत करते हुए)* बच्चो, आपने लकड़हारे और जलपरी की कहानी तो सुनी होगी। उसी पर एक नाटक बनाते हैं।

शिष्ट : बड़ा मज़ा आएगा क्या मैं लकड़हारा बनूँगा ?

अशिष्ट : नहीं ! लकड़हारा तो मैं बनूँगा !

टीचर : किसको कौन-सा रोल मिले यह काम डायरेक्टर पर छोड़ना चाहिए *(फिर कुछ सोचकर)* चलो ठीक है। हमारे नाटक में तुम दोनों लकड़हारे हुए और दोनों हैं दो भाई।

बच्चा 6 : हीरो का रोल तो गया हाथ से। क्या लकड़हारे का कोई परिवार भी होगा मैडम ?

टीचर : हाँ दोनों का होगा।

अशिष्ट : हू विल बिकम माइ लुगाई ?

टीचर : *(गुस्से में)* आजा बेटा कर दूँ तेरी जोरदार ठुकाई। *(नरम पड़कर)* ऐसे नहीं बोलते बेटा। हमें एक-दूसरे के लिए, अपने दोस्तों, मम्मी-डैडी, बहन-भाई और दूसरों के लिए भी आदर-सूचक शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए. समझे ? शिष्टता से नहीं निभाओगे तो अकेले रह जाओगे। बाकी बच्चों में से कोई दो सामने आओ और पत्नियों का रोल निभाओ।

(दो बच्चे आगे आते है और शिष्ट-अशिष्ट के साथ-साथ खड़े हो जाते हैं)

टीचर : *(एक अन्य बच्चे को अपने पास बुलाकर)* और तुम जलपरी का रोल करना। ठीक है ?

सभी : ठीक है।

टीचर : और मैं हूँ सूत्रधार।

सभी : कौन-सी धार ?

टीचर : सूत्रधार, यानि जिसके हाथ में रहती है कहानी की लगाम। *(जैसे कुछ याद आया हो)* अरे हाँ! एक ढोल बजाने वाला भी तो चाहिए।

सभी : किसलिए ?

टीचर : भई उससे नाटक में रंग जमता है। थोड़ी मस्ती आती है।

(एक बच्चा आगे आता है)

बच्चा-1 : मैं खाली पीरियड में डेस्क बजा लेता हूँ.

टीचर : वाह-वाह जी। खूब इस्तेमाल करते हो खाली वक़्त का। बच्चू जी प्रिंसिपल ने सुन लिया तो तुम्हारा बाजा बज जाएगा। *(मुस्कुराकर)* चलो ठीक है. आज तुम्हीं हमारे ढोल वाले, ओह सॉरी डेस्क बजाने वाले. ओ.के. ?

सभी : ओ.के.। लेकिन हम बाक़ी लोग क्या बनें ?

सूत्रधार : तुम सभी जंगल के पेड़ हो

बच्चा 6 : ओह तो क्या हमें काटा जाएगा ?

बच्चा 7 : निर्दयी!! क़ातिल!!! हमें तो कटवाओगे और खुद तालियाँ ले जाओगे। *(नारा लगाते हुए)* सूत्रधार मुर्दाबाद!!

बाक़ी सभी : मुर्दाबाद भई मुर्दाबाद।

सातवाँ बच्चा : पेड़ काटने वाला नाटक नहीं खेलेंगे।

बाक़ी सभी : नहीं खेलेंगे नहीं खेलेंगे।

सातवाँ बच्चा : ग्लोबल वार्मिंग!!!

बाक़ी बच्चे : मुर्दाबाद।

टीचर : बड़ा ही तेज़ बच्चा है ये तो।

सातवाँ बच्चा : जागरूक कहिए जनाब।

टीचर : वाह उस्ताद वाह।

बच्चा 7 : वाह-वाह से नहीं बहलूँगा. बड़ा रोल दो.

टीचर : *(समझाते हुए)* देखो इस नाटक को खेलना बहुत ज़रूरी है क्योंकि यह शिष्टाचार का सन्देश देता है. दूसरी बात यह है कि पेड़ों को काटा नहीं जाएगा। तीसरी बात यह है कि अच्छा ऐक्टर कोई भी रोल मिले ईमानदारी से करता है और उसमें जान डाल देता है।

बच्चा 7 : ये बात ? तो शुरु करो नाटक।

(डेस्क बजाने वाला बच्चा मंच पर सबसे आगे दायें कोने में बैठा है और डेस्क बजाने के साथ गाना भी शुरु करता है। नाटक शुरू होता है, बच्चे पेड़ बन जाते हैं और मन-मुताबिक झूमते है। कहानी को देखते हुए अपना रिएक्शन भी देते हैं)

गाना:

ओय-होय वाह-वाह
ढिंचक-ढिंचक शावा-शावा
नाटक देखो ताज़ा-ताज़ा
थोड़ी कथा बताएँगे
बाक़ी डॉयलॉग सुनाएँगे खुल जाएँगे अकल के फाटक
देख हमारा नाटक
भईया देख हमारा नाटक
ओय-होय वाह-वाह
ढिंचक-ढिंचक शावा-शावा
नाटक देखो ताज़ा-ताज़ा

बच्चा-1 : *(अचानक गाना रोककर)* सूत्रधार।

सूत्रधार : मैं हूँ तैयार।

बच्चा-1 : आइये सरकार। भीड़ हो गई है इकट्ठी नाटक तुरंत हो जाए शुरू वरना आएगी जूतों की बौछार और टमाटरों की बहार।

सूत्रधार : *(गाकर)* सुधीजनों पता तो है आपको मामला सारा, एक था लकड़हारा।

(सूत्रधार के ऐसा कहते ही लकड़हारा एक मंच पर आता है और अगली लाईन गाता है)

लकड़हारा-1 : अब तक था उसने तंगी में वक़्त गुज़ारा

(अब उसकी पत्नी आती है और आगे की लाईन गाती है)

पत्नी-1 : थी उसकी किस्मत फूटी छत भी झोंपड़ी की टूटी

(अब लकड़हारा-2 अपनी पत्नी के साथ आता है)

लकड़हारा-2 : उसका एक सगा था भाई

पत्नी-2 : जिसे उसकी घरवाली ब्याहकर लाई

बच्चा-1 : आँय, यह तो उल्टा हो गया। *(सूत्रधार से)* सँभालो गुरू।

सूत्रधार : तो साहिबान आपको पता ही है उस लकड़हारे के साथ क्या हुआ। जंगल में नदी किनारे एक पेड़ पर चढ़कर उसकी डाली काटते-काटते...

पेड़-1 : (बीच में टोककर) फॉरेस्ट ऑफिसर कहाँ मर गया था ?

(एक बच्चा आगे आता है।)

बच्चा-2 : मैं बनूँगा फॉरेस्ट ऑफिसर!!

सूत्रधार : बनना, ज़रूर बनना लेकिन बड़े होकर. इस नाटक में फॉरेस्ट ऑफिसर का रोल नहीं है।

बच्चा-2 : क्यों नहीं है जी ?

सूत्रधार : अरे भई तब पेड़ों की बहुत ज़्यादा कटाई नहीं होती थी और इल्लीगल तो बिल्कुल नहीं। इसलिए फॉरेस्ट ऑफिसर की ज़रूरत नहीं थी.

पेड़-2 : यानि इल्लीगल कटाई के लिए...

(सूत्रधार उसका मुँह बंद करता है और बात को आगे बढ़ाता है)

सूत्रधार : हाँ तो लकड़हारे की कुल्हाड़ी अचानक हाथ से छूटकर नदी में जा गिरी.

(लकड़हारा-1 नदी के किनारे पेड़ से पीठ टिकाकर बैठा रो रहा है. तभी नदी से जलपरी निकलकर आती है)

जलपरी : मुझे पता है आप क्यों रो रहे हो. रोओ मत मैं हूँ न। आई एम जलपरी जलपरी जलपरी-दी। तुम्हारी परेशानी का हल निकालने के लिए।

लकड़हारा-1 : प्लीज़ मेरी प्राब्लम सॉल्व करो, जलपरी दीदी।

जलपरी : डोंट वरी बी हैप्पी।

बच्चा-1 : इसी खुशी में डेस्क बजाऊँ मैं

लकड़हारा-1 : *(लड़के से)* शट अप। अगर मेरे पास कुल्हाड़ी नहीं होगी तो लकड़ी कैसे काटूँगा, लकड़ी बिकेगी नहीं तो बढ़ई डेस्क कैसे बनाएगा डेस्क नहीं होगी तो...

बच्चा-1 : मैं बजाऊँगा क्या ?

जलपरी : *(हाथ में चाँदी की कुल्हाड़ी लेकर उसको देते हुए)* हेयर इज़ यॉर ऐक्स

लकड़हारा-1 : यह मेरी कुल्हाड़ी नहीं है देवी जी. यह तो चाँदी की कुल्हाड़ी है। आपको शायद कुछ गलतफहमी हो गई है।

बच्चा-1 : यह कौन-सा मुँह में चाँदी का चम्मच लेकर पैदा हुआ था, मेरा मतलब हाथ में चाँदी की कुल्हाड़ी लेकर पैदा हुआ था, मेरा मतलब...

लकड़हारा-1 : मुझे मेरी कुल्हाड़ी से

सभी पेड़ : *(समवेत स्वर में)* मिलाओ

लकड़हारा : जल्दी से प्लीज़ लेके

सभी पेड़ : *(समवेत स्वर में)* आओ।

जलपरी : सो स्वीट. कितनी मीठी है

सभी पेड़ : *(समवेत स्वर में)* तुम्हारी बोली

जलपरी : और शिष्टाचार से भरपूर

सभी पेड़ : तुम्हारा व्यवहार

जलपरी : तो यह लो तुम्हारी अपनी कुल्हाड़ी इस बार

(इस बार सोने की कुल्हाड़ी देती है)

लकड़हारा-1 : ओह नो! ईवन दिस इज़ नॉट व्हाट आई वांट!

सारे पेड़ : व्हाट डू यू मीन ?

लकड़हारा : आई मीन, शुक्रिया ओ प्यारी-प्यारी मीन लेकिन *(दुखी होकर)* यह भी मेरी कुल्हाड़ी तो है नहीं। आपकी तो सारी नदी में अच्छी पैठ है। आपका राज चलता है। अगर हो सके तो मुझे मेरी कुल्हाड़ी दिलवा दीजिए न। इन सोने और चाँदी की कुल्हाड़ी से लकड़ी कटती है भला ? और लकड़ी नहीं काटूँगा तो बेचूँगा क्या और कमाऊँगा क्या और खाऊँगा क्या और खिलाऊँगा क्या और...

(उसकी बात खत्म होने तक जलपरी के हाथ में असली कुल्हाड़ी है)

जलपरी : ओ.के. बाबा। तुम तो ऐसे रोने लगे जैसे ग्रेजुएशन करके भी नौकरी न पाने वाले स्टूडेंट्स रोते हैं. कम आन। मेहनती हो, कहीं न कहीं काम मिल ही जाएगा। अच्छा यह लो अपनी ओरीजनल कुल्हाड़ी। मैं तुम्हारी ईमानदारी और बात करने के ढंग से बहुत खुश हूँ। इसलिए यह चाँदी और सोने की कुल्हाड़ी भी तुम्हें देती हूँ।

सारे पेड़ : *(लकड़हारे से)* बोलो बोलो थैंक्यू थैंक्यू

लकड़हारा–1 : हे जलपरी। कहता हूँ मैं खरी–खरी। आप जंगल की शान हो।

सूत्रधार : और इस तरह अपने शिष्ट और ईमानदार व्यवहार से अपनी कुल्हाड़ी के साथ लकड़हारे ने चाँदी और सोने की कुल्हाड़ी भी पाई।

पत्नी–1 : और अमीर होकर उसकी पत्नी हो गई हाई–फाई

सूत्रधार : देखकर यह सब होता रहा हैरान लकड़हारे का भाई। उसे भाई की अमीरी बिल्कुल न भाई

पत्नी–2 : *(अपने पति लकड़हारे–2 से)* देखो जी मैंने सुना है उन्होंने तो पेंटियम टेन वाला कम्प्यूटर भी खरीद लिया जिसमें विंडो टेन इंस्टाल कर लिया है और एक और डुप्लेक्स फ्लैट लेने जा रहे है जिसमें गरम पानी का नल खोलो तो गरम पानी और ठंडे पानी का नल खोलो तो ठंडा पानी, शोफर ड्रिवन कार और तुम यहाँ बेकार। बैठे–बैठे शिकंजी पी रहे हो। कई दिन से लकड़ी काटने भी नहीं गए। कुछ तो काम करो नवाब जी।

लकड़हारा–2 : ऐ मुझे समझाने की ज़रूरत नहीं है। चुप बैठ। समझी! *(सोचते हुए)* अरे मेरा यह भाई तो बिल्कुल बेवकूफ था इसके पास दौलत कहाँ से आई।

पत्नी–2 : दूसरों को बेवकूफ समझने की आदत ने ही तो तुम्हें अकड़ू बना दिया और शिष्टाचार को न अपनाकर सबसे झगड़ा मोल ले लिया, अब जाओ और लकड़ी काटकर गुज़ारा चलाओ।

लकड़हारा–2 : *(अकड़ से)* अच्छा न। जा रा ऊँ। आई बड़ी मुझे अकल सिखाने वाली माँ काली कलकत्ते वाली। आलू का पराँठा तो बना कर दिया नहीं ब्रेकफास्ट में और मुझे बता रही है कि मुझे क्या करना चाहिए।

पत्नी–2 : तुम जैसे बिगड़े नवाब को कोई भी अकल नहीं सिखा सकता।

(इतने में लकड़हारा–2 जंगल में लकड़ी काटने पहुँच गया है और नदी किनारे वाले उसी पेड़ पर चढ़कर लकड़ी काट रहा है। अचानक से उसकी कुल्हाड़ी हाथ से छूटकर नदी में गिर पड़ती है और वह उतरकर पेड़ से पीठ लगाकर बैठते हुए गुस्सा होने लगता है)

लकड़हारा–2 : *(गुस्से में)* पता नहीं आज किसका मुँह देखा था। सुबह लस्सी भी पीने को नहीं मिली और शिकंजी में चीनी कम थी। बिना आलू का पराँठा खाए जंगल में लकड़ी काटने आना पड़ा और घरवाली भी मेरी फालतू की बकवास सुनाने लगती है। कहती है बिटिया की लंबाई, महंगाई की तरह बढ़ रही है। गरीबी का सारा दोष मेरे मत्थे मढ़ रही है। लकड़ी भी कमबख्त आराम से नहीं कटती और अब यह करमजली कुल्हाड़ी नदी में नहाने के बहाने गिर गई।

(जलपरी प्रकट होती है)

जलपरी : अपनी कुल्हाड़ी को इस तरह गालियाँ नहीं निकालते।

लकड़हारा–2 : मैं अपनी कुल्हाड़ी को जैसे मरज़ी गालियाँ निकालूँ मुझे समझाने वाली तू कौन ?

जलपरी : जब आपको पता ही नहीं मैं कौन तो मुझसे तू–तड़ाक से बात क्यों कर रहे हैं। अनजान लोगों के साथ शिष्टाचार से बात करते हैं और जानकार लोगों के साथ तो और भी अच्छे ढँग से।

लकड़हारा–2 : फिर लगी समझाने। पता नहीं आज किसका मुँह देखा था। सुबह लस्सी भी पीने को नहीं मिली और शिकंजी में चीनी कम थी. मनपसंद ब्रेकफास्ट भी नहीं मिला बिना आलू का पराँठा खाए जंगल में लकड़ी काटने आना पड़ा और घरवाली भी मेरी फालतू

की बकवास सुनाने लगती है। कहती है बिटिया की लंबाई, महंगाई की तरह बढ़ रही है। गरीबी का सारा दोष मेरे मत्थे मढ़ रही है। लकड़ी भी कमबख्त आराम से नहीं कटती, यह करमजली कुल्हाड़ी नहाने के बहाने नदी में कूद गई और अब यह आई हैं महारानी।

जलपरी : आई एम ए जलपरी

लकड़हारा-2 : *(ध्यान से जलपरी को देखता है)* अरे वाह! यह तो सच में महारानी निकली! नदी की महारानी! पर मैं कैसे विश्वास करूँ तेरी बात पर? नदी में से मेरी कुल्हाड़ी निकाल के दे तो जानूँ।

जलपरी : *(उसे तीनों कुल्हाड़ियाँ दिखाती है जिनमें से एक सोने की, दूसरी चाँदी की और एक लकड़हारे-2 की ओरिजनल कुल्हाड़ी है)* बोलो इनमें से कौन-सी कुल्हाड़ी तुम्हारी है?

लकड़हारा-2 : *(कुल्हाड़ियों की तरफ झपटकर)* ये तीनों मेरी हैं!

जलपरी : *(गुस्से में)* खबरदार जो इन कुल्हाड़ियों को हाथ भी लगाया तो। अगर तुम ढंग से पेश आते और शिष्टाचार से बात करते तो मैं तुम्हें तीनों कुल्हाड़ियाँ दे देती। लेकिन तुम्हें तो ढंग से बात तक करना नहीं आता। तुम्हारी कौन मदद करेगा? अपने आप ढूँढो अपनी कुल्हाड़ी *(सारी कुल्हाड़ियाँ वापस नदी में फेंक देती है)*। कुछ दिन पहले तुम्हारा भाई आया था। उसकी भी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई थी पर उसने न सिर्फ शिष्टाचार भरे ढंग से बात की बल्कि ईमानदारी भी दिखाई और तीनों कुल्हाड़ियाँ ईनाम में पाईं।

लकड़हारा-2 : *(गलती के एहसास के साथ)* मुझे अब समझ में आया कि कोई भी मुझसे दोस्ती क्यों नहीं करता। मैं समझता था कि सब मुझसे जलते हैं। दरअसल सब मेरे अशिष्ट व्यवहार से परेशान थे। आय एम सॉरी। अब मैं सबके साथ शिष्ट ढंग से पेश आऊँगा। *(उसके ऐसा कहते ही सभी पात्र वाह! वाह! शाबाश! वेरी गुड कहते हुए मंच पर आते हैं और ताली बजाते है. लकड़हारा-2 शिष्ट के पास जाता है)* अब मुझे इस नाटक का मतलब समझ आ गया है. क्लास की शुरुआत में मैं तुमसे कड़वे ढंग से बोल रहा था इसके लिए सॉरी.

शिष्ट : कोई बात नहीं. गलतियाँ हम सब से होती है. बस उन्हें सुधारने की कोशिश हम सबको करनी चाहिए। आओ तुम्हारा अधूरा होमवर्क मैं पूरा करवाऊँगा।

(सूत्रधार गाना गाता है और सभी उसके पीछे गाते हैं)

सूत्रधार : और इस तरह बात पते की सीखी हमने
आज प्यार से सबसे बात करो तो होंगे पूरे
काज देखो भईया बिना बात पर मत होना
नाराज़ प्यार से सारा जग जीतो और सब
पर कर लो राज।

सभी : *(नमस्कार करके स्टेज से बाहर जाने से पहले एक साथ)* गुड बॉय।

संस्मरण

अंकुर के इज्यानंद

अंकुर आचार्य

अपने जीवन में मैं अब तक जितने भी लोगों से मिला हूँ, मैंने देखा है कि उनमें से कुछ ऐसे हैं जिनसे मैं बहुत कम समय के लिए मिला हूँ, लेकिन उन्होंने मेरे मन-मस्तिष्क पर एक अमिट छाप छोड़ी है। इन गिने-चुने लोगों मे से रामकृष्ण संघ के कुछ वरिष्ठ साधु हैं, जिनके दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन्हीं में से एक हैं स्वामी इज्यानंद जी महाराज।

इज्यानंद जी, पूज्य विज्ञानानंद जी (ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के शिष्य) के द्वारा दीक्षित थे। इज्यानंद जी का आविर्भाव 1913 में हुआ था। जब मैंने पहली बार उनके दर्शन लाभ किये तो वे गुवाहाटी रामकृष्ण मिशन आश्रम के अध्यक्ष थे। मुझे पहली बार उनके दर्शन 20 जनवरी 1993 में गुवाहाटी में ही हुए। वहाँ मैं रामकृष्ण आश्रम में कुछ किताबें खरीदने के लिए गया था। वहाँ मैं स्वामी अभेदानन्द द्वारा लिखित पुस्तक *योग मनोविज्ञान* को खरीदना चाह रहा था। आश्रम के एक ब्रह्मचारी, प्रवीर महाराज ने मुझे कार्यालय में बैठे एक साधु से इस पुस्तक के संदर्भ में परामर्श लेने को कहा। वो साधु थे—इज्यानंद जी। इज्यानंद जी ने मुझे उस पुस्तक को खरीदने से मना किया। उन्होंने कहाँ, ''तुम पहले अपना स्वास्थ्य बनाओ पौष्टिक आहार का सेवन करके, *योग मनोविज्ञान* पुस्तक को तुम बाद में खरीदना। अभी चाहो तो स्वामी विवेकानंद की कर्मयोग पुस्तक पढ़ लो।'' मैं उस वक्त 20 साल का था और मुझे साधुओं तथा रामकृष्ण परमहंस के बारे में लगभग कुछ भी मालूम नहीं था। मैंने मन ही मन सोचा कि ये मुझे क्यों सलाह दे रहे हैं, और मैंने *योग मनोविज्ञान* पुस्तक को खरीद लिया। मजे की बात यह है कि अभी तक मैं उस पुस्तक को पढ़ नहीं पाया हूँ, यद्यपि मैंने उस तरह की अन्य पुस्तकें सैकड़ों की तादाद में पढ़ी!

सन् 1993 के अंत में मैं अपने पिता के साथ नई दिल्ली में था। वहीं इज्यानंद जी से मेरी फिर से मुलाकात हुई, दिल्ली के रामकृष्ण मिशन में। मैं गोकुलानंद जी से मिलने बैठा हुआ था। इज्यानंद जी को उनके मित्र गोकुलानंद जी के पास से निकलता देखकर पहली बार मैंने उन्हें प्रणाम किया। इस पर उन्होंने मुझे अपने साथ बैंच पर बिठाया और बातचीत के दौरान मुझे कहा, ''तुम तो हमारे अपने हो, अब से पहले क्यों नहीं आये, अगले बार जब आओगे तो अपने माता-पिता को भी साथ ले आना।'' सन् 1994 में मैं गुवाहाटी लौट गया। तब से 1998 में इज्यानंद जी के महासमाधि लेने तक मुझे उनका दर्शन, स्नेह और आशीर्वाद लगातार मिला। जब भी मैं उनसे मिलने जाता था वे कहते थे कि 'हमारे मित्र आ गये हैं।' और एक बार उनका दर्शन पा लेने पर कम से कम एक सप्ताह मेरा मन आनंद में रहता।

स्वामी इज्यानंद जी के हृदय में माँ शारदा देवी के प्रति खास लगाव था। उनके देहावसान के कुछ महीने पहले उन्होंने अपने एक मित्र साधु को पत्र लिखा और कहाँ कि मुझे माँ शारदा की बहुत याद आ रही है, मैं उनके पास जाना चाहता हूँ। एक बार की बात है जब मैं स्वामी इज्यानंद जी के कार्यालय में बैठा था। कार्यालय में इज्यानंद जी के अलावा केवल मैं ही था। तब उन्होंने मुझसे काफी ऊँचे एवं उत्तेजित स्वर में कहा कि माँ के दर्शन पाने की कोशिश करो, माँ के दर्शन पाने की कोशिश करो। माँ के दर्शन पाओगे तो सड़क पर घूमती उनके अर्धनग्न रूपों की ओर तुम आकर्षित नहीं होगे। और एक बार मैं उन्हें कुछ निर्माली (अर्पित फूल) देना चाहता था। उन्होंने कहा, ''रखो तुम'', तो मैंने कहा कि यह मृत्युंजय शिवपूजा निर्मली है। इस पर वे गरज कर बोले ''हम स्वयं मृत्युंजय हैं। हमने मृत्यु पर विजय पा ली है।''

निर्माली उन्होंने मेरे अनुरोध पर रख ली। कई बार उन्होंने मुझसे कहा कि ''तुम्हारी नींव अच्छी है। केवल अपनी सेहत अच्छी बनाओ।''

एक बार एक वृद्ध श्रद्धालु हाथ जोड़े बड़ी विनम्रता से इज्यानंद जी से कुछ कह रहे थे तो उन्होंने मुस्कराते हुए धीरे से कहा ''मैंने सब देख लिया है। अब मैं समझ गया हूँ कि कौन क्या है!'' इसी तरह रामकृष्ण मन्दिर में रामनाम संकीर्तन के बाद वे भगवान श्री राम के चित्र के सामने हाथ जोड़कर खड़े थे। कुछ दूरी से उन्हें इस तरह लीन देखते हुए मैंने कुछ ऐसा महसूस किया कि शायद इसी को भक्ति कहते हैं।

उनके ब्रह्मलीन होने के कुछ दिन पहले, जब मैं उन्हें देख रहा था तो मुझे एकबारगी ऐसा लगा कि वह इस धरती के नहीं हैं, अपितु कोई दिव्य लोक के पुरुष हैं।

अंतिम बार जब मुझे स्वामी इज्यानंद जी का दर्शन प्राप्त हुआ, तो वे तीन वृद्ध श्रद्धालुओं के साथ बातचीत कर रहे थे। मैं जल्दी में था और अपना धैर्य खो रहा था। तभी मन में स्वामी इज्यानंद जी की सीख याद आयी और मैंने सोचा कि ''वे श्रद्धालु भी मेरे पिता समान हैं।'' इस सोच के आते ही इज्यानंद जी ने पीछे पलटकर मेरी ओर देखा और सौम्य भाव से पूछा ''क्या तुमने प्रसाद ले लिया है?'' मैंने अपना सिर हाँ करके हिलाया। तब उन्होंने अपना मस्तक झुकाकार अपनी अनुमति दी। स्वामी इज्यानंद जी का उनसे बहुत पहले स्वामी प्रेमानन्द जी (श्री रामकृष्ण के प्रत्यक्ष शिष्यों में से एक) की तरह, ठाकुर श्री रामकृष्ण के प्रसाद के प्रति गहरी आस्था थी।

इज्यानंद जी की यह आदत थी कि जब कोई व्यक्ति उनके पास आता और उन्हें प्रणाम करता तो वह उस व्यक्ति की ओर पूरा ध्यान देते थे और हाथ जोड़कर अपना सिर झुका लेते थे, और मुझे लगता है कि वह उस व्यक्ति के लिए मौन प्रार्थना करते थे। मेरे मित्र राकेश का सिर गलती से इज्यानंद जी को चरण स्पर्श करते समय उनके टांग से टकरा गया। जैसा कि उन्होंने मुझे बाद में बताया उन्हें ऐसा लगा मानों वे दूसरी दुनिया में पहुँच गए हो। उन्होंने चल रही बातचीत का एक भी शब्द नहीं सुना। उन्हें परमानन्द की अनुभूति हो रही थी। इस घटना ने मित्र के नजरिए को हमेशा के लिए बदल दिया। इससे पहले उनकी संतों के बारे में अच्छी राय नहीं थी। इस घटना के बाद सिर्फ उनके नजरिए में ही बदलाव नहीं हुआ, उन्होंने तो रामकृष्ण मठ के सहअध्यक्ष स्वामी गहनानंद से दीक्षा भी प्राप्त की। दीक्षा के बाद एक दिन उन्हें एक अदभुत अनुभव हुआ जब ठाकुर श्री रामकृष्ण और श्री माँ शारदा प्रात:काल उनके सपने में आए और उनसे उठकर जप करने के लिए कहा और एक बार उनके स्वप्न में भगवती माँ काली (जो उनके परिवार की इष्ट देवी थी) भी आयी। यह अनुभव काफी जीवन्त और मन को कंपाने वाला था।

मैंने एक बार इज्यानंद जी को यह कहते हुए सुना कि, ''समूचा पूर्वोत्तर मानो ज्वालामुखी के शीर्ष पर बैठा है। माँ कामाख्या की कृपा से ही यह सुरक्षित और अखंड रहता है।'' इज्यानंद जी भक्तों को सलाह देते थे कि उनके जीवन में जब भी कठिन दौर आयें तो उन्हें गुवाहाटी स्थित नीलांचल पहाड़ी जाकर माँ कामाख्या के दर्शन करना चाहिए। इससे उनके जीवन में पुन: ऊर्जा और शान्ति की अनुभूति होगी।

एक बार मैं इज्यानंद जी के समक्ष गया और उन्हें बतलाया कि मेरे एक दोस्त ने कल रात एक देवी का दर्शन पाया। इज्यानंद जी ने ऐसे दिव्य दर्शन की कड़ी निन्दा की और कहा कि यह कमजोर दिमाग का परिणाम है। फिर उन्होंने मुझे अपने विचारों को स्पष्ट करने हेतु स्वामी विवेकानंद का *राजयोग* पढ़ने को कहा। तथापि, उन्होंने अपने संक्षिप्त भाषण के अंत में बड़े मृदु स्वर में यह टिप्पणी की कि यदि वास्तव में किसी व्यक्ति ने देव या देवी का दर्शन पाया हो तो उनका जीवन में हमेशा के लिए एक अच्छा परिवर्तन आ जाएगा।

मैं 1998 मार्च को अपने माता-पिता के साथ एक बार इज्यानंद जी के दर्शन करने गया। जैसे ही हमने उनके ऑफिस कक्ष में प्रवेश किया इज्यानंद जी ने बिना अभिनंदन आदि की औपचारिकता किए कुछ ऐसे विचारों के बारे में बोलना शुरू कर दिया जो मेरे मन में आये थे उस समय, जब मैं आश्रम के लिए घर से निकला था। उन्होंने परम्परागत किसान का उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे परम्परागत किसान कुछ साल सूखे जैसी प्रतिकूल परिस्थितियों के सम्मुख होने पर भी खेती करना नहीं छोड़ता है, उसी प्रकार साधक बार-बार असफल

होने पर भी अपनी अध्यात्मिक चेष्टा तथा साधना कभी नहीं छोड़ता।

एक बार आश्रम जाकर इज्यानंद जी से जब मैं मिलने गया तो मेरे मन में कुछ बुरे विचार आये। उसके तुरन्त पश्चात अकारण ही एक ब्रह्मचारी महाराज आए और उन्होंने मुझे इज्यानंद जी से मिलने से मना किया। मैंने उनकी बात नहीं मानी और आगे बढ़ा, लेकिन एक बार फिर अकारण ही मेरे मन को एक गहरे अज्ञात डर ने जकड़ लिया। तब मैंने और आगे बढ़ने से परहेज किया। इस प्रकार सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की घटनाओं के माध्यम से इज्यानंद जी की शक्ति का बोध हुआ। इससे उनके साथ मेरे सम्पर्क में किसी भी तरह की कोई कमी नहीं आयी। अपितु उनके प्रति मेरी श्रद्धा-भक्ति में वृद्धि हुई।

एक बार जब मैंने इज्यानंद जी को स्वर्गीय दादा जी, जनार्दन आचार्य (जो संत हृदय कहे जाते थे) का फोटो दिखाया, तो उन्होंने मुझे अतीत के बजाय वर्तमान में जीने का और सबसे पहले अपने माता-पिता का सम्मान करने की सलाह दी। इज्यानंद जी ने मुझे रोज सुबह अपने माता-पिता को प्रणाम करने के लिए कहा। वे कहते थे कि संतों को नमन करने के बजाए पहले तुम अपने माता-पिता को नमन करो। एक बार मैंने अपने पिता से झगड़ा किया था और फिर मैं आश्रम गया था। जैसे ही मैंने इज्यानंद जी को प्रणाम किया, उन्होंने पूछा, ''क्या तुम्हारे पिताजी ठीक हैं?'' मैंने बोला—''हाँ''; तब उन्होंने यह दोबारा पूछा। मेरे पास उन्हें सच बताने का साहस नहीं था परंतु उनका कमरा छोड़ने के बाद मैंने पुनर्विचार किया और कमरे में पुन: जाकर उनके सामने अपनी भूल को स्वीकार किया। इस पर उन्होंने मुझे पिताजी से क्षमा मांगने की सलाह दी।

मैंने स्वामी इज्यानंद जी का साप्ताहिक प्रवचन केवल एक बार सुना था। मुझे विशेष रूप से स्मरण है कि स्वामी जी उस अवसर पर कह रहे थे ''अपने अहंकार से छुटकारा पाने के लिए आलस्य का त्याग करो।'' उनका भाव-गर्भित प्रवचन आज भी मेरे हृदय में गूंजता है।

एक बार इज्यानंद जी, पुस्तक बिक्री काउंटर के बाहर बरामदे पर बैठे हुए थे। उन्होंने विरेश्वरानन्द जी महाराज के बारे में बात करना शुरू किया। आस-पास उपस्थित लोगों में मैं भी था। इज्यानंद जी ने कहा किस प्रकार एक बार विरेश्वरानन्द जी ने अपने आस-पास उस समय उपस्थित सभी साधुओं से कहा था कि उनमें से प्रत्येक को श्री रामकृष्ण का एक मन्दिर बनना पड़ेगा। इज्यानंद जी ने आगे कहा कि वह विरेश्वरानन्द जी नहीं थे जिन्होंने ऐसा कहा था, बल्कि ठाकुर श्री रामकृष्ण विरेश्वरानन्द जी के श्री मुख द्वारा यह बात कह रहे थे। फिर मुझे संबोधित करते हुए इज्यानंद जी ने कहा, ''क्या हम जो कह रहे हैं, वह तुम सुन रहे हो, नौजवान?''

कुछ साल पहले 31 मई 2009 को आसाम के गोलपाड़ा जिले में स्थित रोंगजुली में अपने पुराने मित्र तथा गुरूभाई श्री मृदुल सैकिया से मिलने के लिए जाते समय मुझे यह बात याद आई। एक बार मैं इज्यानंद जी के साथ उनके कार्यालय में अकेला था और मैंने उनसे मन की शांति प्राप्त करने के बारे में पूछा था। उन्होंने कहा था कि शांति कोई ऐसी चीज नहीं हैं, जिसे एक दिन में प्राप्त किया जा सकता हो। प्राचीन ऋषि, मुनि, ईश्वर की कृपा, दर्शन एवं मन की शांति प्राप्त करने के लिए अपने सिर के बल खड़े होकर हजारों वर्षों तक कठोर तपस्या किया करते थे। मैंने फिर पूछा ''महाराज, यदि मैं दो तीन वर्ष और जप करूं, तो मुझे मन की शांति मिल जाएगी?'' उन्होंने कहा कि तुम्हें लगातार अभ्यास करते रहना होगा। मैं एक बार इज्यानंद जी के पास एक जिज्ञासा लेकर गया। मैंने पूछा कि क्या ओम् शब्द का उच्चारण महिलाओं के लिए निषेध है। इस प्रश्न पर उन्होंने कहा कतई नहीं। स्त्रियों द्वारा ओम् ना उच्चारण करने की बात मुस्लिम आक्रमण के बाद शास्त्रों में की गई विकार है। असल में युवक और युवतियों दोनों को ओम् शब्द् उच्चारण करने तथा शास्त्र पढ़ने का बराबर हक़ है।

इज्यानंद जी के शरीर त्यागने के बाद मैंने एक विश्वसनीय सूत्र से एक घटना के बारे में सुना। एक बूढ़ी बंगाली विधवा औरत गुवाहाटी के रामकृष्ण मिशन आश्रम के निकट रहती थी। उन्होंने जीवन में अपने कर्तव्यों को पूरा कर लिया था और शाम की आरती में भाग लेने रामकृष्ण मंदिर प्रतिदिन जाया करती थी। एक दिन ऐसा हुआ कि जब वो आरती के

बाद मंदिर से घर जाने को निकली, तब तेज बारिश शुरू हो गई। चूंकि उनके पास छाता नहीं था, अत: उन्होंने प्रभु को मन ही मन पुकार कर वर्षा में भीगकर जाने का निर्णय लिया। जब वह आश्रम के गेट के पास पहुंची तो एक बूढ़े व्यक्ति एक छाता लेकर उनके पास आये और बोले, ''माँ, आइए, मैं आपको घर तक छोड़ आता हूँ।'' जब वृद्ध महिला ने उनका परिचय पूछा तो बूढ़े व्यक्ति ने कहा ''मैं जगदीश हूँ और मैं इसी आश्रम में रहता हूँ'', और उन्होंने उन्हें घर के दरवाजे तक पहुँचा दिया। अँधेरा होने के कारण बूढ़ी औरत उनका चेहरा नहीं देख पाई। दूसरे दिन सुबह बूढ़ी औरत ने आश्रम में जाकर इज्यानंद जी से आश्रम में रहने वाले उनके साथी की प्रशंसा की। तब इज्यानंद जी ने कहा कि इस आश्रम में जगदीश नाम का कोई व्यक्ति तो है नहीं और न ही पहले कभी था। इसके बाद उन्होंने एक क्षण तक सोचा और कहा— '' 'जगदीश' (सारे जगत के प्रिय—ईश्वर) ने स्वयं तुम्हें घर तक छोड़ा था।'' संजय महाराज इज्यानंद जी और उस बूढ़ी औरत के बीच हुई बातचीत के एकमात्र साक्षी हैं। इज्यानंद जी और वह बूढ़ी औरत दोनों अब हमारे बीच नहीं रहे।

मैंने इज्यानंद जी के बारे में कुछ लोगों से सुना है कि वे पुरानी परम्परा के एक सिद्ध परन्तु कठोर संत थे, लेकिन मैंने खुद उन्हें हमेशा बहुत ही कोमल, मुझे समझने वाले, स्वीकार करने वाले स्नेही व्यक्तित्व के रूप में पाया। और वास्तव में वे एक स्नेही संत ही थे। जब मैं उनसे पहली बार मिला तो उन्होंने मुझे अच्छी सेहत बनाने के लिए कहा। उन्होंने कई बार कहा कि ''तुम्हारा नींव अच्छी है। तुम्हें केवल अपनी सेहत पर ध्यान देना चाहिए।'' उनके देहावसान के बाद मैंने कई बार अपने दिल में महसूस किया कि इज्यानंद जी 'कह' रहे हैं कि ''हमें तुम पर गर्व है।'' यह मेरी कल्पना भी हो सकती है या उनका एक संदेश भी हो सकता है।

इन नेक, स्नेही, दिव्य आत्मा, पूज्य शारदा माँ की शाश्वत संतान, जिन्होंने मुझसे कभी मुंह नहीं मोड़ा, उनकी ये स्मृतियाँ आज भी मुझे आशान्वित करती हैं। उनकी याद करने से ही मैं अपने आपको विशुद्ध महसूस करता हूँ। मैं उनके पवित्र चरणों में हार्दिक नमन एवं प्रणाम करता हूँ।

हिंदी टंकण की मेरी यात्रा

कृपाल सिंह

अपने कार्य जीवन में हिंदी में काम करने के प्रति जिज्ञासा और प्रेरणा उत्कंठा मुझे पहली बार 22 जनवरी 2005 में मिली जब मेरी ड्यूटी ताज मानसिंह होटल में लगाई गई थी। वहाँ एक विशेष मीटिंग थी जिसमें संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली के हिंदी में किए गए कामकाज की समीक्षा संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों द्वारा की जानी थी। मुझे कुछ प्रशासनिक दायित्वों के लिए तैनात किया गया था और उस अवसर पर अकादेमी के तत्कालीन सचिव श्री जयंत कस्तुआर, श्री एन.जी.चन्दा, उपसचिव प्रशासन, श्रीमती सुशील जैन जो उस समय हिंदी अधिकारी थीं, व श्रीमती शशी बुद्धिराजा, आशुलिपिक के साथ वहाँ मौजूद थे। संस्कृति मंत्रालय की ओर से संयुक्त सचिव श्री जयकुमार एवं निदेशक (राजभाषा) श्रीमती मोहिनी हिंगोरानी भी वहाँ उपस्थित थीं।

उस दिन पहली बार मुझे महसूस हुआ कि अकादेमी द्वारा किए गए हिन्दी कामकाज की मात्रा काफी अधिक होनी चाहिए थी। अचानक ही मेरी रूचि हिन्दी के प्रति और बढ़ गई क्योंकि हिंदी में काम करना गौरव की बात है। मुझे लगा कि अगर कभी मौका मिला तो मैं कार्यालय में अपना सारा काम हिंदी में ही करने का प्रयास करूंगा। 1 फरवरी 2005 से एक प्राइवेट इंस्टीट्यूट में हिंदी टाइपिंग सीखना शुरू करने से मैंने अपने प्रयासों की शुरुआत कर दी। मैंने सुबह 6 बजे से 7 बजे की कक्षा में जाना शुरू किया ताकि घर के रोजमर्रा के कामों में विघ्न न पड़े और मैं कार्यालय भी उचित समय पर पहुँच सकूं। दोपहर के भोजनावकाश का भी सदुपयोग करते हुए मैंने हिन्दी टंकण का अभ्यास शुरू कर दिया।

कार्यालय में रेलवे कन्सैशन टाइप करना, कार्यक्रम से संबंधित मेलिंग लिस्ट (इन्वीटेशन), टेलीग्राम, फारवर्डिंग लेटर, प्रतिमाह समयोपरि भत्ता बिल, प्रतिमाह मानदेय एवं कार्यक्रम मानदेय बिल का हिंदी/अंग्रेजी मैनुअल टाइपराइटर पर करता रहा। अकादेमी द्वारा मुझे मार्च 2008 में कनिष्ठ लिपिक के पद पर पदोन्नत किया गया। मैंने अपनी अंग्रेजी टाइपिंग की भी रफ्तार बढ़ाई और हिंदी टाइपिंग भी सीखी। मेरे पास दफ्तर में अंग्रेजी का मैनुअल टाइपराइटर था।

फिर एक दिन मुझे भी एक कंप्यूटर दे दिया गया। यह हिंदी में काम करने का सुनहरा अवसर था। इस काम में मुझे जो भी कठिनाई आती राजभाषा विभाग की सहायक निदेशक श्रीमती सुशील जैन और श्री त्रिवेदी उसे दूर करने के लिए मेरा मार्गदर्शन करते और हर सहयोग देते। हिंदी की शब्दावली और सुंदरता बढ़ाने में मुझे मित्रवत सहयोग नाटक विभाग में कार्यरत श्री विजय सिंह से भी मिलता रहा।

हिंदी में टाइपिंग करने पर मिलने वाली वेतन वृद्धि के लिए प्रार्थना पत्र देने पर बताया गया कि इसके लिए गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग में टाइपिंग टेस्ट देना जरूरी था। वहाँ टाइपिंग के तीन विकल्प थे जिसमें मैनुअल, इलेक्ट्रॉनिक व कंप्यूटर पर टाइपिंग शामिल थे। कंप्यूटर पर काम करने के बावजूद अभी उसमें कुछ व्यवधान थे। एक दिन त्रिवेदी जी ने परामर्श दिया कि गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी टाइपिंग के लिए नया फोन्ट बहुत सहज और सरल है, इसके अतिरिक्त वहां कंप्यूटर का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है।

जब मेरी प्रार्थना पर कार्यालय द्वारा मेरा नाम वहाँ भेजा गया तो उस सत्र के लिए सीटें भर चुकी थीं। मैंने सहायक निदेशक (राजभाषा) महोदय से यह भी प्रार्थना की कि किसी कारणवश यदि कोई व्यक्ति प्रशिक्षण के लिए न आ पाए तो मेरा नाम शामिल कर लिया जाए। किंतु ऐसा नहीं हुआ। यह देखकर और भी मुझे अच्छा लगा कि हिंदी में

काम करने पर गौरव का अनुभव करने की इच्छा रखने वाला मैं ही अकेला व्यक्ति नहीं हूँ।

अगले सत्र में मंत्रालय द्वारा मेरा नाम माह 1 नवम्बर से दिसंबर 2012 (दो माह) के प्रशिक्षण के लिए शामिल कर लिया गया। प्रशिक्षण शुरू होने से पहले इस बार घरेलू हालात मेरे रास्ते की रूकावट बन गए। दिनांक 30.10.2012 को अचानक मेरी पत्नी की तबीयत खराब हो गयी उन्हें रात को ही आपातकालीन स्थिति में दीपक मैमोरियल अस्पताल, कड़कड़डूमा में भर्ती कराना पड़ा। मेरी जीवन संगिनी ने सदैव हर परिस्थिति में मेरा साथ दिया है, अत: उसी तरह उन्होंने इस बार भी अपना पूरा सहयोग दिया और जल्द ही ठीक हो गई। कार्यालय के अधिकारियों के सहयोग से भी मेरा हिंदी टंकण प्रशिक्षण क्षण-प्रतिक्षण बिना रूके लगातार चलता ही जा रहा था। मेरा सीखने का प्रशिक्षण का समय दोपहर दो बजे से शाम पाँच बजे था। मैंने एक भी दिन की छुट्टी किए बगैर पूरी लगन से हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण प्राप्त किया और कार्यालय में भी टंकण का अभ्यास जारी रखा क्योंकि सीखने का अपना आनंद है। 28-12-2012 को मानक भवन में मैंने परीक्षा दी और दिनांक 18.01.2013 को परीक्षाफल की घोषणा की गई जिसमें मैंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार मेरी कई वर्षों पहले की कल्पना साकार हो गई, मेरी सफलता पर न केवल में और मेरा परिवार अपितु अकादेमी के मेरे साथी, सहयोगी एवं अधिकारीगण भी अतिप्रसन्न हुए। अपने इस सपने को सच करने में मझे अकादेमी कार्यकारी सचिव, प्रशासन अनुभाग, राजभाषा अनुभाग संगीत नाटक अकादेमी का जो सहयोग व मार्गदर्शन मिला उसके लिए मैं उनका धन्यवाद करता हूँ। मैं पूरे दिल से अपने प्रशिक्षक श्री राम सकल सिंह, सहायक निदेशक, मानक भवन का भी धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मुझे प्रशिक्षण के दौरान भरपूर सहयोग दिया।

लघुकथा

जिम्मेदारी

शशी बुद्धिराजा

नजिया आन्ध्रप्रदेश के एक छोटे से गांव की रहने वाली है। उसके पिताजी हैदराबाद में एक सरकारी कार्यालय में कार्यरत हैं और उसकी माताजी दिल्ली में आन्ध्र प्रदेश के एक सरकारी कार्यालय में नौकरी करती है। नजिया की माँ की शादी हुए 25 बरस हो गये हैं इतने बरस बीत जाने पर भी वो अपनी गृहस्थी एक जगह नहीं बना पाये हैं। मंहगाई के इस युग में दोनों में से एक की तनख्वाह इतनी नहीं है कि वो एक साथ एक जगह रह सकें। अपना गुजर बसर एक छत के नीचे रह कर सके। लिहाजा अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए, बच्चों की पढ़ाई, माँ बाप की देखभाल और घर बनाना आदि जो आवश्यक जरूरते हैं उन्हें निभाते-निभाते वो आज तलक मन मसोस कर रह रहे हैं। एक साथ रहने की दिली तमन्ना होने के बावजूद एक साथ नहीं रह पाए। बच्चे आजतक अपने माता पिता दोनों के संग एक साथ नहीं रह पाए। अक्सर बच्चे अपनी मां के साथ रहते हैं। गांव में बच्चों के दादा-दादी, नाना-नानी और मामा व मौसी सब हैं, अन्य रिश्तेदार भी है पर मां नहीं होती। नौकरी इतनी बड़ी नहीं है तनख्वाह ही ज्यादा नहीं है इसलिए ज्यादा छुट्टी नहीं ली जा सकती। दोनों स्थानों की दूरी इतनी है कि उनके लिए एक साथ रह पाना कठिन है।

नजिया ने बचपन में तो अपनी पढ़ाई की वजह से ज्यादातर समय दिल्ली में ही अपनी मां के साथ गुजारा है। अब उसने दसवीं की परीक्षा पास कर ली है। उसे और पढ़ने की इज़ाजत नहीं मिली। इसलिए उस पर घर के काम की जिम्मेदारी दे दी गई है। उधर दादा दादी की देखभाल की जिम्मेदारी भी है जो बुढ़ापे की वजह से ज्यादातर बीमार रहते हैं। उनका भी कभी दिल्ली और कभी हैदराबाद आना जाना लगा रहता है। इस सिलसिले में अब नजिया को इधर से उधर होना पड़ता है। नजिया अब 25 वर्ष की हो गई है। नजिया शादी के लायक है। इसलिए उसकी माता ने उसे सिलाई-कढ़ाई और ब्यूटी कल्चर जैसी संस्थाओं में प्रशिक्षण दिलवाया है। अब वो हर काम में माहिर हो गयी है। सिलाई-कढ़ाई में तो इतनी निपुण हो चुकी है कि बड़े-बड़े टेलर भी उसके आगे पानी भरते है। उसके पिता चाहते है कि उसकी शादी अपनी बिरादरी में हो इसलिए उसे अब हैदराबाद ही रहना होगा।

घर से कार्यालय और कार्यालय से घर यह नित्य प्रति की प्रक्रिया में शामिल है। जिसे हर कर्मचारी को निभाना पड़ता है। हर व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरूष प्रात: काल अपने घर से इस सोच के साथ निकलता है कि उसे कभी न कभी तो अपनी जिन्दगी को बेहतर बनाने का अवसर मिलेगा उसे भी अपनी सोच के मुताबिक कामयाबी हासिल होगी। मगर कौन जानता है कि इस घटती उम्र में जितना जी लिया उसे बेहतर समझने में ही भलाई है और आने वाले कल को अपने जीवन की यादगार समझें तभी आप अपने खुद को जीवन से ऊपर रख सकते हैं। यही किया उस युवती नजिया ने। आज वो छोटे गांव में ही रह कर भी बहुत बड़ी बुटीक की मालकिन बन बैठी है। घर तो घर पूरे गांव के लोग उसके आगे पीछे घूमते है। उससे मिन्नते करते हैं कि वो उनकी बेटी को भी सिलाई-कढ़ाई सिखा दे। एक संस्था ने तो उसे एक सिलाई केन्द्र भी खोल दिया है जिसका नाम रखा गया है 'नजिया सिलाई केन्द्र'। नजिया केन्द्र में, गांव तथा गांव के आसपास की लड़कियों को सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण बड़ी मेहनत व लगन से देती है। आज उसके पास अपना घर है। साथ ही साथ छोटे भाई बहिनों की पढ़ाई लिखाई की जिम्मेदारी भी खुद उठाई है। उन्हें भी अपने पैरों पर खड़ा होने की शिक्षा दी है ताकि भविष्य में वो अपनी जिम्मेदारी खुद उठा सके तथा औरों की मदद भी कर सके।

बुजुर्गों ने ठीक ही कहा है हम रहें या न रहे हमारे काम बोलेंगे और बरबस हमारी याद भी दिलायेंगे।

आत्मकथ्य

अभागे का भाग

हरसिंह मनराल

पूरा बचपन घोर गरीबी, लाचारी से समझौता कर जब भाई साहब स्कूल पढ़ने गये तो खूब मन लगाकर पढ़ाई करते थे। मैं उनसे तीन क्लास छोटा था। प्राइमरी पाठशाला से लेकर मिडिल की सातवीं कक्षा तक उन्होंने आठ-दस गाँव के किसी भी विद्यार्थी को कभी अपने से अव्वल नही आने दिया। पड़ोसी गाँव बमोड़ा का मात्र एक क्लास फैलो इंटैलीजैन्ट था किन्तु वह भी उनसे टक्कर नही ले पाता था, उसके दादाजी ने एक दिन उससे सवाल पूछा- कि 'नाती' पढ़ाई में तो तेरे को भी तेज ही बताते है पर हर वर्ष वही लड़का ही प्रथम कैसे आता है, ऐसा क्यों ? तो उसने अपने दादा को कहा कि मैं घर का भी काम करता हूँ और वह नहीं, यही कारण है। भाई साहब की पढ़ाई की चर्चा अब पड़ोस के आठ दस गाँवो तक चला करती, अब आये दिन स्कूलों के मास्टरजी व हैडमास्टर जी हमारे घर पर आने लगे थे यह कहने के लिए कि आपका बेटा पढ़ने में बहुत तेज दिमाग रखता है, इस लिए आप इसकी पढ़ाई मत रोकियेगा हमसे जो सहायता बनेगी हम इस बच्चे के लिए करेंगे क्योंकि वे भी इस बात को समझते थे कि बहुत गरीब किसान का बेटा है और वह इसे आठवीं कक्षा से आगे नही पढ़ा पायेगा। उस फिक्र ने पिताजी के मन में एक ऐसा हर्ष व संतोष पैदा किया जिससे उन्हें एक दिन अपने गरीबी से लड़ने की मानो जुगत सी मिल गई हो, सच कहूँ तो कितनी दुखदाई होती है—गरीबी। इस बात का एहसास एक संपन्न जीवन जीने वाला व्यक्ति तो मात्र कहानी पढ़ कर ही कर सकता है, किन्तु आप बीती का दर्द फिर भी नही जान पाता है।

किन्तु यह हर्ष व खुशी को तो मात्र एक सपना साबित होना था कि अभागे के भाग्य ने करवट बदलनी शुरु कर दी थी। आठवीं कक्षा की अर्धवार्षिक परीक्षा हो चुकी थी मास्टरजी ब्लैक बोर्ड पर समझा रहे थे, भाईसाहब पीछे बैठे थे उन्हें ब्लैक बोर्ड कुछ साफ नही दिखाई दे रहा था। उसे गौर से देखने पर मास्टरजी ने भाई साहब की हरकतों के कारण उन्हें खड़ा करके, ब्लैक बोर्ड पर लिखे को पूछा तो भाई साहब को ब्लैक बोर्ड पर चाक का लिखा कुछ धुंधला दिखाई दे रहा था, वे चुपचाप खड़े रहे, तब तक मास्टर जी, पीछे जाकर भाई साहब को थप्पड का दंड दे चुके थे, यह कहते हुये कि पूरे स्कूल में सबसे होशियार हो कर भी हिन्दी समझ नही आ रही है। इस बात का एहसास मास्टरजी को तब हुआ जब भाई साहब ने कहा कि सर, मुझे दूर से कुछ ठीक से दिखाई नही दे रहा था। दूसरे दिन मास्टरजी ने पिताजी को स्कूल बुलाया। दूसरे दिन पिताजी स्कूल गये मास्टरजी ने भाई साहब की आँखों का इलाज करने को कहा। पिताजी उनके इलाज के लिए प्रारंभिक दौर में गाँव-गाँव झाड़ फूंक जैसे जाइंडिस, अतकपाली, मुक्त इलाज से लेकर फिर थोड़ा पास-थोड़ा दूर के सरकारी दवाखानों में जाँच व इलाज हेतु प्रयासरत थे। किन्तु वह रोग इतना बड़ा था कि वहाँ के अस्पतालों के संसाधन व डाक्टरों की पकड़ से बहुत दूर था और शहर के बड़े संसाधनपूर्ण अस्पतालों में इलाज के लिए दूर दराज के गाँवो से पहुंचना गरीब ग्राम वासियों के लिए जैसे अपना देश हो करके भी विदेश लगने लगता था।

किसी प्रकार घोर गरीबी में भी अपने पास सुरक्षित, पूर्वजों के चाँदी के कुछ गहने जैसे मां के गले का सवा किलो का चाँदी का सुत व सवा किलो की जंजीर ने आज हार न मानने और अभागे के भाग से अपने कर्मरथ पर भागते रहने को जैसे विवश कर दिया हो। शहर में चाचाजी की नौकरी के सहयोग से राजधानी दिल्ली के सर्व सम्पन्न अस्पताल अ.भा.आ.वि. संस्थान में दिखाना संभव हो पाया। जिसके द्वारा वहाँ के आज के युग की संसाधन पूर्ण मशीनों के द्वारा डॉक्टरों की कई कोशिशों के बाद यह पता चल पाया कि बचपन में लगी सर की चोट अब एक ट्यूमर का रूप ले चुकी थी और उसने आँखो की रोशनी पर धीरे-धीरे प्रभाव

डालना शुरु कर दिया था। यदि तुरन्त ही ऑप्रेशन नहीं कराया गया तो आँखों की रोशनी जा सकती है। भाई साहब को छठी कक्षा मैं लुका-छिपी के खेल खेलते समय दिमाग पर जो गुम चोट लगी थी, तब भाई साहब ने अपना सिर रुमाल से दो दिन तक बाँधे रखा ओर अपना दर्द अपनों से छुपाया और ये बात नही बताई और न ही इस बात से अब तक कोई परेशानी हुई थी। अब मात्र आपरेशन ही जीवन बचाने का एक जरिया बचा था जिसकी सफलता 5% थी उसके लिए भी धन न था दिल्ली में ऑप्रेशन होने तथा और पैसे शहर में भिजवाने के लिए विगत तीन वर्षो से अपनी खेती कर जमीन को आबाद कर रहे बैलों को बेचने का पिताजी द्वारा खत मिला। इससे पहले कि हम ग्राहक खोजते, हर रोज ग्राहक आने लगे, कुछ ग्राहक गरीब की इस मजबूरी के अवसर का लाभ उठाकर लोभ में थे। उस दिन माँ ने बैलों का, मेरा, व भाई साहब का दर्द समझ कर अपने भाई को संदेश देकर बुलाया और कहा कि तू अभी बैलों की रकम लेकर दिल्ली, पैसे अपने जीजाजी को देकर आ और ये बैल भी लेजा जब संतान ही न रहेगी तो खेती किसके लिए करनी है। उसमें भी यह समस्या थी कि वह बैल सरकार द्वारा 2500 रुपये कर्जे से लिए गये। उनको बेचने का दु:ख मुझे बहुत था क्योंकि वे दोनों बैल बहुत सीधे थे मैं उनको घास पानी देने के अलावा उनको ठौर से खोलता बांधता भी था, फिर उनके दोनो कानों में कर्णफूल थे जो उनके सरकारी ऋण का प्रमाण थे। और ये बैल मैं खुद अपने ननिहाल तक छोडकर आया। रास्ते में मामाजी मेरी मायूसी देखकर मुझे समझाने लगे कि मैं ये बैल खरीद कर नही ले जा रहा हूँ, मैं तो कुछ दिनों के लिए इनकी देख-रेख के लिए ले जा रहा हूँ किन्तु तब मैं सब जानता था।

अब दिल्ली से आपरेशन के बाद की रिपोर्ट की चिट्ठी आने की बेसब्री थी, एक पल के लिए वह खुशी की खबर भी आई कि भाईसाहब का ऑपरेशन ठीक-ठाक हो गया है उन दिनों अ.भा.आ.वि.संस्थान के न्यूरोलॉजी विभाग में यह केस डाक्टरों के लिए एक चर्चित विषय रहा। इस हिदायत के साथ कि सात वर्ष तक सर संबधी कार्य बिलकुल वर्जित है, जो हिदायत हमारे उन हालातों के तहत एक उम्रकैद की सज़ा समान थी। दिमाग का ऑप्रेशन हो चुका था आज ही के दिन से उनकी 14 वर्ष की उम्र से शरीर के समस्त हार्मोन्स ने काम करना बंद कर दिया था इस बात की जानकारी डॉक्टरों को थी या नही, किन्तु होना तो वही था जो अभागे के भाग में लिखा था। गाँव के कष्टभरे पथ को कुछ समय तक त्यागने के विचार से संबंधियों के सहयोग से शहर में ही रुकने का फैसला लेना पिता के लिए आसान न था। फिर भी यह फैसला लिया गया। माँ की ममता ने जीवन में पहली बार 6 महीने से अपने लाल का मुखड़ा न देखा था जिसकी वजह से एक बार गाँव आने को कहा। घोर संकट के उन क्षणों में भाई साहब भी यह भूल गये थे कि मुझे भी मां से नहीं मिले 6 माह हो गये इसलिए ऑप्रेशन के तीन माह बाद भाई साहब घर गये, माँ अपने लाल को देख बहुत खुश हुई आज मां की खुशी ने मां के दिल को गद्‌गद् कर दिया, किन्तु अभागे के अगले भाग का आगमन हो चुका था अभी ऑपरेशन करे 6 महीने भी नहीं हुए थे, तो माथे पर एक हल्की फुंसी उभर आई जो मुँह धोते समय बहुत पीड़ा देती थी। भाई साहब ने उस फुंसी को तोड़कर बाहर निकालने की कोशिश की। दरअसल यह फुंसी नही थी यह तो 6 इंच लंबी प्लास्टिक की वह तार थी जिससे भाई साहब का दिमाग का भाग सिला गया था। न जाने उस तार ने अंदर ही गल जाना था या डॉक्टरों द्वारा उसे बाहर निकाला जाना था, ऐसे में जब अपना ही भाग्य साथ न दे तो दोषी किसको ठहराते? अब हमारे पास भाई साहब के इलाज के लिए कुछ भी न बचा था, न ही गाँव में किसी से इस धन की आवश्यकता पूर्ति की उम्मीद बची। क्योंकि तब कोई रोग न हुआ करता था जिस कारण सभी ग्रामवासी रोगमुक्त जीवन जीते। तब मात्र दुर्घटनायें ही एक रोग हुआ करती, अन्य रोगों को उभरते न कभी देखा न सुना। तब मैं यह बात नही जानता था कि जिसका कोई नही होता है उसका ईश्वर होता है यह बात मुझे बड़े होकर बाद में पता चली, किन्तु वह तो हर के साथ हरदम रहता था,फिर मेरी तो राशि भी उनसे मिलती थी किसी प्रकार पड़ोस के गाँवों के कुछ संपन्न व्यक्तियों को अपनी बची जमीन का वास्ता देकर भाई साहब को फिर से दिल्ली लाया गया और मात्र सिलाई का तार निकालने के लिए 1983 में दुबारा ऑप्रेशन किया गया जो पहले के मुकाबले हल्का था किन्तु उसके बाद अभागे के जीवन में अपाहिजता, पराधीनता, व मनोरोगी का रोग जुड़ गया था। आखिर किसी प्रकार भाई

साहब ने आठवीं कक्षा की पढ़ाई मात्र चार माह ही करने पर भी बोर्ड की परीक्षा में प्रथम श्रेणी पास किया। अब पिताजी को गरीबी और विपदा की दौड़ भाग ने साँस का रोगी बना दिया था, उस समय उस रोग का इलाज ग्रामीण गरीबों के लिए नहीं था, यही कारण था पिताजी कहते थे बेटा कभी ऐसे ही प्राण जायेंगे। मैं तब अपने परिवार के हालात अच्छी प्रकार समझ चुका था इस कारण मैं अपनी सातवीं कक्षा की पढ़ाई छोड़कर शहर चला आया। पहली नौकरी यमुनापार शक्करपुर में एक परचून की दुकान में 150 रुपये महीने में खाना, रहना, कपड़ा, लत्ता में शुरू की जिसमे 100रु. का मनीआर्डर अपने घर के लिए हर माह करता और बाकी बचे 50रु. को एक वर्ष बाद घर जाने की तैयारी के लिए जमा करता था अब मैं शहरी नौकरशाह जो हो गया था, फिर अपने घर-परिवार के लिए नये वस्त्र और मिठाईयाँ ले जाने की उमंग मन में बिठा कर रखता था। मैंने शहर आकर दिन रात खूब मेहनत कर अपने माता पिता की दशा को सुधारने की कोशिश की जिसके फल स्वरूप ईश्वर ने मुझ जैसे गरीब, गंवार, अनपढ़ के लिए एक सरकारी सेवा का प्रसाद जैसे छुपा कर रखा हुआ था जो मेरे भाग की ओर संकेत करता चला आया कि अब से तेरे दु:ख सुख में मैं भी तेरे साथ हूँ। किन्तु अभागे का भाग्य, पिताजी के रोग को अधिक गहराता गया, उनको पास के गाँव में सरकारी अस्पताल में 'डोली' से ले जाया गया और तीन दिन बाद जब उनके प्राण पखेरु उड़ गये तो उसी 'डोली' से उन्हें घर लाया गया, तब दूर दराज के गाँव से शहर में चिट्ठियाँ महीने भर में पहुंचा करती थी इस कारण मेरे लिए एक सप्ताह पहले ही गाँव से टैलीग्राम किया गया कि पिताजी सीरियस हैं जल्दी घर आना। सप्ताह दिन में टैलीग्राम मेरे कर्मस्थल में पहुँचा, दूसरे दिन मैं गाँव चला गया किन्तु तब तक पिताजी के देहान्त को चार दिन हो चुके थे। मेरे भाग में पिता को अग्नि देना भी नसीब न हुआ, भाई साहब को जनेऊ दिया जा चुका था जिससे वे पौराणिक धारणाओं व संस्कारों के तहत पिताजी के क्रियाकर्म में संपूर्ण कर्तव्य निभा सकें। एक गरीब घर से पिता का साया बचपन में ही छिन जाने से परिवार की क्या मनोदशा होती है इस बात को मनुष्य बखूबी समझ सकता है।

अपने घर परिवार की खुशी के लिए मैने विवाह बंधन स्वीकारा। अब बहुत कुछ पहले से ठीक चल रहा था, सबसे पहले घर में मेरी पुत्री ने जन्म लिया दो साल बाद एक पुत्र ने, मां बहुत खुश थी कि अब हमारा घर परिवार भी गाँव के अन्य परिवारों के जैसा भरा-पूरा संपन्न लग रहा था। अब मां को भी सुख के दिन देखने की अभिलाषा दिनों दिन बढ़ती ही जा रही थी। मैं मन में यह सोच रहा था कि अब तक का जीवन दु:ख के बादलों की छांव तले काटने के बाद ईश्वर ने हमारे जीवन में कुछ तो खुशियाँ लौटाई। किन्तु एक दिन मां किसी रिश्तेदार की खैर खबर लेने दूर एक दिन पैदल पहाड़ी मार्ग के निकट ही बहती राम गंगा नदी घुटनों भर पार करके चंगी भली गई और दूसरे दिन वापसी में अपने पाँव लौट ना सकी। रास्ते में पैरालाईज के रोग ने उनके आधे धड़ को सुन्न कर दिया जिस कारण वह न तो साफ-साफ बोल पाती थी और न ही अपने पाँव खड़ी हो पातीं। गाँव तक खबर पहुंचने में ही साँझ हो गई, पूरे गाँव के लोग मां को जंगल व नदी के रास्ते टार्च की रौशनी से रातों-रात घर लेकर आये। पाँच महीने तक माँ का इलाज गाँव में ही किया क्योंकि वह चल नही पाती और संपन्न परिवार की भाँति गाड़ी बुक करके शहर लाना तब हमारी पंहुच से दूर था। आखिर एक दिन घर से फिर चिट्ठी आई जो मां ने ही लिखवाई थी कि अब मैं जाने वाली हूँ इसलिए अंतिम भेट में अपने दोनो लालों को देखना चाहती हूँ। मैं घर गया तब तक पास के छोटे शहर से भाई साहब भी घर पंहुचे में जब घर पहुंचा तो माँ ने मुझे लटकती आवाज में कहा बेटा तूने मेरे लिए बहुत कुछ किया अब तू मेरे मरने पर अधिक खर्चा मत करना, क्योंकि अब बड़े के जीवन की जिम्मेदारी भी तेरी ही है। मेरी तेरहवीं पर अगर गाँव नही भी खिला सकेगा तो दो-दो पूरी ही बाँट देना। मां ने अगले कर्तव्य से अवगत कराया और उसी रात मां ने मेरे सामने आखरी साँस 11 दिसम्बर 1999 को ली। भाई साहब का नाम पूरन था इस कारण मां बापू भाई साहब को प्यार से 'पूरा' कहकर पुकारती थी, भाई साहब के लिए मां के वे अंतिम बोल आज भी सुनाई देते हैं कि- 'पूरा' तू अधूरा ही रह गया रे ये तुझे दो रोटी जिस हाल में भी देंगे तुझे स्वीकारनी होंगी।

अब हालातों से समझौता कर के मुझे अपने परिवार सहित गाँव की घर खेती छोड़कर शहर आना पड़ा। भैंस बूढ़ी हो गई थी जिस कारण मात्र कसाई ही उसका आखरी खरीददार

रह गया था। आखिरकार बैलों की जोड़ी के दस हजार रुपये के बैल छः हजार छः सौ रुपये में अपने ही ग्राम के तराई भावर में प्रवासी किसान को बेच के आया। मेरे जीवन में चार जोड़ी बैलों में से वह जोड़ी सबसे सुन्दर थी रंग रूप में एक जैसा श्वेत रंग, चाल-ढाल और व्यवहार में भी समानता। मैं हर वर्ष उनकी खबर पूछता रहता, एक दशक बाद गाँव में जब वह किसान मुझसे मिला तो कहने लगा हरी मेरे पास बैल तेरे ही वाले हैं रे, पर अब उनसे खेती नही होती इस लिए उनसे थोड़ा बहुत अपने ही घर खेती का माल ढुलाई का काम करवा लेता हूँ। मैं उनको देखने भी गया मेरी आँखे भर आईं वे मुझे पहचान न पाये या मुझसे नाराज थे मैं नही जानता। मैं सोच रहा था कि इनकी भी किस्मत देखो, बूढ़े हो गये पर काम से आराम नही, वे जैसे कह रहे हों कि बूढ़े हो गये तो क्या, पेट के लिए तो चाहिए, जब इंसान को बैठे-बैठे नही मिलता तो हम तो जानवर हैं।

करीब एक दशक से भाई साहब मेरे ही साथ रहते किन्तु उनके मन की पीड़ा को मैं अच्छी भली भाँति जानता था वह अपने मन में हमेशा एक ही सोच में डुबोये रखते थे कि- मेरे पिता के दो लड़के, उसमें मैं बड़ा, छोटे के बीबी, बच्चे, सरकारी नौकरी, शहर में अपना घर, कई यार और रिश्तेदार, अपनी मर्जी का मालिक, और पैतृक घर, खेती का भी वह पूर्ण अधिकारी, आखिर मेरे भाग्य में शून्य क्यों? इस निरंतर सोच ने उन्हें मानसिक रोगी बना दिया जिस कारण वे महीने में दो चार दिन तक मानसिक उत्पीड़ना का शिकार होते थे। उन दिनों हमें भाई साहब का ज्यादा ख्याल रखना पड़ता था। और उन दिनों उनको घर से बाहर जाने की सख्त मनाही थी। बाकी दिनों में वे कॉलोनी में सुबह शाम दोनों पहर घूमने जाते थे। कॉलोनी वाले उनके बारे में जानते थे इसलिए उनको कोई परेशान नही करता था। वे कभी-कभी ज्ञान-ध्यान की गंभीर बातें भी करते थे ऐसा लोग भी कहते और हम भी जानते थे जिससे कभी-कभी हमें इस बात का संदेह सा होता था कि वे कभी कभी हमें जानबूझ कर परेशान तो नहीं करते हैं?

उनको ऐसा ना लगे कि मैं एक बोझिल जीवन जी रहा हूँ, ऐसा सोच कर मैंने उनके स्वरोजगार हेतु भरसक प्रयास किये जैसे- अ.भा.आ.वि. संस्थान में भाई साहब के इलाज में आई खराबी से उन्हें वहीं कोई रोजगार दिलाये जाने की दरख्वास्त दी कि जिससे वे अपना जीविकोपार्जन भी कर सकें व अपना इलाज भी, ततकालीन प्रशासनिक अधिकारी चंदनसिंह मनराल हमारे गाँव के निवासी थे इस कारण मुझे उम्मीद थी कि यह कार्य अवश्य हो जायेगा किन्तु वह कार्य भी नही हो सका।

फिर मैं तत्कालीन सरकार के वरिष्ठ अध्यक्ष हरीश रावत जी के पास शाहजहाँ रोड जा कर प्रधान मंत्री राहत कोश से भाई साहब के जीविकोपार्जन हेतु सहायता के लिए गया वे मेरे ननिहाल के भी हुये और रिश्ते में मेरे मामा भी। उन्होंने भाई साहब के लिए पचास हजार रु. की राशि तत्कालीन प्रधान मंत्री नरसिंह राव जी के कार्यालय में भेजी कुछ दिनों बाद प्रधान मंत्री के निजी सचिव श्री राजीव जी का पत्र आया जिसमें खर्चा और इलाज की प्रति अ.भा.आ.वि. संस्थान से प्रमाणित करने को कहा सारे कार्य किये अब मुझे लग रहा था कि यह कार्य तो हो ही जायेगा परन्तु वह कार्य भी होते होते रह गया।

अभागे के भाग्य का मुझे तब पता चला जब उनके लिए एक और प्रयास करते उनकी 50% अपाहिजता की पैन्शन कई अथक प्रयास व लम्बे समय के इंतजार के बाद वर्ष भर की एकमुश्त पैंन्शन तब आई जब उनको लापता हुये एक माह से भी अधिक हो गया था कुछ दिन तक हालात बताते मैने उनकी पैंन्शन रोके रखी आखिर सरकारी पैसे कब तब रोकते 6 मई 2011 को शाम 6 बजे वे घूमने के लिए गये, फिर लौट कर नही आये। हमारी सरकारी और निजी खोज के अथक प्रयास के बाद भी आज तलक उनका कुछ पता नही चला अब हर छः माह में थाने से भाईसाहब के घर लौटने की खबर पूछने के लिए फोन आता है और तीन माह में चौकी के दीवान जी आते हैं हम प्रयासरत हैं आप भी प्रयास करिये कहकर चले जाते हैं। काश! ये पैंशन कुछ पहले आई होती, तो शायद उनके पैरों में बेड़ियाँ बंध जातीं, उन्हें स्वावलम्बी होने का बोध हो जाता और वह हमें यूं छोड़कर न जाते।

विविध

जैसी करनी वैसी भरनी

विनोद बाला अरोड़ा

जीवन का मुख्य लक्षण कर्म है। अपने जीवन में मनुष्य कोई न कोई अच्छे और बुरे कर्म करता रहता है। विना कर्म के कोई एक पल भी जीवित नही रह सकता। जैसा हम काम करेंगे हमें वैसा ही फल मिलेगा। हमारे किये हुए कामों का अच्छा बुरा नतीजा हमें अवश्य मिलेगा। देखा जाये तो यह सब कुछ हमारे तुम्हारे हाथ में है। इन्सान के पास अपने को अच्छा और अपने को ही बुरा बनाने की ताकत है। भगवान को हमारे कार्य जो हम दिन भर करते है कुछ लेना देना नहीं है इस लिए हमें कुछ बातें जीवन में सदा याद रखनी चाहिए वे यह है कि प्रभु हमें कभी भी सज़ा नही देता, वह तो कर्म का फल देने वाला तराजू है वह तो बस फैसला करता है सुख और दु:ख हमारे हाथ में है, हम बटन को खुद ही चलाते हैं और खुद ही बन्द करते है। व्यक्ति को अपनी बुद्धि का सहारा लेकर ही प्रत्येक कार्य करना चाहिए ईश्वर के द्वार पर जाकर अपनी अन्तरआत्मा की ओर झांकें और कर्म के गुण दोषों को देखें और फिर उसी के अनुसार ही कार्य करें। हमें कर्म ऐसा करना चाहिए कि अपने आगे ही हमारा सिर अपने आप झुकने लगे। क्योंकि उस किये हुये कर्म के हम ही गवाह हम ही गुनहगार और हम ही न्यायाधीश होते है।

गीता मे भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कर्म की गति बड़ी गहरी है कारण कि हमारा जीवन अटपटा है। कुछ लोग सुखी–और कुछ लोग दु:खी है। मनुष्य यह देख कर हैरान हो जाता है कि जो लोग लुच्चे, लफंगे रिश्वतखोर, काला धन्धा करते हैं, वह तो फल रहे हैं उनके पास मोटर–कारें, नौकर–चाकर और लाखों रुपये होते हैं जबकि साफ–सुथरा जीवन जीने वाला व्यक्ति, ईश्वर को मानने वाला व्यक्ति अधिक दु:खी है। इसका कारण क्या है? जब उन बातों को हम संसार में खुद देखते है तब हमारी ईश्वर से श्रद्धा भावना उठ जाती है। तब मनुष्य यह सोचता है कि संसार को चलाने का कोई कायदा–कानून है या नहीं तब हमें ऐसा महसूस होता है कि ऊपर वाले के घर में अंधेर है देर नही। इसलिए हमें संसार की उत्पत्ति के लिए अच्छे कर्म करने के सिद्धान्त को अपनाना चाहिए। गोस्वामी तुलसी दास जी ने रामचरितमानस में स्वयं लिखा है—

''कर्म प्रधान विश्व रचि राखा,
जो जस करिहिं तो तस फल चाखा''

संसार के अंदर कई कायदे कानून बने हुए हैं लेकिन ईश्वर का कानून सर्वेपरि है इस सिद्धान्त के अन्दर जरा सी भी छूट नहीं होती। उदाहरण से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि राजा दशरथ श्री रामचन्द्र के पिता थे लेकिन कर्म के नियमानुसार उनको भी पुत्र के वियोग में मृत्यु सहनी पड़ी।

मनुष्य सुबह से लेकर रात तक सोने से पहले जो भी कार्य करता है उसे कर्म कहा जाता है। कर्म का फल हमें अवश्य मिलता है और फल मिलने के बाद समाप्त हो जाता है। उदाहरण हमें प्यास लगी हमने पानी पी लिया, पानी पीने का हमने कर्म किया प्यास बुझ गई। कर्म का फल शांत हो गया। तुमने किसी को गाली दी—उसने तुम्हें थप्पड़ मारा कर्म का फल मिल गया। कर्म फल दे कर शान्त हो गया इस प्रकार क्रियाफल कर्मफल देते हैं और फल मिल जाने पर अपने आप स्वयं शांत हो जाते हैं।

कुछ कर्मफल तब तक फल नहीं बनते जब तक वह फल पक नही जाता। जब तक फल पकते नहीं वह फल हमारे खाने में इकट्ठे होते रहते है। इसलिए उन्हें संचित कर्म कह सकते है। उदाहरण के लिए हमने जवानी में अपने माता–पिता को दु:ख दिया। हमें अपना ही बेटा वृद्धावस्था में दु:ख देगा इस प्रकार समय पर किये हुए कर्म हमें समय और अवसर को पाकर पकने का फल देते है। तब तक वह इकठ्ठा किए हुए खाते में पड़े रहते है। बाजरा 91 दिनो में पकता है

और गेहूँ 120 दिनों के बाद। आम पाँच वर्ष के बाद फल देता है। कहने का मतलब यह है कि जो भी हम कर्म करते है, कुछ का फल हमें जल्दी प्राप्त हो जाता है कुछ का देर से।

श्रवण कुमार के माता पिता पुत्र विरह में मर गये। श्रवण कुमार के माता पिता ने मरते समय राजा दशरथ को श्राप दिया था कि तेरी मृत्यु भी पुत्र विरह में होगी क्योंकि राजा दशरथ ने श्रवण कुमार के माता-पिता का वध किया था। राजा दशरथ को किए हुए कर्म का फल उस समय कैसे प्राप्त होता क्योंकि राजा दशरथ के उस समय तो कोई पुत्र नही था। किए हुए कर्मों का फल देखकर शांत न होकर वह कर्म में जमा रहा। अवसर आने पर जब राजा दशरथ के चार पुत्र हुए, वह बड़े हुए उनकी शादी हुई और जब रामचन्द्र जी का राज्याभिषेक का समय आया, तो उस समय का कर्म फल देने के लिए तैयार हो गया और राजा दशरथ को पुत्र विरह में मृत्यु का फल देकर शांत हो गया। स्वयं भगवान राम भी अपने पिता को कम से कम 14 साल का जीवन दान न दे सके काल के आगे उनकी सिफारिश न चल सकी।

राजा धृतराष्ट्र के 100 पुत्रों की एक साथ मृत्यु हुई। धृतराष्ट्र राजा ने श्रीकृष्ण से पूछा मैंने ऐसा कौन सा पाप किया कि मेरे सौ पुत्रों की मृत्यु एक साथ हुई। भगवान श्रीकृष्ण ने राजा धृतराष्ट्र को पूर्व जन्मों की याद दिलाई। राजा धृतराष्ट्र ने देखा कि लगभग 40 जन्म पूर्व वह एक सारथी था और वृक्ष पर बैठे हुए पक्षियों को पकड़ने के लिए उसने जलती हुई जाल वृक्ष पर फैंकी उसमें से बचने के लिए कई पक्षी उड़ गये परन्तु कुछ जलती हुई जाल में गर्मी में अन्धे हो गये और बाकी 100 छोटे-छोटे पक्षी जो उड़कर बच न सके, जलकर राख हो गये। पुण्य कर्मों के परिणाम स्वरूप उस जन्म में 100 पुत्र प्राप्त हुए। तब वह संचित कर्म फल देने को तैयार हो गया जिस के कारण उस जन्म में अंधा जीवन भी मिला और 100 पुत्रों की मृत्यु भी हुई। 40 जन्मों के बाद भी उसके कर्म ने उसका पीछा न छोड़ा। 100 पुत्रों की प्राप्ति के लिए जब पुण्य इकट्ठा होते तब वह कर्म प्रतीक्षा में संचित कर्म में जमा रहा। जब अवसर आया तो उस समय ज़रा भी देर किए बिना फल देकर शांत हो गया।

आदिकाल से जन्म-जन्मान्तर तक एक साथ किये कर्मों की इतनी परतें जमी पड़ी है कि उनसे हिमालय पर्वत का रूप बन जाये। जब संचित कर्म पककर फल देने को तैयार हो जाते है तो उन प्रारब्ध कर्मों को भोगने के लिए मनुष्य को शरीर धारण करना पड़ता है। तथा उस काल के बीच प्रारब्ध कर्मों को भोगकर ही देह का छुटकारा होता है। वृद्धावस्था में लकवा हो जाए और अनेक वर्षों तक बिस्तर पर पड़े-पड़े जीव दु:ख भोगता रहे और कहता रहे हे भगवान मुझे अब तू दुनिया से उठा ले मगर जब तक मनुष्य पूरी तरह प्रारब्ध कर्म न भोग ले, तब तक देह नहीं छूटेगी। लेकिन प्रारब्ध कर्म समाप्त हो जाने पर शांत हो जाने पर उस मुँह में पानी डालो तो वह पानी भी नाक के रास्ते बाहर निकल जायेगा। एक बूँद भी अन्दर नहीं जायेगी और न ही जीव श्वांस ले सकेगा और तुरन्त ही देह का त्याग हो जायेगा। बाकी के कर्म पककर फल देने को तैयार होते हैं तो प्रारब्ध भोगने के अनुसार जीव दूसरा शरीर धारण करता है और उसके अनुसार उसे माता-पिता, स्त्री, पुत्र, आदि मिलते हैं। और जीवनपर्यन्त कर्म भोग लेने पर देह छूट जाती है। इस प्रकार मनुष्य जन्म-मरण के चक्कर में घूमता रहता है। जब तक मनुष्य शरीर को धारण नहीं करता तब तक मनुष्य को मुक्ति नही मिलती। हम जो कर्म करते हैं तो उसके साथ हमारा फल भी अवश्य मिलता है। हमारे पीछे-पीछे फल घूमता रहता है, जैसा बोयेंगे वैसा ही फल काटेंगे जैसा हम करेंगे वैसा ही भरेंगे। पाप का फल विनाशकारी, पुण्य का फल सुखकारी होता है।

संगीत नाटक अकादेमी में विकास के पथ पर राजभाषा

तेजस्वरूप त्रिवेदी

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम एवं संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त निर्देशों के अनुसरण में संगीत नाटक अकादेमी में 14 से 21 सितम्बर 2012 तक *हिन्दी पर्व* का आयोजन किया गया। 14 सितम्बर 2012 को हिन्दी दिवस के अवसर पर सचिव महोदया द्वारा जारी अपील, अधिकारियों वं कर्मचारियों में परिचालित की गयी तथा सभी घटक इकाइयों एवं केन्द्रों में भी भेजी गयी। 14 सितम्बर 2012 को गृह मंत्री भारत सरकार एवं संस्कृति मंत्री के संदेश भी कार्मिकों में परिचालित किये गये।

14 सितम्बर 2012 को हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में अकादेमी की प्रथम गृह पत्रिका 'राजभाषा रूपाम्बरा' के प्रवेशांक का लोकार्पण संस्कृति मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य डॉ. अशोक कुमार सचदेवा द्वारा सम्पन्न हुआ। डॉ. अशोक कुमार सचदेवा ने अकादेमी की प्रथम गृह पत्रिका 'राजभाषा रूपाम्बरा' के प्रकाशन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुये कहा कि गृह पत्रिका का प्रकाशन संसदीय राजभाषा समिति की संस्तुतियों पर जारी राष्ट्रपति जी के आदेशों की अनुपालना स्वरूप उठाया गया प्रशंसनीय कदम है और इसके लिए सचिव व राजभाषा अनुभाग के प्रयास सराहनीय हैं। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि संसदीय राजभाषा समिति के आगामी निरीक्षण के दौरान अकादेमी को इसके लिए अतिरिक्त अंक मिलेंगे। इस अवसर पर कार्यकारी सचिव श्रीमती हैलेन आचार्य ने अपनी अपील में कहा कि हम अपना अधिकाधिक कार्य मूल रूप से हिन्दी में करें व बोलचाल में सरल एवं सुबोध हिन्दी का प्रयोग करें। पत्रिका की संपादक एवं सहायक निदेशक (राजभाषा) श्रीमती सुशील जैन ने इस अवसर पर कहा कि त्रैमासिक पत्रिका 'संगना' के प्रकाशन के बाद 'राजभाषा रूपाम्बरा' का प्रकाशन भारत की सामासिक संस्कृति को एक मंच प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में पत्रिकाओं का इतिहास काफी समृद्ध रहा है, पत्रिकाएं अमर रचनाओं का अभिलेखन कर साहित्यिक दस्तावेज की भूमिका भी निभाती रहीं हैं। प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में संगीत, नृत्य एवं नाटक की शीर्षस्थ राष्ट्रीय संस्था– सगीत नाटक अकादेमी की हिन्दी पत्रिका 'संगना' के बाद 'राजभाषा रूपाम्बरा' का प्रकाशन इसी शृंखला में एक और कड़ी होगी।

'संगना' पत्रिका के संपादक श्री प्रयाग शुक्ल ने इसके लिए राजभाषा अनुभाग को बधाई दी व पत्रिका को छमाही किये जाने का प्रस्ताव किया। कार्यक्रम का संचालन कर रहे पत्रिका के सह संपादक श्री तेजस्वरूप त्रिवेदी ने आभार प्रदर्शन किया। पत्रिका के लोकार्पण समारोह में संस्कृति मंत्रालय व राजभाषा विभाग के अधिकारीगण भी उपस्थित रहें।

हिन्दी पर्व के दौरान पांच प्रतियोगिताएँ : निबन्ध एवं संस्कृति ज्ञान परीक्षा; हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन; अनुवाद प्रतियोगिता; श्रुतलेखन एवं सामान्य हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता तथा काव्य पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इस प्रतियोगिता में कुल 50 कार्मिकों ने भाग लिया जिसमें 37 कार्मिक विजयी घोषित किये गये। काव्य पाठ प्रतियोगिता 21 सितम्बर 2012 को साहित्य अकादेमी सभागार के द्वितीय तल में आयोजित की गई, इस प्रतियोगिता में निर्णायक मण्डल की ओर से राजकमल प्रकाशन के संपादक डॉ. सुशील सिद्धार्थ एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के एसोसियट प्रोफेसर डॉ. पूरनचंद टण्डन उपस्थित रहें। उल्लेखनीय है कि इस बार भी काव्य पाठ प्रतियोगिता महज प्रतियोगिता न रहकर कवि सम्मेलन का रूप लिये रही। प्रतिभागियों के अतिरिक्त अकादेमी

कार्मिकों, उच्च पदाधिकारियों एवं अतिथियों ने भी काव्य पाठ कर आयोजन को और अधिक सफलता प्रदान की।

3 नवम्बर 2012 को सफल प्रतिभागियों के लिए पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन मेघदूत थियटर परिसर में किया गया। जिसमें विजयी प्रतिभागियों को सचिव महोदया ने नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर सचिव महोदया ने प्रतिभागियों को बधाई दी और उन प्रतिभागियों को भी बधाई दी जिन्होने प्रतियोगिता में तो भाग लिया लेकिन पुरस्कारों की श्रेणी में न आ सके। सचिव महोदया ने कहा प्रतियोगिताएं हमें अपनी क्षमता का मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान करती हैं और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं, प्रतियोगिताओं में शामिल लगभग सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी क्षमताओं का अच्छा प्रदर्शन किया, यही उत्साह एवं क्षमता हमारे दैनिक सरकारी कामकाज में भी झलके तभी प्रतियोगिताओं की सार्थकता और बढ़ेगी। मुख्यालय द्वारा जारी निर्देशों की अनुपालना में कथक केन्द्र ने भी सचिव महोदया की अपील को अपने कार्यालय में परिचालित किया तथा गत वर्षों की भांति जवाहर लाल मणिपुर डान्स एकेडमी, इम्फाल ने अपने सभागार में दिनांक 18 एवं 19 सितम्बर 2012 को हिन्दी के आयोजन किये। इस समारोह में श्री सुशील कुमार शिन्दे, गृहमन्त्री, भारत सरकार के अतिरिक्त कुमारी शैलजा, संस्कृति मन्त्री, भारत सरकार एवं श्रीमती हैलेन आचार्य, कार्यकारी सचिव, संगीत नाटक अकादेमी के संदेशों का श्रोताओं के सम्मुख वाचन कराया गया। 19 सितम्बर 2012 को प्रतिभागियों को नगद पुरस्कार, निदेशक श्री एल. उपेन्द्र शर्मा, श्री एन. श्यामचान्द सिंह, गुरु एवं अध्यापक प्रतिनिधि श्रीमती ए. तोम्बीनौ देवी, गुरु द्वारा वितरित किये गये। इस प्रकार अकादेमी एवं इसकी घटक इकाइयों में हिन्दी के आयोजन हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुए।

कार्मिकों में हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने की अभिरुचि विकसित करने के उद्देश्य से सितम्बर 2012 से 31 मार्च 2013 के दौरान तीन कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। 25 सितम्बर 2012 को 'कार्यालयी अनुवाद उपयोगिता एवं प्रक्रिया' पर आयोजित कार्यशाला में, दिल्ली विश्वविद्यालय के एसोसियेट प्रोफेसर एवं भारतीय अनुवाद परिषद के महासचिव डॉ. पूरनचंद टण्डन ने व्याख्यान दिया। इसी क्रम में 26 दिसम्बर 2012 को 'वर्तनी की समस्याएँ एवं पत्राचार' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सहायक निदेशक श्रीमती सुमनलाल ने व्याख्यान दिया। कम्प्यूटर पर सुचारू रूप से हिन्दी में कार्य करने के उद्देश्य से 23 मार्च 2013 को 'यूनीकोड एनकोडिंग: संस्थापना एवं प्रयोग' विषय पर कार्यशाला आयोजित हुई जिसमें केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान के सहायक निदेशक श्री रामसकल सिंह ने कार्मिकों को व्याख्यान देने के साथ-साथ कम्प्यूटर पर उनसे प्रयोगात्मक कार्य कराया। इस प्रकार इन कार्यशालाओं के माध्यम से कार्मिकों का ज्ञानर्वधन हुआ और कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने की प्रवृत्ति भी विकसित हो रही है।

संगीत नाटक अकादेमी में नियमित तौर पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें आयोजित होती हैं। इन बैठकों की अध्यक्षता अकादेमी की सचिव द्वारा की जाती है। सितम्बर 2012 से 31 मार्च 2013 की समयावधि में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दो बैठकें 28 सितम्बर 2012 एवं 31 दिसम्बर 2012 को आयोजित हुईं।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार के उत्तर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय द्वारा अकादेमी में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग का निरीक्षण 26 सितम्बर 2012 को किया गया। निरीक्षण अधिकारी श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा ने भी अपने निरीक्षण में अकादेमी में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की स्थिति पर सन्तोष व्यक्त किया।

संगीत नाटक अकादेमी में हिन्दी के प्रकाशन, प्रगति के पथ पर हैं। हाल ही में संगीता गुंदेचा की पुस्तक 'नाट्य दर्शन' प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त श्री मुकुंद लाठ की पुस्तक 'संगीत और संस्कृति-संगीत, नृत्य, नाट्य पर विमर्श-लेख संग्रह' प्रकाशन की प्रक्रिया में है। संगीत नाटक अकादेमी की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'संगना' का संयुक्तांक (जुलाई-सितंबर/अक्टूबर-दिसंबर 2012) भी प्रकाशित हुआ है।

इस प्रकार राजभाषा हिन्दी निर्बाध गति से अकादेमी में अपने पथ पर अग्रसर है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हिन्दी कार्यशालाओं का योगदान

सुशील जैन

भारत सरकार की राजभाषा नीति सदैव प्रोत्साहनपरक रही है, अत: अनेक पुरस्कार योजनाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए, परन्तु हिन्दी का प्रयोग कार्यालयों में ज़्यादा नहीं बढ़ सका क्योंकि सरकारी कर्मचारी हिन्दी में काम करने के लिए अनुवाद का सहारा ले कर काम करते थे जिससे समय भी ज़्यादा लगता था और पत्राचार की भाषा में मौलिकता नहीं होती थी। अत: सरकारी कर्मचारियों को मूल रूप से हिन्दी में काम करने को बढ़ावा देने के उद्देश्य से केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने सन् 1965 में 'हिन्दी छ: घंटे में' नाम से एक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरु किया, जिससे सरकारी कर्मचारियों ने हिन्दी में पत्राचार और टिप्पणी लिखना शुरु किया। बाद में गृह मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति ने यह निर्णय लिया कि केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के लिए हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए। तदनन्तर 1972 में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में हिन्दी सलाहकार समिति में यह निर्णय लिया गया कि भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों और उनके अधीनस्थ कार्यालयों में कार्यशालाएं आयोजित की जाएं।

देश को एक सूत्र में पिरोने का श्रेय हिन्दी को ही जाता है फिर भी भारत सरकार देश की राजभाषा नीति हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने में सतत प्रयासरत है जबकि देखा जाए हिन्दी देश के हरेक कोने में अपना स्थान बना चुकी है चाहे वह हिन्दी भाषी क्षेत्र हों या गैर-हिन्दी भाषी क्षेत्र। सरकारी प्रयोजनों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए, अधिकारियों एवं कर्मचारियों मे हिन्दी के प्रति जागरुकता पैदा करने के लिए और उनकी मानसिकता को सकारात्मक दिशा में अनुकूलन करने के लिए हिन्दी कार्यशालाओं के आयोजन को अत्यावश्यक मानते हुए भारत सरकार ने हिन्दी कार्यशालाओं के आयोजन का प्रावधान रखा है। यह कार्यशालाएं मानसिकता और मनोवृत्ति को बदलने में, राजभाषा नीति की व्यापक जानकारी कराने में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुई है। कार्यशालाएं हिन्दी में काम करने वाले अधिकारियों कर्मचारियों के लिए अत्यधिक सहायक होती हैं क्योंकि इससे वह न केवल अपने हिन्दी के ज्ञान का संवर्धन करते हैं अपितु सरकारी कामकाज को बेझिझक राजभाषा में प्रतिपादित करने का सफल प्रयास करते हैं। पत्र-लेखन, टिप्पण लेखन में हिन्दी शब्दों के चुनाव के समय आने वाली समस्याओं की चर्चा कर उसका निराकरण करते हैं और हिन्दी प्रचार-प्रसार में अपना पूरा सहयोग देते हैं।

सरकारी कामकाज हिन्दी में करने की हिचक को दूर करने के लिए हिन्दी कार्यशालाओं के आयोजन को प्राथमिकता दी गई। इन कार्यशालाओं में सहभागियों की शंका का समाधान भी अतिथि वक्ताओं द्वारा साथ-साथ किया जाता है। कार्यशालाओं में प्रतिभागियों से पत्राचार, टिप्पण लेखन, कम्प्यूटर, सामान्य हिन्दी ज्ञान और वर्तनी आदि मौलिक समस्याओं का अभ्यास भी करवाया जाता है ताकि हिन्दी में सरकारी काम काज को बढ़ा कर लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकें।

हिन्दी एक सरल व सहज भाषा है जिसे आसानी से सीखा व समझा जा सकता है। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति व्याप्त झिझक को दूर करना होता है। कार्यशाला में यह संदेश दिया जाता है कि हम सरकारी कर्मचारी हैं और संवैधानिक अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए हमें अपना सरकारी काम काज अधिक से अधिक हिन्दी में करना चाहिए क्योंकि यह हमारा नैतिक दायित्व भी है। हमें अशुद्धियों, त्रुटियों की चिंता किये बिना ही हिन्दी में कार्य करना चाहिए और जहां तक अशुद्धियों, त्रुटियों, व्याकरण, भाषा ज्ञान, वर्तनी आदि का प्रश्न है तो इन सब का समाधान

एवं निराकरण करने के लिए ही हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। यह कार्यशालायें प्रयोगात्मक होती हैं और पाठ्यपुस्तकों द्वारा अर्जित ज्ञान को प्रयोगात्मक बनाने के लिए कार्यशालायें ही माध्यम बनती हैं। अनौपचारिक रूप से सभी हिन्दी भाषा का ही प्रयोग करते हैं परन्तु जब कभी हिन्दी में पत्र, टिप्पणी लिखने की बात उठती है तो यह एक समस्या या चुनौती बन जाती है और एक ऐसा भ्रम हो गया है कि हिन्दी में सरकारी काम करना बहुत कठिन है। इसी भ्रम और भ्रान्ति को दूर करने में कार्यशालाओं ने एक अहम् भूमिका निभाई है और काफी हद तक सरकारी कर्मचारियों को हिन्दी का ज्ञान संवर्धन कर हिन्दी पत्राचार की प्रतिशतता को बढ़ाने में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है।

कार्यशाला में आमंत्रित अतिथि वक्ता हिन्दी व्याकरण की जानकारी देते हैं, व्याकरण के नियमों तथा वाक्य विन्यास पर उपयोगी व्याख्यान देते हैं, वर्तनी में मुख्य रूप से होने वाली अशुद्धियों पर एक विस्तृत चर्चा करते हुए सबका ज्ञानवर्द्धन करते हुए सबको हिन्दी में काम करने के प्रति प्रेरित करते हैं, कर्मचारियों की व्याकरण और वर्तनी से जुड़ी शंकाओं का भाषा विज्ञान के अनुरूप सटीक ढंग से समाधान करते हैं। कार्यशाला में अभ्यास के तौर पर वर्णमाला का अभ्यास भी करवाया जाता है। रोजमर्रा में काम आने वाले वाक्यांशों, नेमी टिप्पणियों और पत्र-लेखन कार्य का भी अभ्यास करवाया जाता है उन्हें यह भी बताया जाता है कि पत्र लिखते समय अंग्रेज़ी के तकनीकी और कठिन शब्दों के लिए यदि उचित पर्याय न हों तो उस शब्द को देवनागरी में ही लिख कर लिप्यान्तरित किया जाना बेहतर होता है। कार्यशाला में चर्चित विषयों से प्रतिभागी सदैव लाभान्वित होते रहें हैं एवं अपना ज्ञान वर्धन करते रहे हैं। अभ्यास कराने के पश्चात सहभागियों की उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच की जाती है और उनकी अशुद्धियों ओर कठिनाईयों पर चर्चा कर उनका आत्मविश्वास बढ़ाने का भरसक प्रयत्न किया जाता है।

कार्यशालाओं के आयोजन में उस विषय विशेष को व्याख्यान एवं अभ्यास पद्धति द्वारा प्रतिपादित करने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार इन कार्यशालाओं के माध्यम से हिन्दी के प्रचार-प्रसार को एक नई दिशा मिली है क्योंकि सरकारी कर्मचारी हिन्दी में अपना दैनिक सरकारी काम करते समय, कठिनाई आने पर, उसे फिर से अंग्रेज़ी में करना शुरु कर देते थे, इसका एक कारण यह भी रहा है कि पहले से चल रही फाईल का काम अंग्रेज़ी में होता था, जिसे अंग्रेजी में आगे बढ़ाने में समय कम लगता था, परन्तु हिन्दी में शुरु करने के लिए भाषा का पूरा ज्ञान न होने के कारण वाक्य संरचना और शब्दों के चयन में मुश्किल होती थी और पूछने में झिझक महसूस होती थी, अत: सरकारी काम-काज हिन्दी में पूरी तरह सम्पन्न नहीं हो पाता था। सरकारी कर्मचारियों को इस स्थिति से उभारने का श्रेय हिन्दी कार्यशाला को जाता है। हिन्दी कार्यशालाओं ने हिन्दी में काम करने के लिए अधिकारियों, कर्मचारियों में सामान्य हिन्दी ज्ञान के साथ-साथ उनका हिन्दी के प्रति आत्म विश्वास भी बढ़ाया और हर प्रकार से उनकी सहायता कर हिन्दी पत्राचार, मूल लेखन, टिप्पण, प्रारूप लेखन आदि का अभ्यास करवा कर हिन्दी में काम करने की प्रेरणा दे कर हिन्दी पत्राचार को और बढ़ाया है।

कार्यशालाओं का प्रमुख उद्देश्य सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली व्यावहारिक हिन्दी का अभ्यास करवाना है जिससे कार्यशालाओं में भाग लेने वाले प्रतिभागी मूल रूप से अपना दैनिक सरकारी कामकाज हिन्दी में कर सकें। अत: कार्यशाला में यही प्रयत्न किया जाता है कि प्रशिक्षार्थी सरल और सहज भाषा का प्रयोग करें प्रचलित शब्दों को अपनाएं, आवश्यकता पड़ने पर अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों को प्रयोग करने में भी संकोच न करें।

अकादेमी में हिन्दी कार्यशालाओं के आयोजन का दौर कुछ इस प्रकार से शुरु हुआ कि मैंने पहली बार कार्यशाला का आयोजन करवाने की अनुमति प्राप्त की तो कार्यशाला के आयोजन के लिए पांच प्रमुख तत्वों (स्थान की उपलब्धता, समय की निश्चितता, व्याख्याता की सहमति, प्रतिभागियों की उपस्थिति, प्रशासन का सहयोग) में से केवल एक ही तत्व सुनिश्चित था वह था व्याख्याता की सहमति। कार्यशाला का स्थान एवं समय बदल दिया गया, हमने अपनी कार्यशाला का इन्तज़ाम खुले आकाश में किया, निर्धारित समय पर प्रतिभागियों को संदेश दे कर बुलवाने के भरसक प्रयत्न किए

परन्तु पूरे स्टाफ से हम केवल दो कर्मचारियों को ही जुटा पाए, मेरी मनोदशा का अंदाजा आप स्वयं लगा सकते हैं। खैर, अतिथि व्याख्याता अत्यन्त अनुभवी एवं कुशल थे, मैं उन्हें अभी कुछ स्पष्टीकरण देती, इससे पहले ही वह भांप गए और मेरा मनोबल बढ़ाने के लिए अपना संस्मरण बताते हुए कहा कि आप हतोत्साहित न हों, इस कार्यशाला में आप और हम भी उपस्थित हैं, धीरे-धीरे और कर्मचारी भी आने लगेंगे जब उन्हें इसकी उपयोगिता समझ आ जाएगी। हम तो केवल अपने कर्तव्यों को पूरा करते रहेंगे। आज मैं हिन्दी कार्यशालाओं और उनकी उपयोगिताओं के सम्बन्ध में अत्यन्त गर्व के साथ कह सकती हूँ कि संगीत नाटक अकादेमी में हिन्दी कार्यशालाओं में न केवल कार्मिकगण अपितु अधिकारी वर्ग भी भाग लेने के इच्छुक रहते हैं और संगीत नाटक अकादेमी में कार्यशालाओं के कारण ही हिन्दी के प्रचार प्रसार को भी गति मिली है। हिन्दी टिप्पण और पत्राचार में भी हम लक्ष्यों की ओर अग्रसर हैं।

यद्यपि हमारे कार्यालय में राजभाषा का कामकाज अच्छा हो रहा है तथापि केन्द्र सरकार के राजभाषा नियमों के अनुसार प्रत्येक तिमाही हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन केवल इसी उद्देश्य से किया जाता है कि अकादेमी के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचायों को हिन्दी में काम करने में पूरी मदद मिल सके और बेझिझक अपना रोज़मर्रा का सरकारी कामकाज हिन्दी में कर सकें। कार्यशालाओं के आयोजन से एक वातावरण तैयार किया जाता है, प्रतिभागियों की हिन्दी में काम करने की मानसिकता विकसित की जाती है जिससे वह अपना दैनिक कार्य हिन्दी में सफलता पूर्वक कर सकें। यह एक सुखद स्थिति है कि हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों के साथ-साथ हिन्दीत्तर भाषी कर्मचारी भी उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। अनुदान अनुभाग एवं अन्य अनुभागों की टिप्पणियों, प्रारुप लेखन, कार्यशालाओं में हिन्दी व्याकरण में हिन्दी वर्णमाला से लेकर पत्र व्यवहार, टिप्पण और आलेखन, राजभाषा नियमों की जानकारी, संविधान में राजभाषा, शब्द एवं शब्दावली, कार्यालयी अनुवाद: उपयोगिता एवं प्रक्रिया, वर्तनी की समस्याएं, राजभाषा के कार्यान्वयन में कम्प्यूटर का योगदान: यूनिकोड एनकोडिंग, संस्थापना एव प्रयोग, के अतिरिक्त लेखा अनुभाग, प्रशासन अनुभाग, संबंधी समस्याओं का निराकरण किया जाता हैं।

हिन्दी कार्यशाला में आने वाले सहभागी भी अतिथि व्याख्याता को आश्वस्त करते हैं कि वह भी कार्यशाला का लाभ उठायेंगे, हिन्दी वर्तनी की गलतियों को सुधारने का प्रयत्न करेंगे, सरल और सहज शब्दों में हिन्दी पत्राचार करेंगे, कार्यशाला से अर्जित ज्ञान का प्रयोग वह व्यवहारिक रुप से अपने दैनिक कामकाज में करेंगे।

राजनीति और भष्टाचार

रागेश कुमार पाण्डेय

[अकादेमी में वर्ष 2012 में सितम्बर माह में हिन्दी पर्व के दौरान आयोजित हिन्दी निबन्ध एवं संस्कृति ज्ञान प्रतियोगिता में श्री रागेश कुमार पाण्डेय ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया, वही पुरस्कृत निबन्ध यहाँ प्रस्तुत है—संपादक]

वर्तमान परिपेक्ष्य में राजनीति और भ्रष्टाचार अत्यन्त संवेदनशील विषय हैं। क्योंकि यदि 'राजनीति' और भ्रष्टाचार दोनों को एक अलग-अलग विषय समझ कर परिभाषित करने का प्रयास किया जाए तो यह अत्यन्त ही सरल हो जाता है और यदि इन दोनों शब्दों को जोड़कर एक विषय के रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया जाए तो विषय स्वयं में संवेदनशील बन जाता है और गांर्भीय का आवरण भी ओढ़ लेता है। खैर वर्तमान में यह विषय राजनीति एवं भ्रष्टाचार या राजनीति और भ्रष्टाचार सम्पूर्ण विश्व के राजनीतिक पटल पर दृष्टिगोचर होता है। इस विषय की व्याख्या के पहले यह अधिक महत्त्वपूर्ण है कि राजनीति शब्द एवं भ्रष्टाचार शब्द दोनों को एकल-एकल रूप में समझने का प्रयास किया जाए।

यदि राजनीति शब्द का सन्धि-विच्छेद करें तो यह स्पष्ट होता है कि इसका सम्बन्ध राज्य अर्थात् देश राष्ट्र की उन नीतियों से है जिनके द्वारा उस देश अथवा राज्य को सुचारू रूप से चलाने का प्रयास किया जा सकता है। यदि यह नीतियाँ उच्चश्रेणी की होती हैं तो इनके क्रियान्वयन के पश्चात वह देश प्रगति के पथ पर अपना मार्ग प्रशस्त करता है। इसके विपरीत यदि इन नीतियों का निर्माण या इनका अनुपालन उचित प्रकार से नहीं होता है तो यह देश को गर्त में ढकेलने में कोई कसर नहीं छोड़ती है। अर्थात् राजनीति ही देश के प्रगति में सहायक होती है। इस प्रकार से यह राजनीति के सन्दर्भ में इसकी सैद्धान्तिक विवेचना है।

परन्तु व्यवहार रूप में वर्तमान में राजनीति, राजनेताओं का वह आचरण या व्यवहार बन चुकी है जिसके माध्यम से वह सत्ता में आने के लिए विभिन्न संसाधनों का प्रयोग करते हुए येन-केन प्रकारेण पद पर काबिज़ होकर अपना प्रभाव, सरकार और समाज में बनाए रखना चाहते हैं। वर्तमान परिपेक्ष्य में समाज सेवक राजनेता बन चुके हैं और जिन नीतियों को आधार बनाकर एक समाज सेवक सामाजिक कार्यों को करता था वह नीतियाँ दम तोड़कर राजनीति के रूप में पुन: जन्म ले लेती हैं।

ठीक इसी प्रकार से यदि हम भ्रष्टाचार शब्द की विवेचना करें तो इसका शाब्दिक अर्थ निकलता है 'भ्रष्ट आचरण करने वाला' यह शाब्दिक अर्थ किसी भी व्यक्ति के आचरण से सम्बन्ध रखता था लेकिन यदि आज के दौर में इस शब्द का सम्बन्ध राष्ट्र आचरण के साथ-साथ भ्रष्टाचार शब्द का सीधा सम्बन्ध गलत तरीके से धनोपार्जन, पद का दुरुपयोग आदि से है जिससे समाज का एक विशेष वर्ग ही प्रभावी होता है। यद्यपि भ्रष्टाचार की मूल शाब्दिक विवेचना ने सैद्धान्तिक रूप से अपने स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आने दिया है लेकिन इसका व्यावहारिक स्वरूप अत्यन्त ही भयावह है।

राजनीति और भ्रष्टाचार दोनों ही शब्द अपने-अपने सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक विवेचनाओं के आधार पर पहले ही परिमार्जित किए जा चुके हैं लेकिन अब हम इन दोनों शब्दों को एक-दूसरे से जोड़कर देखने का प्रयास करते हैं तो इन शब्दों की व्यावहारिक पराकाष्ठा दिखाई देने लगती है और विषय संवेदनशील हो जाता है।

यद्यपि वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व के राजनीतिक पटल पर, राजनीति और भ्रष्टाचार उसी प्रकार से व्यवहार कर रहे

हैं जैसे बहन-भाई, जिस प्रकार से हिन्दू संस्कृति में एक, भाई अपनी बहन को हमेशा कुछ न कुछ देने में विश्वास रखता है उसी प्रकार से वर्तमान में भ्रष्टाचार रूपी भाई अपनी राजनीति बहन को भ्रष्ट चरम के द्वारा लाभ पहुँचाने का प्रयास कर रहा है। जो कि राजनीति में कोई भी व्यक्ति अपना प्रवेश समाज सेवा को माध्यम बनाकर करता है। चूँकि राजनीति में कोई भी व्यक्ति अपना प्रवेश समाज सेवा को माध्यम बनाकर करता है इसके उपरान्त उसका दृश्य विधायक, सांसद या मन्त्री बनकर अपने क्षेत्र या देश की सेवा करना होता है।

भारत को ही यदि देखें तो स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जो प्रथम मन्त्रिमण्डल बना वह स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले उन प्रबुद्ध एवं सम्पन्न परिवार से आए हुए लोगों का था या उन लोगों का जिन्होंने अपने देश सेवा की खातिर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया और भ्रष्ट अंग्रेजों की सरकार को उखाड़ फेंका। नेतागण अपने देश के कारण कालापानी जैसी यातनापूर्ण जेल गए तत्पश्चात ही देश को आजादी मिली। हमें उनका ऋणी होना चाहिए जिन्होंने अपनी नीतियों द्वारा भ्रष्ट फिरंगियों को देश से बाहर किया और उसके उपरान्त अपनी दूरदर्शी नीतियों को राजनीति के माध्यम से भारत को विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश बनाया।

इसके विपरीत विश्व के मानचित्र में आपको ऐसे देश भी मिलेंगे जिनके नेताओं ने अपने देश में राजनीति एवं भ्रष्टाचार को मिलाकर एक ऐसा सामाजिक रासायनिक यौगिक तैयार किया जिसके फलस्वरूप वहाँ रोजाना गृह युद्ध छिड़ा रहता है। इस भ्रष्टाचार मिश्रित राजनीति से उपजे देश जैसे लीबिया मिस्र युगाण्डा, अफगानिस्तान और यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि राजनीति और भ्रष्टाचार आज के परिप्रेक्ष्य में एक अनुक्रमानुपातिक क्रिया बन चुकी है, जिसके फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्व में एक भयावह स्थिति उत्पन्न होती जा रही है जिसके परिणाम में विभिन्न देशों में छिड़े गृह युद्ध जैसे सीरिया, लीबिया, अफगानिस्तान इत्यादि हैं। यद्यपि यह कहना भी उचित नहीं है कि भ्रष्टाचार का सीधा सम्बन्ध राजनीति से है, यह भ्रष्टाचार रूपी शब्द बल्कि यूँ कहें कि यह वह क्रियात्मक शब्द है जिसका उद्भव हमारे समाज के भीतर से ही होता है। व्यक्तिगत स्वार्थों के चलते हम इसके मोहपाश में बंधते चले जाते हैं और जब हम इससे पूर्णत: परिचित हो जाते हैं तो इसका लाभ उठाकर ही प्रभावशाली या उच्च पदस्थ अधिकारी या नेता अपनी गलत नीतियों को हमारे द्वारा ही अनुपालित करवाने का प्रयास करता है या अनुपालन करवा ही लेता है। अत: यदि सीधे अर्थ में देखा जाए तो भ्रष्टाचार एवं राजनीति का सीधा सम्बन्ध नहीं होता। इसका माध्यम हमारे आपके बीच का ही एक वर्ग होता है जो सही अर्थों में देशद्रोही होता है। अपने व्यक्तिगत लाभों के चलते प्रलोभन के द्वारा वह अपनी पकड़ राजनेताओं के बीच में बनाते हैं और यदि राजनेता स्वयं लोभी हो जाता है तो वहीं से राजनीति और भ्रष्टाचार में परस्पर सम्बन्ध स्थापित हो जाता है और इसी स्थापना के फलस्वरूप उस देश-प्रदेश का गर्त में गिरना आरम्भ होने लगता है।

अत: इन विवेचनाओं के आधार पर परिणाम यह निकलता है कि राजनीति और भ्रष्टाचार में परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता है। भ्रष्टाचार मानव समाज में उपस्थित उस नासूर के समान है, जिसको समाज से मिटाना अत्यन्त ही आवश्यक है यद्यपि जिस प्रकार से दानव अपनी मायावी शक्तियों के द्वारा समय-समय पर देवों के बीच अपना स्थान बनाने का प्रयास करते रहें फिर भी देवताओं का स्थान उच्च ही रहा। उसी प्रकार से राजनीति उस देवी के समान है जिसका स्थान राष्ट्र धर्म में हमेशा उच्च पदस्थ रहेगा और भ्रष्टाचार रूपी दानव अर्थात् राक्षस इस देवी द्वारा हमेशा सुनीति द्वारा खत्म किया जाता रहेगा अर्थात् राजनीति पर भ्रष्टाचार कभी भी प्रभावी नहीं हो सकेगा।

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियाँ, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, सरकारी कागजात, संविदाएँ, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञापत्र, टेंडर, नोटिस तथा टेंडर फार्म आदि द्विभाषी रूप में ही जारी की जाएँ। किसी प्रकार के उल्लंघन के लिए हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी को जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

2. अधीनस्थ सेवाओं की भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्नपत्र को छोड़कर शेष विषयों के प्रश्नपत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए और ऐसे प्रश्नपत्र अंग्रेजी तथा हिंदी दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए जाएँ। साक्षात्कार में भी वार्तालाप में हिंदी माध्यम की उपलब्धता अनिवार्य रूप से रहनी चाहिए।

   केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों तथा उनसे संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों तथा केंद्र सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रणाधीन निगमों, उपक्रमों, बैंकों आदि में सभी सेवाकालीन विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं में (अखिल भारतीय स्तर की परीक्षाओं सहित) अभ्यर्थियों को प्रश्न-पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए। प्रश्न-पत्र अनिवार्यत: दोनों भाषाओं (हिंदी और अंग्रेजी) में तैयार कराए जाएँ। जहाँ साक्षात्कार लिया जाना हो, वहाँ भी प्रश्नों के उत्तर हिंदी में देने की छूट दी जाए।

3. सभी प्रकार की वैज्ञानिकों/तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में वैज्ञानिकों आदि को राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। उक्त शोध-पत्र संबद्ध मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि के मुख्य विषय से संबंधित होने चाहिए।

4. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में सभी प्रकार का प्रशिक्षण, चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घावधि का, सामान्यत: हिंदी माध्यम से होना चाहिए। 'ग' क्षेत्र में प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जाए और प्रशिक्षणार्थी की माँग के अनुसार हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध कराई जाए।

5. केंद्र सरकार के कार्यालयों में जब तक हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक संबंधी निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिए जाते, तब तक उनमें केवल हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक ही भर्ती किए जाएँ।

6. अंतरराष्ट्रीय संधियों और करारों को अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराया जाए। विदेशों में निष्पादित संधियों और करारों के प्रामाणिक अनुवाद तैयार कराके रिकार्ड के लिए फाइल में रखे जाएँ।

7. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित बैंकों की शाखाओं में निम्नलिखित कार्य हिंदी में किए जाएँ—ग्राहकों द्वारा हिंदी में भरे गए आवेदनों में भरे गए आवेदनों और ग्राहकों की सहमति से अंग्रेजी में रखे गए आवेदनों पर जारी किए जाने वाले माँग ड्राफ्ट, भुगतान आदेश, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, सभी प्रकार की सूचियाँ, विवरणियाँ, सावधि जमा-रसीदें, चैक बुक संबंधी पत्र आदि, दैनिक बही, मस्टर, प्रेषण बही, पास बुक, लॉग बुक में प्रविष्टियाँ, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, सुरक्षा ग्राहक सेवा संबंधी कार्य, नए खाते खोलना, लिफाफों पर पते लिखना,

कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, आवास निर्माण अग्रिम, चिकित्सा संबंधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची-कार्यवृत्त आदि।

8. विदेश स्थित भारतीय कार्यालयों सहित सभी मंत्रालयों/विभागों आदि की लेखन सामग्री, नाम पट्ट, सूचना-पट्ट, फार्म, प्रक्रिया संबंधी साहित्य, रबड़ की मोहरें, निमंत्रण पत्र आदि अनिवार्य रूप से हिंदी-अंग्रेजी में बनवाए जाएँ।

9. भारत सरकार के मंत्रालयों, कार्यालयों, विभागों, बैंकों, उपक्रमों आदि द्वारा असांविधिक प्रक्रिया साहित्य जैसे नियम, कोड, मैनुअल, मानक फार्म आदि को अनुवाद कराने के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो को भेजा जाए।

10. अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में अनिवार्य प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अनुवाद के प्रशिक्षण पर नामित किया जा सकता है, जिन्हें स्नातक स्तर पर हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान हो तथा जिनकी सेवाओं का उपयोग कार्यालय द्वारा इस कार्य के लिए किया जा सकता हो।

11. भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य अखिल भारतीय सेवा के अधिकारियों के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हिंदी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता है, ताकि सरकारी कामकाज में वह इसका प्रयोग कर सकें। तथापि अधिकांश अधिकारी सेवा में आने के पश्चात सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग नहीं करते। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों में सही संदेश नहीं जाता। मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों आदि के वरिष्ठ अधिकारियों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वह अपने सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन को गति मिलेगी।

12. सभी मंत्रालय/विभाग आदि हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए चलाई गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का अपने संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों में भी व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठा सकें और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो।

13. तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑन लाइन सिस्टम द्वारा प्रत्येक तिमाही की समाप्ति के अगले माह की 15 तारीख तक राजभाषा विभाग को उपलब्ध करा दी जाए।

14. सरकार की राजभाषा नीति के प्रति अधिकारियों/कर्मचारियों को सुग्राही बनाने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में हुई प्रगति की समीक्षा को मात्र राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों तक ही सीमित न रखा जाए। इस संबंध में मानीटरिंग को और अधिक प्रभावी और कारगर बनाने के लिए यह जरूरी है कि मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधानों द्वारा ली जाने वाली प्रत्येक बैठक में इस पर नियमित रूप से विस्तृत चर्चा की जाए और इसे कार्यसूची की एक स्थायी मद के रूप में शामिल किया जाए।

15. प्रशिक्षण और कार्यशालाओं सहित राजभाषा हिंदी संबंधी कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालय में बैठने के लिए अच्छा व समुचित स्थान भी उपलब्ध कराया जाए ताकि वे अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक तरह से कर सकें।

16. राजभाषा विभाग द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि नियमित रूप से अपने कर्मचारियों को नामित करें और नामित कर्मचारियों को निदेश दें कि वे नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित रहें,

पूरी तत्परता से प्रशिक्षण प्राप्त करें तथा परीक्षाओं में बैठें। प्रशिक्षण को बीच में छोड़ने या परीक्षाओं में न बैठने वाले मामलों को कड़ाई से निपटा जाए।

17. अनुवादकों को सहायक साहित्य, मानक शब्दकोश (अंग्रेजी-हिंदी व हिंदी-अंग्रेजी) तथा अन्य तकनीकी शब्दावलियाँ उपलब्ध कराई जाएँ ताकि वे अनुवाद कार्य में इनका प्रयोग करें।

18. सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि हिंदी में प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारियों/कर्मचारियों के लाभ के लिए ''लीला-हिंदी प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ'' आदि सॉफ्टवेयर के उपयोग के लिए कंप्यूटर की सुविधा उपलब्ध करवाएँ।

19. सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि अपने-अपने दायित्वों से संबंधित विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक-लेखन को प्रोत्साहित करने तथा अपने विषयों से संबंधित शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएँ।

20. सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि अपने केंद्रीय सेवाओं के प्रशिक्षण संस्थानों में राजभाषा हिंदी में प्रशिक्षण की व्यवस्था उसी स्तर पर करें जिस स्तर पर लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में कराई जाती है और अपने विषयों से संबंधित साहित्य का सृजन करवाएँ जिससे प्रशिक्षण के बाद अधिकारी अपने कामकाज सुविधापूर्वक राजभाषा हिंदी में कर सकें।

21. सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय/संस्थान आदि अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। इन पत्रिकाओं में विशेषकर उक्त कार्यालय के सामान्य कार्यों तथा राजभाषा हिंदी से संबंधित आलेख प्रकाशित किए जाएँ।

22. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की छमाही बैठकों में सदस्य कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख अनिवार्य रूप से भाग ले।

23. सभी मंत्रालय/विभाग अपने संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों के बारे में वर्ष 2013-14 के वार्षिक कार्यक्रम से संबंधित समेकित अनुपालन रिपोर्ट राजभाषा विभाग को 31 मई, 2014 तक भिजवाना सुनिश्चित करें।

24. सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि ''लीला'' अर्थात लर्निंग इंडियन लैंग्वेज थ्रु आर्टिफिशियल इंटलीजेंस के उपयोग के लिए कंप्यूटर सुविधा उपलब्ध कराये।

25. कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए केवल यूनिकोड एनकोडिंग का प्रयोग किया जाए।

26. राजभाषा विभाग द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर जैसे मंत्रा-राजभाषा (कंप्यूटर से हिंदी में मशीन अनुवाद) हिंदी सीखने के लिए लीला प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ के तीन मॉड्यूलों, श्रुतलेखन-राजभाषा (हिंदी वाक् से हिंदी पाठ) और द्विदिशात्मक ई-महाशब्दकोश का प्रयोग किया जाए। राजभाषा विभाग की वेबसाइट http://rajbhasha.gov.in में इन सभी सॉफ्टवेयर के बारे में सूचना उपलब्ध है।

(साभार : राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार)

प्रतिक्रियाएं

इसमें प्रचार प्रसार हेतु विशेष प्रवृत्तियों एवं विविध विषयों के आलेख अत्यंत स्तरीय, उपादेय और सराहनीय हैं। पत्रिका के सभी स्तंभ सटीक एवं विषयोचित है। प्रशंसनीय हैं, सफल संपादन हेतु बधाई एवं मंगल कामना, सह कृतज्ञ हूँ

डॉ. सुदर्शन आयंगार, कुलपति
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

एक सांसद व राजभाषा समिति के सदस्य के नाते मुझे विभाग से पत्रिकाऐं मिलती रही हैं, तदर्थ धन्यवाद। राष्ट्रीय हितों के साथ राजभाषा का आग्रह पूर्वक उपयोग करने में आप सभी सफल हों, यह शुभकामना—

श्री गोपाल व्यास
पूर्व सासंद
रायपुर (छत्तीसगढ़)

'राजभाषा रूपाम्बरा' तो आपकी अकादेमी की अनोखी सृष्टि है। इसका यह पहला ही अंक इतना अधिक प्रभावित करता है कि आश्चर्य होता है। इसके तो सभी आलेख चमकते मोती के समान है आलेख के साथ-साथ इसमें प्रसिद्ध कवियों की कविताएं, 'अनुवाद और अनुवादक' शीर्षक देने वाला सुन्दर आलेख है। कुल मिलाकर यह पत्रिका अतिरिक्त मूल्यवान पत्रिका हो गई है।

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ
पूर्व प्राचार्य, मथुरा कालेज मथुरा
सी 56, सेक्टर 40, नोएडा

'राजभाषा रुपाम्बरा' के प्रवेशांक में सभी साहित्यिक विधाओं को समाहित कर इसे अधिक पठनीय बनाया गया है। निबन्ध ज्ञान वर्धक हैं तो अन्य रचनाएं सुबोध और रोचक हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सभी रचनाएं सुपाच्य हैं।

अकादेमी के कार्मिक साहित्यकारों की रचनाओं को इसी प्रकार प्राथमिकता देते रहना चाहिए, प्रतिष्ठित पुराने लेखकों की रचनाओं का समावेश कर पत्रिका के स्तर को ऊँचा उठाया गया है। साज-सज्जा और सामग्री दोनों ही दृष्टियों से ऐसी स्तरीय पत्रिका के प्रवेशांक के लिए सम्पादकद्वय साधुवाद के पात्र हैं।

डॉ. रमानाथ त्रिपाठी
सेवा निवृत्त आचार्य
हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
26, वैशाली, पीतमपुरा, दिल्ली

'राजभाषा रूपाम्बरा' का प्रवेशांक प्राप्त हुआ। आभार। राजभाषा हिन्दी विषयों के साथ-साथ अन्य विषयों को सम्मिलित करने से पत्रिका सारगर्भित हुई है। भविष्य में प्रकाशित होनेवाले अंक हिन्दी जगत में अपनी खास पहचान बनाएँगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

भारतेश कुमार मिश्र
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
एवं संपादक 'संस्कृति'
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
शास्त्री भवन, नई दिल्ली

संगीत नाटक अकादेमी की गृह पत्रिका 'राजभाषा रूपाम्बरा' अंक-1 की प्रतियां प्राप्त हुई, धन्यवाद। शुभकामनाओं सहित

एन. सी. झींगटा
सचिव, पूर्व प्रधानमंत्री
श्री अटल बिहारी वाजपेई

संगीत नाटक अकादेमी Sangeet Natak Akademi
संगीत, नृत्य एवं नाटक की राष्ट्रीय अकादेमी
रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली–110001
फोनः 23387246, 23387247, 23387248, 23382495
फैक्सः 91–11–23382659
ई–मेलः mail@sangeetnatak.gov.in
वेबसाइटः http://sangeetnatak.gov.in

संगीत नाटक अकादेमी के प्रकाशन

अंग्रेजी	मूल्य	छूट सहित मूल्य
1. रवीन्द्र नाथ टैगोर : ए ट्रिब्यूट (पुनर्मुद्रित): (सं) पुलिन बिहार सेन, क्षितिश रॉय	495.00	(297.00)
2. संगीत नाटक : सिल्वर जुबली वॉल्यूम, एच.के रंगनाथ	100.00	(60.00)
3. *म्यूजिक एंड डांस इन रवीन्द्रनाथ टैगोर्ज़ एजुकेशन फिलॉसफी : शांतिदेव घोष	20.00	(12.00)
4. द विंग्ड फॉर्म : एस्थेटिकल एस्सेज ऑन हिन्दुस्तानी रिदम : एस के सक्सेना	35.00	(21.00)
5. रावण छाया : जीवन पाणि	12.00	(7.20)
6. मालुशाही- द बैलेड ऑफ कुमाऊं : मोहन उप्रेती	30.00	(18.00)
7. करयाला : फोक थियेटर आफ हिमाचल प्रदेश : एस एस एस ठाकुर	20.00	(12.00)
8. इवोल्यूशन ऑफ ख्याल : एम वी धोंड	10.00	(6.00)
9. भाओना : द रिच्यूअल प्ले ऑफ असम : महेश्वर नियोग	25.00	(15.00)
10. *हूज़ हू ऑफ इंडियन म्यूजिशियंस : दूसरा संस्करण	50.00	(30.00)
11. *उस्ताद फैयाज खां : दीपाली नाग	90.00	(54.00)
12. स्टेज़ म्यूजिक ऑफ महाराष्ट्र : अशोक डी रानाडे	60.00	(36.00)
13. आस्पेक्ट्स ऑफ इंडियन म्यूजिक : सुमति मुटाटकर (संपादित), (पुनर्मुद्रण)	595.00	(357.00)
14. कंटेम्पोरेरी इंडियन थिएटर : इंटरव्यूज विद प्लेराइटर्स एंड डायरेक्टर्स : रजिन्द्र पॉल (पुनर्मुद्रण)	740.00	(444.00)
15. मैडम मेनका : दमयंती जोशी	150.00	(90.00)
16. *शारंगदेव एंड हिज संगीत - रत्नाकार : सं. प्रेमलता शर्मा, सजिल्द	1200.00	(720.00)
पेपर बैक	800.00	(480.00)
17. मतंग एण्ड हिज वर्क बृहद्देसी : प्रेमलता शर्मा	500.00	(300.00)
18. स्विन्गिंग सिलेबल्स एस्थेटिक्स ऑफ कथक डांस (पुर्नमुद्रण) : सुशील कुमार सक्सैना	475.00	(285.00)
19. तौलपावा कूत्तु : शैडो पपेट् थियेटर ऑफ केरल (पुर्नमुद्रण) : जी वेणु	295.00	(177.00)
20. तोलू बोम्मलाट्टा : शैडो पपेट्स ऑफ आंध्र प्रदेश : एम नागभूषण शर्मा	60.00	(36.00)
21. कूट्टमपलम एवं कूट्टियाट्टम : गोवर्धन पंचाल	130.00	(78.00)
22. *द आर्ट ऑफ तबला रिदम : एसेंशियल्स, ट्रेडिशन एंड क्रिएटिविटी : सुधीर कुमार सक्सैना	550.00	(333.00)
23. इन्डियन ड्रामा इन रिट्रासपेक्ट : इन्ट्रोडक्शन : जयन्त कस्तुआर	850.00	(510.00)
24. रवीन्द्र नाथ टैगोर - वन हन्ड्रेड साँग्स इन स्टॅफ नोटेशन : इन्दिरा देवी चौधुरानी द्वारा संकलित	795.00	(477.00)
25. क्लॉसिकल इंडियन डांस इन लिटरेचर एण्ड द आर्ट्स (तीसरा संस्करण) : कपिला वात्स्यायन	480.00	(288.00)

26. नॉलेज ट्रेडिशन : अप्रोचेज टु भरत नाट्यशास्त्र, संपादन: अमृत श्रीनिवासन	325.00	(195.00)
27. हिन्दुस्तानी म्यूजिक एंड एस्थेटिक्स टुडे : एस के. सक्सेना	995.00	(597.00)
28. एवेन्यूज टु ब्यूटी : एस. के. सक्सेना	580.00	(348.00)
29. इंडियन सिनेमा इन रिट्रासपेक्ट (सं) आर.एम.रे	895.00	(537.00)
30. हिन्दुस्तानी संगीत: सम परस्पेक्टिव, सम परफारमर्स : एस. के. सक्सेना	600.00	(360.00)
31. टेम्पल म्यूजिकल इंस्ट्रूमेन्ट्स ऑफ केरल : एल एस राजगोपाल संपादन : ए पुरुषोत्तमन, ए हरिन्द्रनाथ	400.00	(240.00)
32. एस्थेटिक्स : अप्रोचेज, कॉन्सेप्टस एण्ड प्रॉब्लमस: एस के सक्सेना (नया संस्करण)	1100.00	(660.00)
33. द विंग्ड फॉर्म : एस्थेटिकल एस्सेज ऑन हिन्दुस्तानी रिदम : एस के सक्सेना (नया संस्करण)	500.00	(300.00)
34. फैलो एण्ड अवार्ड विनर ऑफ संगीत नाटक अकादेमी 1952-2010	400.00 (छूट रहित)	

हिन्दी

35. संगीत कलाधर : दहियालाल शिवराम (अनुवाद) अनिल बिहारी ब्योहार एवं चेतना ज्योतिषी ब्योहार (सं) प्रेमलता शर्मा	1250.00	(750.00)
36. *ओंकार नाथ ठाकुर : विनय चन्द्र मौदगल्य	2.50	
37. *सहसरस : प्रेमलता शर्मा	25.00	
38. त्यागराज कृति संग्रह	20.00	(12.00)
39. रासलीला तथा रसानुकरण विकास : वसन्त यामदाग्नि	100.00	(60.00)
40. मुतुस्वामी दीक्षितार-कृति संग्रह	50.00	(30.00)
41. मृदंग-तबला वादन पद्धति : गुरूदेव पटवर्धन	7.50	(4.50)
42. हिमाचल का लोक संगीत : केशव आनंद	70.00	(42.00)
43. मृदंग वादन नाथद्वारा परम्परा : पुरूषोत्तम दास	25.00	(15.00)
44. पुष्टि संगीत प्रकाश : बी पी भट्ट	70.00	(42.00)
45. हिमाचल के प्राचीनतम संगीत वाद्य: नंद लाल गर्ग	400.00	(240.00)
46. नाट्य कल्पद्रुम: मणिमाधव चाक्यार (अनुवाद-पी के गोविन्दन नांबियार, सं. प्रेमलता शर्मा)	300.00	(180.00)
47. भरत और उनका नाट्य शास्त्र : ब्रजवल्लभ मिश्र	500.00	(300.00)
48. नाट्य दर्शन : संगीता गुंदेचा	350.00	(210.00)

तमिल

49. अयोध्याकांड आफ तौलपावा कुत्तु : कृष्ण कुट्टी पुलावर	100.00	(60.00)

मणिपुरी

50. रास पूर्णिमा : बाबू सिंह	60.00	(36.00)

(*स्टॉक में नहीं)

अकादेमी द्वारा निर्मित फिल्म/वीडियो कार्यक्रम और ऑडियो सीडी

क्र. सं.	*विषय*	*निर्देशन*	*भाषा*	*रंगीन/श्वेत -श्याम*	*अवधि*	*वर्ष*	*वी सी डी (एम.आर. पी.)*	*40% छूट के बाद*	*उपलब्धता*
1.	उस्ताद बडे गुलाम अली खाँ	हरी दास गुप्ता	हिंदी/अंग्रेजी	श्वेत-श्याम	29 मिनट	1965	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
2	उस्ताद अलाउद्दीन खाँ	हरी दास गुप्ता	अंग्रेजी		24 मिनट	1965	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
3	रामायण इन कूटियाट्टम एण्ड कथकलि	संगीत नाटक अकादेमी	अंग्रेजी	रंगीन	21 मिनट	1973	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
4	छायानाटक	जीवन पाणि	अंग्रेजी	रंगीन	20 मिनट	1977	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
5	फोक एण्ड ट्राइबल डांसिज ऑफ इंडिया	संगीत नाटक अकादेमी	अंग्रेजी	रंगीन	18 मिनट	1977	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
6	तानवर्णम	संगीत नाटक अकादेमी	संगीत	रंगीन	31 मिनट	1980	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
7	संगाई-डांसिंग डीर ऑफ मणिपुर	अरिबम स्याम सर्मा	संगीत	रंगीन	44 मिनट	1987	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
8	भूताराधना	बी.वी.कर्नाथ	संगीत	रंगीन	22 मिनट	1988	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
9	सेम्मनगुडी	भास्कर चंदावरकर	अंग्रेजी	रंगीन	20 मिनट	1992	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
10	सेम्मनगुडी	भास्कर चंदावरकर	अंग्रेजी	रंगीन	30 मिनट	1992	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
11	सेम्मनगुडी	भास्कर चंदावरकर	अंग्रेजी (उपविषय)	रंगीन	58 मिनट	1992	रू.295	रू.177	उपलब्ध है

12	पार्वती विरहम् मणि माधव चाक्यार एज रावण	के एन.पणिक्कर	अंग्रेजी	रंगीन	35 मिनट	1993	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
13	कंगलाई हरोबा	अरिबम स्याम सर्मा	अंग्रेजी	रंगीन	36 मिनट	1993	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
14	मणि माधव चाक्यार; द मास्टर एट वर्क	के एन.पणिक्कर	अंग्रेजी	रंगीन	30 मिनट	1994	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
15	बेहदेंख्लम	सुजाता मिरि	अंग्रेजी	रंगीन	16 मिनट	1994	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
16	अंग तरंग : मयूरभंज छऊ	जीवन पाणि	अंग्रेजी	रंगीन	17 मिनट	1995	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
17	पंडनालूर सुब्रया पिल्लाई	लक्ष्मी विस्वनाथन	अंग्रेजी	रंगीन	26 मिनट	1996	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
18	अंग तरंग मयूरभंज छऊ	जीवन पाणि	अंग्रेजी	रंगीन	41 मिनट	1997	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
19	एन आक्टेव इन हार्मनी	सुस्मित बोस	अंग्रेजी	रंगीन	32 मिनट	1999	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
20	के.पी.किटप्पा	माना श्रीनिवासन	तमिल (उपविषय)	रंगीन	53 मिनट	2001	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध

फिल्म एवं वीडियो कार्यक्रम की डी वी डी

क्र. सं.	*विषय*	*निर्देशन*	*भाषा*	*रंगीन/श्वेत-श्याम*	*अवधि*	*वर्ष*	*एम.आर.पी.*	*उपलब्धता*
1	आधे अधूरे	श्यामानंद जालान	हिन्दी	श्वेत-श्याम	2 घंटे और 9 मिनट	1958	रू.295	उपलब्ध

ऑडियो सीडी

क्र. सं.	*विषय*	*ऑडियो सी डी (एम आर पी)*	*40% छूट के बाद*	*उपलब्धता*
1	विंड इंस्ट्रूमेंट ऑफ इंडिया (एस जी एम)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
2	स्ट्रिंग इंस्ट्रमेंट ऑफ इंडिया (एस जी एम)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
3	परकशन इंस्ट्रूमेंट ऑफ इंडिया (एस जी एम)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
4	अहमद जान थिरकवा (सा रे ग म)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
5	अमीर खाँ (सा रे ग म)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
6	बिस्मिल्लाह खाँ (सा रे ग म)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
7	बड़े गुलाम अली खाँ (एस एन ए)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
8	बिस्मिल्लाह खाँ (एस एन ए)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
9	अमीर खाँ (एस एन ए)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
10	केसर बाई केरकर (हिंदुस्तानी गायन)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
11	इल्याज खाँ (सितार)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
12	नारायण राव व्यास (हिंदुस्तानी गायन)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
13	राधिका मोहन मैत्रा (सरोद)पार्ट-1	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
14	राधिका मोहन मैत्रा (सरोद)पार्ट-2	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
15	शंकर कृष्ण राव पंडित (हिंदुस्तानी गायन)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
16	रसूलन बाई	रू.295	रू.177	उपलब्ध है